मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः, मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता, मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥ १॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ २॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥ ३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥ ४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ ५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ ६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ ७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य जी विरचित भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

है संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी वहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥
निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचायेंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जायेंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जायें अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शांति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किये पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जायेंगे तो, मोक्षदातृ अरिहंत मिलें॥
कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहंता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पायी, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।
सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानंत॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अर्हंत् स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी॥१॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शांति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें॥२॥
कहें देव अर्हंत जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रंथ आचार्य वाँचें।
अनेकांत रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानंद प्राणी॥३॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी॥४॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है॥५॥

(अर्ध ज्ञानोदय)

देव शास्त्र गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनंतानंत भजें।
सुव्रत बनके संत दिगंबर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु प्रभु करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दु:खों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

(अर्ध ज्ञानोदय)

पूज्य तीस चौबीसी वाले, सभी सात सौ बीस जिनं।
तीन लोक के तीन काल के, करके नमोऽस्तु पूजें हम॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल संबंधी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं...।

(ज्ञानोदय)

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य भक्ति का, हम सब करके कायोत्सर्ग।
आलोचन कर पाप नशायें, ले चैत्यालय का संसर्ग॥
यथाशक्ति हम भी तो पूजें, जगत पूज्य जिन चैत्यों को
करके नमोऽस्तु अर्घ्य चढ़ायें, ऋद्धि-सिद्धि हो भक्तों को॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

सुबह दोपहर संध्या वेला, देव वंदना भक्त करें।
पूर्वाचार्यों के अनुचर हों, पंच महागुरु भक्ति करें॥
कायोत्सर्ग ध्यान से करके, णमोकार की जाप करें।
वीतराग अर्हंत सिद्ध हों, हम भी भव दुख पाप हरें॥

(पुष्पांजलिं...कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटायी।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥१॥

परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥

दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

नंदीश्वर पूजन

स्थापना (दोहा)

शाश्वत है अष्टाह्निका, जिनशासन के पर्व।
नंदीश्वर जिन बिम्ब को, करें नमोऽस्तु सर्व॥

(हरिगीतिका)

आषाढ़ कार्तिक और फाल्गुन, अंत में आठों दिना।
अष्टाह्निका के पर्व आते, अष्टमी से पूर्णिमा॥
सुर द्वीप नंदीश्वर पधारें, चैत्य चैत्यालय भजें।
ना जा सकें नर सो यहाँ पर, थापना कर हम भजें॥

(दोहा)

मन को नंदीश्वर बना, बिम्बों का कर ध्यान।
कर नमोऽस्तु हम पूजते, आओ! श्री भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तरदिक्षु विद्यमान द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय-नंदीश्वर श्री जिनधाम)

नंदीश्वर का कर ध्यान, नयन बरसते हैं।
झट दर्शन दो भगवान, भक्त तड़पते हैं॥
जल थल का पाकर तीर, प्रभु से जाएँ मिलें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हों आकुल व्याकुल रोज, नंदीश्वर जाने।
पर जा न सकें हम लोग, तीरथ कर पाने।
दो आश्रय हर भव पीर, चेतन महक उठें।

छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

नंदीश्वर तीर्थ महान, बावन चैत्यालय।
सिद्धों जैसे भगवान्, झलके सिद्धालय॥
पूरी हो इच्छा तीव्र, अक्षय धाम चलें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नंदीश्वर गोलाकार, जैसे फूल खिले।
सुर भौरों सम गुंजार, करके पूज चले॥
हम हरें काम का कीच, परमानंद चखें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

नंदीश्वर का रसपान, जो भी कर लेते।
भोजन का तज रसपान, आतम चख लेते॥
भोगों का त्यागें बीज, निज का स्वाद चखें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नंदीश्वर अष्टम दीप, झिलमिल झलक रहा।
ले भक्त भक्ति का दीप, प्रभु को निरख रहा॥
प्रभु मोती हम हैं सीप, उज्ज्वल रूप सजें।

छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

नंदीश्वर इतना शुद्ध, जैसे ज्ञायक हों।
हम भजकर बनें विशुद्ध, निज के लायक हों॥
हम कर्म हरें बन वीर, करके ध्यान भजें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नंदीश्वर के बागान, रत्नत्रय फल दें।
हर के सारे अज्ञान, उज्ज्वल सुख फल दें॥
हों कर्मों से भयभीत, निज शृंगार करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े।
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

त्रय अष्टाह्निक पर्व में, नंदीश्वर जिनधाम।
देव भजें साक्षात् हम, भजें यहीं कर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! नंदीश्वर की, जय हो! सभी मंदिरों की।
जय हो! जय हो! वहाँ विराजित, चैत्यालय जिन बिम्बों की॥
देव वहाँ त्रय अष्टाह्निक में, दिव्य द्रव्य ले जाते हैं।
भक्ति-भाव से करें अर्चना, हम तो यहीं रचाते हैं॥१॥
अनगिन दीप सागरों से जो, निर्मित मध्यलोक प्यारा।
उसका अष्टम दीप मनोहर, नंदीश्वर गोलाकारा।
एक अरब त्रेसठ करोड़ अरु, चौरासी लाख योजन।
एक दिशा में इतना फैला, चंदा जैसा आभूषण॥२॥
जहाँ चार दिशि में अंजन वन, चार-ढोल सम बढ़िया हैं।
एक-एक अंजन संबंधी, चार-चार बावड़ियाँ हैं॥
मध्य बावड़ी में इक दधिमुख, वन हैं कुल दधिमुख चारों।
वहाँ बावड़ी के दो कोने, जिनके रतिकर वन आठों॥३॥
एक दिशा में इक अंजन वन, दधिमुख चार आठ रतिकर।
कुल तेरह वन चार बावड़ी, जोड़ो चारों को गिनकर॥
कुल बावन वन की शिखरों पर, बावन पूज्य जिनालय हों।
इक मंदिर में बिम्ब एक सौ-आठ रहे जिनकी जय हों॥४॥
पाँच हजार छः सौ सोलह कुल, बिम्ब रहे नंदीश्वर में।
उच्च पाँच सौ धनुष रहे जो, रत्नमयी पद्मासन में॥
नीले केश, दांत हीरे सम, ओठ रहे मूंगा जैसे।
श्याम श्वेत हैं नयन मनोहर, हाथ पैर कोयल जैसे॥५॥
बिम्ब रहे यों देख रहे ज्यों, बोल रहे जैसे लगते।
जिनके आगे कोटि-कोटि भी, सूर्य चाँद फीके पड़ते॥

प्रातिहार्य मंगल द्रव्यों मय, सुरा-सुरों से पूजित हैं।
वीतरागता की शिक्षा दें, पुण्य धर्म से संचित हैं॥६॥
जिनके वर्णन कर पाने में, सरस्वती थक जाती है।
इसीलिए तो श्रद्धा अपनी, सादर शीश झुकाती है॥
पाप नष्ट कर पुण्य प्राप्त कर, सुख पाने अर्हंत बनें।
नंदीश्वर की यात्रा करके, 'सुव्रत' सिद्ध महंत बनें॥७॥

(सोरठा)

नंदीश्वर जिन धाम, देव भजें त्यौहार कर।
हम भी करें प्रणाम, मोक्ष चलें भव पार कर॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नंदीश्वर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दु:खों को मेंट दो, नंदीश्वर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

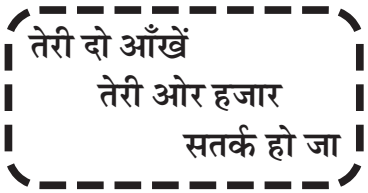

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पायें तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य

(दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीचौबीसी अर्घ्य

(लय : चौबीसी पूजनवत्)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी अर्घ्य

(मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री बाहुबली स्वामी अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्ति वधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य अर्चना अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पायें निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आये।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंच बालयति का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनंत सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥

दया निधे निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ यह भेंट करें॥
पूज्य मल्लि प्रभु नेमि पार्श्व, अतवीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

❑ ❑ ❑

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण-१

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः।
ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

दिव्य देशना से सुन रक्खा, शास्त्रों से यह जाना।
निज श्रद्धा से सीखा हमने, गुरुओं से पहचाना॥
तीन लोक में तीन काल में, सिद्धों सा ना दूजा।
सो नमोऽस्तु कर सविनय करते, सिद्धचक्र की पूजा॥ १॥

ओम्.....

मंगलमय प्रभु मंगलकारी, विघ्न अमंगलहारी।
कामधेनु सम कल्पवृक्ष सम, सर्वसिद्धि दातारी॥
चिन्तामणि सम पारसमणि सम, पारस हमें बनाते।
मुक्तिवधू के प्राण वल्लभा, चित् चैतन्य सजाते॥२॥

ओम्.....

आत्म सिद्धि का लक्ष्य साध्य जो, करें सिद्ध की सेवा।
श्रमण चक्र अरिहंत चक्र में, शामिल हो स्वयमेवा॥
वह देवाधिदेव बन जाते, झुकें चरण में देवा।
कर्म नष्ट कर सिद्धचक्र पा, चखते निज का मेवा॥ ३॥

ओम्.....

इस विधान से मैनारानी, पति का कुष्ठ मिटायी।
संग सात सौ हुए निरोगी, सबने महिमा गायी॥
निज घर भूले भटके जन को, देता यही सहारे।
सिद्धचक्र के इस वंदन से, रोग कर्म भय हारे॥४॥

ओम्.....

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
सिद्धचक्र को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥

ओम्.....

(पुष्पांजलिं...)

मंगलाचरण-२

णमो-णमो-४

सिद्धों का शहर सुहाना, हमको सिद्धालय जाना।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, मिले मुक्ति का धामा।
णमो सव्वसिद्धाणं - णमो सव्वसिद्धाणं।
णमो सव्वसिद्धाणं - णमो सव्वसिद्धाणं।
णमो लोए सव्वसिद्धाणंऽऽऽ.....॥
जो आठ कर्म के नाशी, वैदेही ज्ञानप्रकाशी।
हे स्वामी! तुम्हें नमोऽस्तु, हम सिद्धों के विश्वासी॥णमो-णमो-४
शुद्धात्म अवस्था पाये हम भी उस पर ललचाये।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, लोक शिखर को ध्याये॥
णमो सव्वसिद्धाणं.....
हो सिद्धचक्र की सेवा, सिद्धों सा कोई ना दूजा।
जो है सो है हम पायें, तो सार्थक होगी पूजा॥...णमो-णमो-४
जो देता जगत प्रसिद्धि, फिर दे आतम की सिद्धि।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, हो सिद्धि की लब्धि॥
णमो सव्वसिद्धाणं.....

हे! लोक शीश के वासी, चिद्रूपी ब्रह्म विलासी।
हे! ज्ञानशरीरी स्वामी, दो राह हमें संन्यासी॥...णमो-णमो-४
कह नमः नमः सिद्धेभ्यः, तीर्थंकर दीक्षा लेभ्यः।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, बनने को सिद्धेभ्यः॥
णमो सव्वसिद्धाणं.....
हो मुक्त अवस्था धारी, हो लोकालोक निहारी।
हे! पूर्ण गुणी सर्वेशा, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥...णमो-णमो-४
श्री सिद्धचक्र भगवंता, तुम को ध्याते अरिहंता।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, बनने सिद्ध महंता॥
णमो सव्वसिद्धाणं.....
हो चिच्चदेव चिन्मूर्ति, चैतन्य चिदेशा मोती।
हे! विश्व वन्द्य विज्ञानी, दो शीघ्र हमें चिज्ज्योति॥णमो-णमो-४
भय संकट दुख के हर्ता!, हे मुक्तिवधू के वरता।
सो सिद्धचक्र की करें अर्चना, जो मंगल-मंगल करता॥
णमो सव्वसिद्धाणं.....
ये सिद्धचक्र की पूजा, है आत्मसिद्धि की अर्चा।
जो सिद्धी के अभिलाषी, वो शीघ्र करें ये चर्चा॥...णमो-णमो-४

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

प्रश्नों से परे
अनुत्तर हैं उन्हें
मेरे नमन!

विधान प्रारम्भ

(दोहा)

अर्हं बीजाक्षर महा, ब्रह्म वाच्य भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(शंभु)

ना द्रव्य मनोहर सँजो सके, ना मुनियों सा मन पावन है।
ना नंदीश्वर हम पहुँच सके, ना सिद्धालय सा आँगन है॥
हम मैना सम मजबूत नहीं, मजबूर नहीं श्रद्धालु हैं।
सो सिद्धचक्र विस्तार रहे, दुख हरिये आप दयालु हैं॥

(दोहा)

यथाशक्ति से द्रव्य ला, लगा चंदोवा चंद।
मंडप मंडल रच भजें, सिद्धचक्र स्वानंद॥

श्री सिद्धचक्रयंत्र पूजन

स्थापना (हरिगीतिका)

है रेफ ऊपर और नीचे, बीच में हंकार है।
र्हं बीज अक्षर है कमल सा, अष्ट दल आकार है॥
स्वर और व्यंजन हर दिशा में, संधि पर शुभ तत्त्व हैं।
तट भाग में ओं क्रोम् वेष्टित, ह्रीं शोभित यंत्र है॥

(सोरठा)

भगें कर्म गजराज, सिद्ध यंत्र सिंहनाद सुन।
बनें सिद्ध सरताज, मुमुक्षु ऐसे कर नमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठःठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शंभु)

जिन माँ बाबुल ने जन्म दिया, फिर मरण तुल्य पति दिये वही।
पर मैना भाग्य भरोसे थी, मिथ्या पथ पर पग बढ़े नहीं॥
पति स्वस्थ हुआ श्री जिनवर का, जब गंधोदक का छिड़का जल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, ले गंधोदक सा श्रद्धा जल॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्यों सत्य वचन बोली मैना, तो पिता चिता सम भड़क उठे।
पति तपित रोग जब शमित हुआ, तो लज्जित होकर पिता झुके॥
गुरु मंत्र मिला फिर सिद्ध यंत्र का, छिड़का शीतल सा चन्दन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, कर शांतीधारा का सिंचन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं...।

उपचार रोग का क्या हो सो, मुनि सिद्धचक्र का कहे यतन।
जो आठ वर्ष तक करना है, त्रय अष्टाह्निक में पाठ भजन॥
पर पहली ही अष्टाह्निक में, वह रोग असाध्य हुआ था क्षय।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, पाने को जिन श्रद्धा अक्षय॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

फूलों सी मैना थी लेकिन, पति और सात सौ थे रोगी।
दुर्गंध न विचलित कर पाई, बस सेवा में थी सहयोगी॥
परवाह नहीं की काँटों की, सो रोग गया तन महक उठे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, दो धैर्य पुष्प हम झुके-झुके॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

आहार दान कैसे करती, जब नहीं ठिकाना खुद का हो।
फिर भी आहार सदा दे फिर, पति का भोजन फिर खुद का हो॥
निज धर्म नहीं भूली मैना, सो हुई प्रशंसा के काबिल।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस मुनि चर्या में हों शामिल॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हैं एक तरफ तो पिता वचन, हैं अन्य तरफ तो धर्म नियम।
जब कुछ ना सूझे मैना को, तो खोज लिए मंदिर भगवन्॥
यह जग तो एक समस्या है, मुनि समाधान सब प्रश्नों के।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, अब लिए सहारे दीपों के॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

अपने-अपने कर्मों से यह, सब दुनियाँ संचालित होती।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोया वही फसल होती॥
पति पिता पुत्र तो निमित्त हैं, सो मैना करती पाठ भजन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, यह धूप चढ़ा हों कर्म दहन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हैं पुण्य पाप के खेल यहाँ, कोई महलों में आराम करे।
कोई सुखी दिखे कोई दुखी दिखे, कोई वन-वन भटके काम करे॥
सब समता से मैना सहती, फल कर्मों के हों शीघ्र शमन।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, फल अर्पित कर हो सिद्ध गमन॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

श्री सिद्धचक्र में श्रद्धा है, पर अष्ट द्रव्य सुविशाल नहीं।
जिन पूजन विधि का ज्ञान नहीं, संगीत गीत सुर-ताल नहीं॥

बस मैना सी दुख दर्द कथा, ना घटे सुखी संसार रहे।
सो सिद्धयंत्र को नित पूजें, बस सिद्धों का परिवार मिले॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मण्डल के आठ दिशाओं में अर्घ्य

(विष्णु)

सिद्ध अनाहत वाचक अर्हं, शब्द रहा प्यारा।
स्वयं सिद्ध अक्षरमाला से, खूब सजा न्यारा॥
आधा मात्रिक अर्हं पूजें, पूर्व दिशा आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पूर्व दिशि अर्घ्यं...॥ १॥

वर्ग कवर्ग भजें आग्नेयी, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो आग्नेय दिशि अर्घ्यं...॥ २॥

वर्ग चवर्ग भजें हम दक्षिण, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो दक्षिण दिशि अर्घ्यं...॥३॥

वर्ग टवर्ग भजें हम नैऋत, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो नैऋत्य दिशि अर्घ्यं...॥४॥

वर्ग तवर्ग भजें हम पश्चिम, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यः पश्चिम दिशि अर्घ्यं...॥५॥

वर्ग पवर्ग भजें हम वायव, दिशा आज आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो वायव्य दिशि अर्घ्यं...॥६॥

भजें अनाहत य र ल व, उत्तर दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो उत्तर दिशि अर्घ्यं...॥७॥

भजें अनाहत श ष स ह, ईशान दिशि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह वर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो ईशान दिशि अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

सिद्धयंत्र से हम तो भजते, सिद्ध वर्णमाला।
इस आश्रय से मुक्तिवधू की, होती वरमाला॥
सिद्धचक्र के अवसर में हम, शामिल हों आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्पूर्णवर्णबीजाक्षरसहित सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

सिद्धयंत्र पहले भजें, फिर दूजा हो कार्य।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोऽस्तु आर्य॥

(चौपाई)

सिद्धयंत्र ही महायंत्र है, न्यारा सा जयवंत तंत्र है।
सिद्धचक्र का महामंत्र है, भक्तों का तो मुक्ति मंत्र है॥१॥

सिद्धचक्र में सिद्ध वर्ण हैं, बीजाक्षरमय स्वर व्यंजन हैं।
अतः सर्व संपन्न यंत्र है, मंत्र तंत्र का जनक यंत्र है॥२॥
मैना ने पूजा जब इसको, अनुष्ठानमय ध्याया इसको।
गंधोदक जब छिड़का इसका, तभी स्वस्थ पति होता उसका॥३॥
कष्ट मिटा है कुष्ठ मिटा है, सात शतक का रोग मिटा है।
क्योंकि यंत्र तो सिद्धयंत्र है, कार्य सिद्धि का सफल यंत्र है॥४॥
शक्ति प्रदायक सिद्धयंत्र है, पाप व्यसन हर सिद्धयंत्र है।
यश-धन दायक सिद्धयंत्र है, संयम दायक सिद्धयंत्र है॥५॥
दुख संकट हर सिद्धयंत्र है, रोग-शोक हर सिद्धयंत्र है।
मोह कर्म हर सिद्धयंत्र है, धर्म मोक्ष दा सिद्धयंत्र है॥६॥
कर्मों को सिंह सिद्धयंत्र है, मुक्तिवधू दा सिद्धयंत्र है।
मुक्ती का धन सिद्धयंत्र है, नमोऽस्तु लायक सिद्धयंत्र है॥७॥
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है।
सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है, सिद्धयंत्र तो सिद्धयंत्र है॥८॥

(सोरठा)

सिद्धयंत्र का ध्यान, मंगलमय मंगल करण।
अतः किया गुणगान, नमोऽस्तु कर पूजे चरण॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सिद्धचक्रयंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...॥

(त्रिभंगी)

श्री सिद्धयंत्र से, महामंत्र से, सिद्धचक्र को जो ध्यावें।
वे रोग नशा के, आतम ध्याके, कर्म नशा के सुख पावें॥
हो तुम प्रभु साँचे, जग यश वाँचे, खुश हो नाचें पर्व करें।
सो 'सुव्रत' ध्यायें, तुम्हें मनायें, विद्या पाएँ मोक्ष वरें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

प्रथम पूजन अर्घ्य

(लय–पिच्छी रे पिच्छी....)

मुक्ति रे मुक्ति ये तो बता तूने क्या जादू कर डाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥
जड़ चेतन ज्यों अलग किये त्यों, सिद्धचक्र को पाये।
पर जड़ से चेतन पाने हम, अर्घ्य सँजोकर लाये॥
सिद्धचक्र को अर्घ्य चढ़ाकर, खुले मुक्ति का ताला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

द्वितीय पूजन अर्घ्य

(लय–जीवन है पानी की बूँद)

सिद्धचक्र की सुनकर गूँज, हम गुण गायें रे।
सोलह गुण पूजा हाँ हाँ, हम आज रचायें रेऽऽऽ॥
अपनों से हम प्यार करें, भव-भव यह अपराध करें।
अपने से ना प्यार करें, कैसे ये अपवाद टलें॥
पापों की पीड़ा....ये अर्घ्य मिटायें रेऽऽऽ॥
सिद्धचक्र की सुनकर गूँज हम गुण गायें रे।
सोलह गुण पूजा हाँ हाँ, हम आज रचायें रेऽऽऽ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तृतीय पूजन अर्घ्य (हरिगीतिका)

तुम साध्य हम साधक रहे हैं, साधना की राह है।

अब साध्य साधक का मिलन हो, प्रार्थना की चाह है॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, शोक चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥

(दोहा)

अष्ट द्रव्य के अर्घ्य की, भेंट करें उद्धार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

चतुर्थ पूजन अर्घ्य

(शंभु)

अपराध प्रशासन के जग में, ना शासन है ना अनुशासन।
व्रत संयम नियम नहीं तो फिर, क्या चल पायेगा जिनशासन॥
अब आत्मानुशासन पाने को, हम जिनशासन जयवंत करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचम पूजन अर्घ्य

(चौपाई–आँचलीबद्ध) (लय–पाँचों मेरु...)

सिद्धचक्र का करें विधान, करके नमोऽस्तु पूजन ध्यान।
ज्ञान निज होय, विश्वशांति निज मंगल होय॥
पूज्य एक सौ अट्ठाबीस, गुण पूजें पाने आशीष।
कर्म क्षय होय, जय-जय सिद्धचक्र की होय॥
सिद्धचक्र को अर्पित अर्घ्य, जिनशासन का साँचा पर्व।
करे समृद्ध, हमें बना दे अर्हत् सिद्ध॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

षष्ठम पूजन अर्घ्य

(सखी)

मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।
हम करते नमोऽस्तु ध्यान, सादर जिन पूजा गा के॥
प्रभु देख जगत के मेले, निज रमें अकेले खेले।
हम झेलें सभी झमेले, अब भटकें भक्त न चेले॥
सो शक्ति भक्ति से पायें, सिद्धों को भक्त मनायें।
अब सिद्धचक्र विस्तारें, हम अपना भाग्य सँवारें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

सप्तम पूजन अर्घ्य

(लय–देख तेरे संसार की....)

सिद्धचक्र को करके नमोऽस्तु, करते ध्यान विधान।
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्–२
कभी रिझाने कभी दिखाने, कभी कभी लौकिक सुख पाने।
भक्ति समर्पण किये अर्चना, तभी अधूरी रही साधना॥
अर्घ भेंट कर यही प्रार्थना, मिले भेद विज्ञान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

अष्टम पूजन अर्घ्य

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री सिद्धचक्र का नाम, सहसगुण धाम, थाम ले प्राणी, सो हमने पूजा ठानी।
कुछ नहीं हमारी है इच्छा, तुम सम बनने हो जिनदीक्षा।
अब शीघ्र बनें हम शुद्धातम के ध्यानी। सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भावना

(तर्ज–दिन रात मेरे स्वामी...)

दिन–रात सिद्ध स्वामी, हम भावना ये भायें।
शुद्धात्म आप जैसा, हम अपना शीघ्र पायें॥

जो भाव हैं विकारी, वो राग द्वेष सारे।
सुख शांति अपनी छीनें, दुर्भाव ज्यों हुआ रे।
वो राग–द्वेष तुम सम, हम अपने जीत पायें॥
शुद्धात्म...॥

बचपन में खेल खेले, फिर तो जवानी भोगी।
खोया बुढ़ापा तो फिर, निज प्राप्ति कैसे होगी।
इस देह में रहें पर, ज्योति विदेही पायें॥
शुद्धात्म...

हम सोचते सदा हैं, तुमसे ना दूर जायें।
भव कर्म रोक लेते, कैसे तुम्हें मनायें।
हम काश! आप जैसे, कर्मों को जीत पायें॥
शुद्धात्म...॥

शृंगार हो हमारा, अलंकार हो तुम्हारा।
उज्ज्वल स्वरूप पाने, अध्यात्म हो तुम्हारा।
आतम के रत्न तुम सम, बोलो कहाँ से पायें॥
शुद्धात्म...॥

तुम शक्ति पिण्ड घन हो, चैतन्य में मगन हो।
दर्शन तुम्हारा करने, 'सुव्रत' का भाव मन हो।
तुम एक अंक बनना, हम शून्य रूप पायें॥
शुद्धात्म...॥

❑ ❑ ❑

प्रथम पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

अष्टगुणी जित कर्म हैं, मोक्ष लक्ष्मी धाम।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं...)

(लय–पिच्छी रे पिच्छी...)

मुक्ति रे मुक्ति ये तो बता तूने क्या जादू कर डाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥
नहीं अधिक ना कम परमातम, भव सागर के तीरा।
कुंदन सा कंचन झलका के, पाये आतम हीरा॥
सिद्धचक्र को जल अर्पित कर, पायें सम्यक् प्याला।
अष्टगुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कर्म हरण आनंद वरण कर, ताप जिन्होंने छोड़ा।
उनकी छाया पाने हमने, नमोऽस्तु कर सिर मोड़ा॥
सिद्धचक्र को चन्दन अर्पित, करें मिटे भव ज्वाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं...।

सिद्ध रमे ज्यों निज में त्यों ही, सब जग आश्रय पाये।
अतः सिद्ध रूपी बनने को, हमने भाव सजाये॥
सिद्धचक्र को पुंज चढ़ाकर, मिले सुखों की शाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कमलाकारी कमल विहारी, ज्यों निर्लिप्त हुए हैं।
ब्रह्मातम के भाव भक्ति से, हमने चरण छुए हैं॥
सिद्धचक्र को पुष्प चढ़ाकर, मिले ब्रह्म जयमाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर के त्यागी निज के रागी, होते आतम स्वादी।
बड़भागी निज रस चखने की, दें पूरी आजादी॥
सिद्धचक्र को चरु अर्पित कर, पाओ भोग विशाला।

अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

रोग शोक आतंक दोष हर, ज्यों निज ज्योति जलाई।
भव गलियाँ तज शिव गलियों में, दीपावली मनाई॥
सिद्धचक्र को दीप भेंट कर, अंतस हुआ उजाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

लोकालोक निहारी आतम, क्यों ना हमें निहारो।
अपने जैसे कर्म काटकर, हमको भी तो तारो॥
सिद्धचक्र को धूप भेंट कर, रूप निखरने वाला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

तीन लोक के तीन काल के, जो धर्मी संसारी।
वो सब केवल तुमको चाहें, हम तो दास पुजारी॥
सिद्धचक्र को फल अर्पित कर, हो भविष्य ना काला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

जड़ चेतन ज्यों अलग किये त्यों, सिद्धचक्र को पाये।
पर जड़ से चेतन पाने हम, अर्घ्य सँजोकर लाये॥

सिद्धचक्र को अर्घ्य चढ़ाकर, खुले मुक्ति का ताला।
अष्ट गुणी श्री सिद्धचक्र ने, पहना दी वरमाला॥
मुक्ति बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

पूर्णार्घ्य

(नाराच)

विधान सिद्धचक्र का, रचाइए महा महा।
सु सिद्धचक्र के विधान, सा प्रभाव है कहाँ॥
तभी वियोग रोग भीत, भी दिखे नहीं यहाँ।
निजानुभूति प्राप्ति को, महंत भी टिकें यहाँ॥
कि और क्या कहें कथा, विनाश कर्म का करे।
प्रभाव देख भक्ति का, स्वरूप प्राप्ति हो अरे॥
इसीलिए रचा रहे, विधान भक्ति गा रहे।
कि सुव्रती सदैव धर्म, के लिये झुका रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में आठ गुणों को हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं.....)

हँसना रोना खाना पीना मोह की सब माया।
मोहनीय हर प्रभु ने सम्यक् गुण हीरा पाया॥

मोह त्यागने सिद्धचक्र को हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वगुणी मोहनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ १॥

ज्ञानावरणी के हर्त्ता ही, प्रभु ज्ञानानंदी।
पर व्यवहार नयों से जानें, निश्चय स्वानंदी॥
ज्ञानोदय को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तज्ञानगुणी ज्ञानावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥२॥

कर्म दर्शनावरणी हरकर, सब कुछ देख लिया।
निजदृष्टा के दर्शन को तो, माथा टेक लिया॥
सिद्ध दर्श को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शनगुणी दर्शनावरणीकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ ३॥

निज से निज में मिल बैठे हैं, अन्तराय हर्त्ता।
अतुलवीर्य से विघ्न विनाशी, निज ज्ञातादृष्टा॥
विघ्नहरण को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यगुणी अन्तरायकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ ४॥

नाम कर्म जब मिटा दिया तो, रूपी का क्या काम।
बने अरूपी सूक्ष्म स्वरूपी, छोड़ दिया जग धाम॥
नाम मिटाने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मत्वगुणी नामकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ ५॥

आयु कर्म की तोड़ शृंखला, अवगाहन पाये।
जिस से भिन्न-भिन्न होकर भी, नंत समा जायें॥
हरे आयु सो सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अवगाहनत्वगुणी आयुकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ ६॥

गोत्र कर्म जब नहीं रहा तो, ऊँच नीच से क्या?
अगरुलघु गुण पाकर पाया, गुरुकुल सिद्धों का॥

गोत्र त्यागने सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अगुरुलघुत्वगुणी गोत्रकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥ ७॥

नहीं असाता न हो साता, वेदनीय जब ना।
अव्याबाध सिद्ध सुख भोगें, जिसमें बाधा ना॥
वेदनीय हर सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अव्यबाधत्वगुणी वेदनीयकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं॥ ८॥

पूर्णार्घ्य

तुम अविनश्वर हम क्षणभंगुर, क्या नाते अपने।
फिर भी तुमसे मिलने के हम, सजा रहे सपने॥
स्वप्न पूर्ति को सिद्धचक्र को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी अष्टकर्ममुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः॥

जयमाला

(दोहा)

वीतराग विज्ञान जो, जिनशासन की शान।
अष्टगुणी सिद्धेश का, हम करते गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

यदि भवसागर सुख देता तो, जीव यहाँ अकुलाते क्यों?
यदि संसार शरण देता तो, जीव यहाँ से जाते क्यों?
अगर चतुर्गति शांति दिलाती, तो प्राणी शिव पाते क्यों?
तन परिवार अगर सच हैं तो, भव्य त्याग कर जाते क्यों?॥१॥

इन भावों का अन्तस् चिंतन, द्रव्यादिक का योग मिले।
तो प्राणी जग में विकसित हों, पुण्य कर्म संयोग मिले॥
फिर मानुष पर्याय प्राप्त कर, आतम लक्ष्य बनाता जो।
छह कारण सहकारण करके, पाँच लब्धियां पाता वो॥२॥
करणलब्धि कर मिथ्यादृग हर, सम्यग्दर्श उसे होता।
इस विध अनंतभवसागर जल, उसका चुल्लूभर होता॥
काल अर्द्धपुद्गल परिवर्तन, अब तो उसका ग्रन्थ कहे।
फिर अणुव्रत ले धरे महाव्रत, निज ध्यानी निर्ग्रन्थ बने॥३॥
बने दिगम्बर ज्ञानी-ध्यानी, परिषह वा उपसर्ग सहे।
तेरह विध चारित्र पालकर, दस लक्षण का धर्म धरे॥
भाय भावना बारह सोलह, करे तपस्या तूफानी।
चेतन गृह में रक्षित होकर, बने शुद्ध आतम ध्यानी॥४॥
करणों को कर क्षायिक होकर, श्रेणी पर आरूढ़ हुए।
भेदज्ञान से शुक्ल ध्यान से, मोह शत्रु से दूर हुए॥
तुरत घातिया भागे तो वे, तीर्थंकर अरिहंत हुए।
समवसरण में दिव्य देशना, देकर आतमरूप हुए॥५॥
भव्य पुण्य से विहार कर फिर, भव्यों के हो कल्याणी।
केवलज्ञानी योगी स्वामी, किये योग निरोध ध्यानी॥
अघातिया के मेघ छटें फिर, पाँचों लघु स्वर के पल में।
तब शुद्धातम पाकर पहुँचे, सिद्धचक्र के संकुल में॥६॥
सिद्धों का क्या कहना भैया, अतुलनीय ध्रुव अनुपम हैं।
शुद्ध बुद्ध खलु चिच्चदेव हैं, ब्रह्मानंदी आतम हैं॥
कष्ट त्याग कर नष्ट मोह कर, अष्टकर्म हर अष्ट गुणी।

लक्ष्य हमारे मोक्ष पधारे, अब तक अर्जी क्यों न सुनी॥७॥
कर्मों को हम अपना समझें, ये ही हमें रुलाते हैं।
फिर भी राग न छूटे इनसे, दर-दर यही घुमाते हैं॥
तुम सम कर्मचक्र को काटें, धर्मचक्र के काबिल हों।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, सिद्धचक्र में शामिल हों॥८॥

(सोरठा)

अष्ट अंग के साथ, करें नमोऽस्तु मुक्ति को।
सिर पर हो बस हाथ, सिद्धचक्र की भक्ति को॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्मत्व-अवगाहनत्व-अगुरुलघुत्व-अव्याबाधत्व-अष्टगुणी अष्टकर्ममुक्त सिद्ध-चक्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

(हरिगीतिका)

जो कर्म चक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वे सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हों उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

निंदा से नहीं
निंदनीय चारित्र
से सदा डरो

द्वितीय पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

अनंतगुणी आदर्श हैं, सिद्धीश्वर भगवान।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं...)

(लय–जीवन है पानी की बूँद)

सिद्धचक्र की सुनकर गूँज, हम गुण गायें रे।
सोलह गुण पूजा, हाँ हाँ, हम आज रचायें रेऽऽ॥
जिन्हें न आंसू आने दें, वे ना डरें रुलाने में।
गजब राग की विद्या है, सारे खेल कराने में।
रागी बन त्यागी....भव भ्रमण नशायें रेऽऽ॥
सिद्धचक्र की...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हम बेटों से राग करें, बेटे हमको राख करें।
जिन्हें आँच ना आने दें, वे ही हमको खाक करें।
अपनों की चिंता....की चिता जलायें रेऽऽ॥
सिद्धचक्र की सुनकर गूँज, हम गुण गायें रे।
सोलह गुण पूजा, हाँ हाँ, हम आज रचायें रेऽऽ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जिन्हें खिलाते कंधों पर, वे ले जाते कंधों पर।
फिर भी ना वैराग्य हुआ, धिक्! श्रद्धा के अंधों पर।
माया तज काया...अपने में आयें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

थाम-थाम जिनकी अंगुली, चलना जिन्हें सिखाते हम।
उन्हें शूल से हम चुभते, जिनको फूल बिछाते हम।
सिद्धों सी कलियाँ...हम कब बन जायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की..

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, जिनको दूध पिलाते हैं।
देखो अपने अपनों को, भूखे रखें सताते हैं।
सिद्धों को अपना...हम आज बनायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की.

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

कुलदीपक हम समझ जिन्हें, आँचल की छाया करते।
घर के दीपक ही घर को, जला अँधेरा सा भरते।
सिद्धों सी ज्योति... हम कब चमकायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर गृहस्थी के कारण हम, क्या-क्या कर्म नहीं करते।
कर्मों की बलिहारी है, फिर भी घर ना तज सकते।
कर्मों की लीला...हम कब तज पायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जिनकी आशा से हमने, खून पसीना एक किया।
उनने महल अटारी में, कोना तक भी नहीं दिया।
मोही बन योगी...भव फल नश जायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों से हम प्यार करें, भव-भव यह अपराध करें।
अपने से ना प्यार करें, कैसे ये अपवाद टलें।
पापों की पीड़ा....ये अर्घ्य मिटाये रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की ..

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जब बचपन में आते हैं, शिक्षा से घबराते हैं।
तरुण दशा में तरुणी में, अपना हृदय लगाते हैं॥
गृहस्थी में अस्थी निकले, फिर बस नाड़ हिलायेंगे।
पैर चिता की ओर चले, तो क्या हित कर पायेंगे॥
सिद्धों के पथ पर...हम कब चल पायें रेऽऽ॥ सिद्धचक्र की

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षोडशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में सोलह गुण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

सम्यग्दर्शन पाकर जिसने, विश्वशांति चाही।
शांति विश्व में हो या ना पर, आत्म शान्ति पायी॥
ये दर्शनविशुद्धि पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१॥

धर्म और धर्मी को जो जन, यथा योग्य झुकते।
विनय मोक्ष का द्वार रहा यह, झुककर ही उठते॥
धार विनयगुणयुक्त भावना, सिद्ध बने आहा। ओम्....

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नतागुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥२॥

दोष रहित व्रत शील धारकर, आत्म शील पाना।
शीलव्रतों में अनतिचार यह, मोक्ष हेतु माना॥
आत्म शील से ज्ञान झील पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥३॥

ज्ञानधार में सदा नहाकर, आतम शुद्ध करे।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना, सबको बुद्ध करे॥
ज्ञान-ज्ञान बस ज्ञान प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥४॥

भवतन भोग विराग धार कर, गुण संवेग धरे।
भव से डरे रमे जब निज में, तो ही मुक्ति वरे॥
यह अभीक्ष्ण संवेग धार गुण, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संवेगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥५॥

अपनी शक्ति बिना छुपाये, जो जन त्याग करे।
उस त्यागी को मुक्तिवधू खुद, आकर राग करे॥
यही शक्तितस्त्याग भाव कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥६॥

अपनी शक्ती बिना छुपाये, करे तपस्या जो।
धरती के वो बने देवता, हरे समस्या वो॥
यही शक्तितस्तप करके वो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥७॥

संतों के उपसर्ग टालना, साधु समाधि हो।
साधु समाधि के साधन से, पूरी मुक्ति हो॥
साधुसमाधि भाय भावना, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥८॥

रोगी संतों की सेवा कर, उनको स्वस्थ करे।
साधु चरण में मोक्ष वरण को, वैयावृत्य करे॥
वैयावृत्ती देता मुक्ती, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥९॥

अर्हत् भक्ति करके अर्हत्, पथ मिल जाता है।
अर्हत् पथ से द्वार मुक्ति का, खुद खुल जाता है॥
अर्हत्भक्तिभावना करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-भक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१०॥

गुरु आचार्य भक्ति को करके, होते कार्य सफल।
अगर कृपा गुरुदेव करें तो, पाते मोक्ष महल॥
गुरु आचार्यभक्ति को करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥११॥

उपाध्याय गुरु के वन्दन से, बहुश्रुत वन्दन हो।
कर्म पटल ज्यों ही हटते त्यों, आतम दर्शन हो॥
बहुश्रुतभक्तिभावना करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१२॥

धर्म प्रकाशक शास्त्र ज्ञान को, प्रवचन भक्ति कहे।
ज्यों अज्ञान मेघ हटते त्यों, आत्म प्रकाश करे॥
प्रवचनभक्तिभावना करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१३॥

यथा काल आवश्यक करके, निज कर्तव्य करे।
स्वस्थ मस्त निज में रहकर ही, मुक्ती भव्य वरे॥
आवश्यक कर समय-समय पर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणिर्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१४॥

प्रभावना जिनशासन की हो, यही भावना हो।
श्रावक श्रमण प्रार्थना को कर, मुक्ति साधना हो॥
मार्गप्रभावना करके जो जन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१५॥

धर्मी से गो-बछड़े जैसा, जो वात्सल्य करे।
वो ही निज से प्रेम करे तो, भव की शल्य हरे॥
प्रवचन वत्सलत्व भाव से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य

हम हैं बिंदु तुम हो सिन्धु, मेल हमारा हो।
सो सोलह गुण के आश्रय से, तुम्हें पुकारा हो॥
अगर चाहते कुछ देना तो, निज-निज दो आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशभावनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं..।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

चिदानंद चैतन्य हैं, सिद्धचक्र भगवान।
सोलह गुण सिद्धेश का, हम करते गुणगान॥

(शुद्ध गीता)

जिन्होंने पाप के सारे, विकल्पों को नशा डाला।
जिन्होंने मोह के सारे, हलाहल को सुखा डाला॥
जिन्होंने ध्यान अग्नि से, करम वन को जला डाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥१॥
जिन्होंने काम जीता है, जिन्होंने खेद मद जीता।
जिन्होंने राग के बंधन, मिटा के भेद भय जीता॥
सुरासुर पूजते मुक्ति, जिन्हें पहनाती वरमाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥२॥
उन्हीं के ध्यान चक्षु में, चराचर सब झलकता है।
स्वरूपी भाव संयम से, जड़ाजड़ सब महकता है॥
गये जो पार भव जल से, पथिक को पार कर डाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥३॥
जिन्होंने ज्ञान दर्शन से, निजातम का किया दर्शन।
कषायों को नशाया है, सजाया आत्म का आंगन॥
निजानन्दी हुए त्यों ही, हुआ मुख दोष का काला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥४॥
हुए चैतन्य चिद्रूपी, विभावी के अभावी हैं।
अचल निश्चल निराकुल हैं, सहज ज्योति स्वभावी हैं॥
बने शृंगार आतम के, रमण निज में ही कर डाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥५॥

अलौकिक ही विभूति वे, जिन्हें निज की हो अनुभूति।
परम शुद्धात्म के स्वामी, लहर जिनकी हमें छूती॥
अनंतों सिद्ध बन बैठे, जपी जब सिद्ध पद माला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥६॥
इन्हीं के नाम कीर्तन जल, भयंकर रोग दुख हरते।
तभी तो आठ सोलह गुण, सहारे से भगत भजते॥
तुम्हारा ध्यान चिन्तन कर, नमन चरणों में कर डाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥७॥
जमीं पर भक्त की वस्ती, शिखर पर सिद्ध की हस्ती।
झुके हम हैं उठा लो तुम, दिला दो मुक्ति की मस्ती॥
बिना शक्ति करें भक्ति, सुनो 'सुव्रत' की जयमाला।
उन्हें करने नमोऽस्तु अब, भगत ने सिर झुका डाला ॥८॥

(सोरठा)

सोलह गुण के साथ, करें नमोऽस्तु मुक्ति को।
सिर पर बस हो हाथ, सिद्धचक्र की भक्ति को॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ-शक्तितस्त्याग-तपसि-साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरण-मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन-भक्तिरावश्यकापरिहारिण-र्मागप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वादि-षोडशकारण-भावना-गुणी-सिद्धचक्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वे सिद्धचक्र विधान करके, - पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

===

तृतीय पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र बसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

हैं समर्थ पर लें नहीं, काम धाम जग नाम।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं.....)

(हरिगीतिका)

जीना कठिन मरना कठिन, संसार तिरना है कठिन।
मन की कठिनता दूर करके, पार जाना है कठिन॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, जन्म चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों ॥

(दोहा)

प्रासुक जल की धार दें, भव से होने पार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥
[कहें हम सिद्धचक्र गाथा, झुकायें चरणों में माथा॥]

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिस मार्ग पर अवरोध ना हों, वे गलत ही मार्ग हैं।
उपसर्ग निंदा द्वेष ये सब, मार्ग के शृंगार हैं॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, ताप चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥
चन्दन से वन्दन करें, पाप ताप परिहार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥
[कहें हम सिद्धचक्र गाथा, झुकायें चरणों में माथा॥]

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

श्री सिद्धचक्र जिनेश जैसा, कौन है संसार में।
किस का कहें अरिहंत खुद ही, झुक रहे दरवार में॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, भ्रमण चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥
पुंज चढ़ा अविनाश पद, पाने को उपहार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सोना सुरा सुर सुन्दरी ने, सोचिये क्या ना छला।
पर ब्रह्मचारी साधकों पर, जादू इनका ना चला॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, काम चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥

पुष्प चढ़ा, अब्रह्म का, करने को प्रतिकार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पकवान पा भगवान भूले, हाथ फिर मलते रहे।
पूरी हुईं ना कामनाएँ, रात दिन जलते रहे॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, क्षुधा चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों॥
अर्पित कर नैवेद्य ये, हो संतुष्टि अपार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम जानते तो कुछ नहीं पर, मानते भी कुछ नहीं।
बस तानते हैं बात अपनी, सो इसी से सुख नहीं ॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, मोह चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों ॥
स्व-पर प्रकाशक दीप दे, दीवाली त्यौहार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

विज्ञान के भौतिक समय में, भोग तो सम्पन्न हों।
जितनी मिली सुविधाएँ उतनी, पा दुविधा खिन्न हों ॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, कर्म चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों ॥

धूप चढ़ाकर कर्म हर, करें आत्म शृंगार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुरुषार्थ करना चाहते ना, लें सहारा भाग्य का।
फल क्या इसी का प्राप्त होगा, पथ मिले दुर्भाग्य का ॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, रोग चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों ॥
फल अर्पित कर चाहते, खुले मुक्ति का द्वार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

तुम साध्य हम साधक रहे हैं, साधना की राह है।
अब साध्य साधक का मिलन हो, प्रार्थना की चाह है ॥
श्री सिद्धचक्र विधान करके, शोक चक्र समाप्त हों।
बत्तीस गुण सिद्धार्चना कर, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हों ॥
अष्ट द्रव्य के अर्घ्य की, भेंट करें उद्धार।
सिद्धचक्र हम पूजते, कर नमोऽस्तु सत्कार॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(सुखमा)

पापों दुख की पीड़ा हरने, पुण्यों सुख की क्रीड़ा करने।
कर्मों भव का सिन्धू तरने, सिद्धों सम सिद्धी को वरने॥
दी दस्तक भक्तों ने तुमको, स्वामी कब तारोगे हमको।
थोड़ी करुणा जल्दी कर दो, मुनिसुव्रत की सिद्धी कर दो॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में बत्तीसी गुण हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

ज्ञान में चेतन ध्यान में चेतन, चेतन चेतन में।
काकविघ्न को हर डाला सो, चेतन दर्शन में॥
परम शुद्ध चैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं काकादिविघ्नजयी-परमशुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

आजू चेतन बाजू चेतन, है आगे पीछे।
पिण्डहरण का विघ्न हरा तो, है ऊपर नीचे॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य सिद्ध को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पिण्डहरणविघ्नजयी-शुद्धचैतन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

ज्ञान परम पारिणामिक जो, शुद्ध ज्ञान धारा।
वमन विघ्नहर शुद्ध ज्ञान से, निज को शृंगारा॥
शुद्ध ज्ञान अविकारी पाने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वमनविघ्नजयी-शुद्धज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

चेतन रूप जगत में सुंदर, है सर्वांग सुखी।
जड़ में ऐसा रूप नहीं क्यों, पर में रहो दुखी॥
रुधिर विघ्नहर सुंदर बनने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रुधिरविघ्नजयी-शुद्धचिद्रूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

शुद्ध स्वरूप तत्त्व का प्यारा, मिश्रण से बहुरूप।
जड़ चेतन ज्यों अलग हुए तो, बनते सिद्ध स्वरूप॥
अश्रुपात के पूर्ण विघ्नहर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अश्रुपातविघ्नजयी-शुद्धरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

भाव कर्म जब पूर्ण नशे तो, पाते शुद्ध स्वभाव।
मरण विघ्नहर के स्वरूप में, मिले मुक्ति की छांव॥
सिद्धचक्र के भाव बनाकर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मरणविघ्नजयी-शुद्धस्वभावगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

निराकार उपयोग शुद्धि से, शुद्ध करें अवलोक।
नजर लगे ना जिन्हें हमारी, सिद्धों का वह लोक॥
कलह विघ्नहर तनिक नजर कर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कलहविघ्नजयी-शुद्धावलोकनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

बने वज्र सम अचल मेरु सम, सकल शुद्ध दृढ़ हो।
कितनी आंधी संकट आये, टस से मस ना हो॥
मांसदर्श का विघ्न हरे सो, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मांसदर्शविघ्नजयी-शुद्धदृढ़गुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

नरक रूप परवशता तजकर, आत्म सहारे हो।
शुद्ध स्वयंभू को अम्बर भू, रोज पुकारे हो॥
विघ्न जन्तुवध हरे स्वयंभू, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जन्तुवधविघ्नजयी-शुद्धस्वयंभूगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

योगी हो पर योग नहीं सो, परम शुद्ध योगी।
नहीं वियोगी ना संयोगी, शुद्ध आत्म भोगी॥
पिण्डपतन का विघ्न हरे सो, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पिण्डपतनविघ्नजयी-शुद्धपरमयोगी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

लख चौरासी के जन्मों को, यथाजात छोड़े।
शुद्धजात सो बन बैठे वो, हम तो सिर मोड़े ॥
पादान्तर के जीव विघ्नहर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पादान्तरेजीवविघ्नजयी-शुद्धजातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

अब तक हमने तपे नहीं तप, तप ने हमें तपा।
सम्यक् तप के महा तेज से, तुमने ताप तपा॥
देवादि उपसर्ग विघ्नहर, हम पूजें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं देवाद्युपसर्गविघ्नजयी-शुद्धतपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥१२॥

नाम कर्म के खेल खिलौना, कठपुतली सम हम।
हम जड़मूरत तुम चिन्मूरत, शुद्ध मूर्ति हो तुम ॥
जय भाजनसंपात विघ्नहर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं भाजनसंपातविघ्नजयी-शुद्धमूर्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

इंद्री जन्य पराश्रित सुख तज, आत्मिक सुख पाया।
वेदनीय की व्याकुलता की, शुद्ध हरे छाया॥
जय उच्चार विघ्न को करने , हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उच्चारविघ्नजयी-शुद्धसुखगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

कर्माश्रित है जगत अपावन, सिद्धचक्र पावन।
जग की पावन बस पावन पर, आप शुद्ध पावन॥
प्रस्रवण के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रस्रवणविघ्नजयी-शुद्धपावनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

शांत राग अणुओं से निर्मित, पुरुष शरीरा हो।
जिन्हें रुचा ना सो पा बैठे, शुद्ध शरीरा को॥
उदरकृमि के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उदरकृमिनिर्गमनविघ्नजयी-शुद्धशरीरगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

केवलज्ञान गम्य हो तुम तो, कोई क्या जाने।
शुद्ध प्रमेय तुम्हीं कहलाते, हो जाने माने॥
अभोज्यगृह के प्रवेश विघ्न जय, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अभोज्यगृहप्रवेशविघ्नजयी-शुद्धप्रमेयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

ज्ञान और दर्शन उपयोगी, चेतन लक्षण हों।
परम शुद्ध उपयोग सिद्ध के, मिश्रित अपने हों॥
नाभ्यधोनिर्गमन विघ्नहर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नाभ्यधोनिर्गमनविघ्नजयी-शुद्धोपयोगगुणीसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

भोगी हो पर भोग नहीं हैं, जड़ चेतन सारे।
निजानुभूति निज रस भोगें, शुद्ध भोग प्यारे॥
पतन विघ्न को तुम सम हरने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पतनविघ्नजयी-शुद्धभोगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

बहिरातम अंतरआतम तज, शुद्ध परमआतम।
अतः शुद्ध आतम कहलाते, खोजें भव्यातम॥
उपवेशन के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उपवेशनविघ्नजयी-शुद्धात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

कर्म शत्रु को राख किया सो, जग में यश फैले।
ज्यों ही सदंश विघ्न हरे सो, भक्त हुए चेले॥
गुरु चेले के वियोग हरने, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सदंशविघ्नजयी-शुद्धअर्हज्जातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

ज्ञान खड्ग से ध्यान ढाल से, सब कषाय जीते।
शुद्ध निजातम बन बैठे प्रभु, आतम रस पीते॥
शूद्रस्पर्श के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शूद्रस्पर्शविघ्नजयी-शुद्धनिपातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

घाति नशा फिर हरे अघाती, शुद्ध सिद्ध नामी।
शुद्ध हुए गर्भस्थ स्वयं में, सिद्धचक्र स्वामी॥
सेवन प्रत्याख्यात विघ्नहर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सेवनप्रत्याख्यातविघ्नजयी-शुद्धगर्भगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' से, भेद न कुछ दीखे।
पर व्यवहार सिद्ध पद पाने, भक्ति पाठ सीखे॥
भूमिस्पर्श के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं भूमिस्पर्शविघ्नजयी-शुद्धसिद्धवासगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

कहीं शरण ना किसी जीव को, चार शरण प्यारी।
शुद्ध परम है वास निजातम, सिद्ध शरण न्यारी॥
निष्ठीवन के विघ्न विजय को, हम पूजें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निष्ठीवनविघ्नजयी-शुद्धपरमवासगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

एक बार ज्यों कर्म अलग हों, आतम सिद्ध बनें।
भेद मिटें सब खेद मिटें सब, भक्त प्रसिद्ध बनें॥
प्रहार वाले विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रहारविघ्नजयी-शुद्धसिद्धपरमात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २६॥

जिसमें जोड़ भाग ऋण हों पर, फल अनंत रहता।
यों अनन्तगुण धारी प्रभु हैं, जिनशासन कहता॥
विघ्न विजय जान्वध के स्वामी, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जान्वधविघ्नजयी-शुद्धअनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २७॥

शांत दूध में मिले मलाई, छाँव दिखे जल में।
ऐसे ही प्रभु शुद्ध शांत हैं, सिद्धों के दल में॥
विघ्न जानु पर व्यतिक्रमण हर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जानुव्यतिक्रमविघ्नजयी-शुद्धशांतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २८॥

भद्र पुरुष की चाह सभी को, त्रय कालों में हो।
सिद्धशिला भी उन्हें पुकारे, हर हालों में हो॥
पाणिजन्तुवध विघ्न विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाणिजन्तुवधविघ्नजयी-शुद्धभदन्तवसन्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

जग में किसी तरह की उपमा, जिनकी हो न सके।
उपमातीत शुद्ध निरूप वे, रूपी हो न सके॥
अदत्तदत्तग्रहण विघ्न जय, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अदत्तदत्तविघ्नजयी-शुद्धनिरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३०॥

दूर हुए जो देह बाण से, कामबाण जीते।
करके समाधि निर्वाणी रस, आतम का पीते॥
ग्रामदाह का विघ्न विजय कर, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामदाहविघ्नजयी-शुद्धनिर्वाणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३१॥

तजा गर्भ नव मासिक माँ का, पाया आत्मा का।
दिव्य गर्भ यों हम भी पायें, जिन सिद्धात्मा का॥
अमेध्य विघ्न के महा विजय को, हम पूजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अमेध्यविघ्नजयी-शुद्धसंदर्भगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३२॥

पूर्णार्घ्य

हम तो एक जमीं के कण तुम, त्रय जग के स्वामी।
अक्ष बिना अध्यक्ष हमें दो, छाया वरदानी॥
अपने में अब हमें मिला लो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

अर्पित हैं जिन भक्तियाँ, प्रभु सान्निध्य महान।
सिद्धचक्र बत्तीस गुण, हर्ता विघ्न विधान॥

(चौपाई)

जय जय जय प्रभु सिद्ध नमोऽस्तु, सिद्धिचक्र के सिद्ध नमोऽस्तु।
परम शुद्धचैतन्य नमोऽस्तु, शुद्ध बुद्धचैतन्य नमोऽस्तु॥१॥
शुद्ध ज्ञानचिद्रूप नमोऽस्तु, शुद्ध स्वरूपस्वभाव नमोऽस्तु।
शुद्ध शुद्ध-अवलोक नमोऽस्तु, शुद्ध शुद्धदृढ़ स्वयंभू नमोऽस्तु॥२॥
शुद्ध योगप्रभु जात नमोऽस्तु, शुद्ध शुद्धतप मूर्ति नमोऽस्तु।
शुद्ध शुद्धसुखरूप नमोऽस्तु, शुद्ध पावन-शरीर नमोऽस्तु॥३॥
शुद्ध प्रमेयउपयोग नमोऽस्तु, शुद्ध भोग-आत्मने नमोऽस्तु।
शुद्ध अर्हत्जात नमोऽस्तु, शुद्ध शुद्धनिपाताय नमोऽस्तु॥४॥
शुद्ध अर्हगर्भवास नमोऽस्तु, शुद्ध सिद्धवासाय नमोऽस्तु।
शुद्ध परमवासाय नमोऽस्तु, शुद्ध सिद्धपरमात्म नमोऽस्तु॥५॥
शुद्ध अनन्तशान्ताय नमोऽस्तु, शुद्ध भदन्तनिरूप नमोऽस्तु।
शुद्ध शुद्धनिर्वाण नमोऽस्तु, शुद्ध सन्दर्भगर्भाय नमोऽस्तु॥६॥
शुद्ध-शुद्ध को शुद्ध नमोऽस्तु, सिद्धचक्र को शुद्ध नमोऽस्तु।
शुद्ध भक्ति से शुद्ध नमोऽस्तु, शुद्ध प्राप्ति को शुद्ध नमोऽस्तु॥७॥

(शिखरिणी)

हजारों इत्रों से, अधिक जिन चारित्र महके।
करोड़ों रत्नों से, अधिक जिनका चित्र चमके॥
असंख्यों भव्यों को, सतत जिन का बल मिले।
अनन्तों सिद्धों सा, भगतजन को भी फल मिले॥

(सोरठा)

सिद्धचक्र को रोज, सच्चे मन से पूजते।
करने आतम खोज, निज को जिन में खोजते॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वात्रिंशद्गुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्म चक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

भजन

सिद्धों सा आतम तेरा, मुक्ति तेरा धाम है।
राग-द्वेष छोड़ दे, वीतरागी रूप ले, सुव्रत का पैगाम है॥

अरहंत जैसी मूरत है तेरी, सिद्धों के जैसा तेरा रूप है।
सिद्धालय जैसी सुंदर सी छाया, सारे जमाने का तू भूप है॥
विषय-विकारों में, भोग नजारों में, तेरा यहाँ फँसना मुकाम नहीं है।
मोह बहारों में, कर्म कटारों में, देह का भी बनना गुलाम नहीं है॥
आतम में रमना तुझे, जिससे तू अनजान है। राग-द्वेष...

लोकाग्र पर है तेरा ठिकाना, संसार में क्यों फिरे घूमता।
आतम में सर्वज्ञ का धन छिपा है, दुनियाँ में क्यों फिरे ढूँढता॥
पूजा रचा ले तू, पूजा करा ले तू, बारह सभा में फिर ध्वनि खिरेगी।
ध्यान लगा ले तू, कर्म नशा ले तू, मुक्तिवधू की बारात सजेगी॥
सिद्धों से हम सब बनें, सुव्रत का अरमान है। राग-द्वेष...

❑ ❑ ❑

चतुर्थ पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी श्रीसिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

सर्व गुणी सम्पन्न हैं, ऋद्धिश्वर भगवान।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं....)

(शंभु)

चेतन को ये तन माँ पितु दें, संसार चिता दे चिंता दे।
फिर चिंता से हो जन्म मरण, पर सिद्धचक्र चित् चिन्तन दे॥
चिन्तन जल से चित् निर्मल कर, हम चिंता का साम्राज्य हरें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

तन में जब तक है श्वास शेष, तब तक ही रिश्ते नाते हैं।
ज्यों श्वास रुके त्यों मरघट में, खुद तपते हमें तपाते हैं॥

सो चन्दन सा तन चेतन से, कब कुंदन जैसा अलग करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

कुछ सोचें हम कुछ कहते हैं, कुछ करते हैं कुछ होता है।
कुछ दिखता है कुछ मिलता है, कुछ का कुछ जीवन होता है॥
जब एक रूपता इनकी हो तो, अक्षय मंजिल प्राप्त करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयप दप्राप्तये अक्षतान्...।

है फूल कौन सा जो जग में, मुरझाकर ना झड़ता जाता।
पर ब्रह्म तत्त्व वो ही पाता जो, प्रभु चरणों में चढ़ जाता॥
सो झड़ने के पहले हमको, प्रभु ब्रह्म तत्त्व के योग्य करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

ना जड़ खाए ना ही चेतन, पर दोनों मिलकर गजब करें।
दिन-रात छकाछक भोगों से, ना तृप्ति मिले ना पेट भरें॥
हम आकुलता-व्याकुलता तज, निज का निज में रस पान करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जग के आर्कषण में हमसे, प्रभु ज्ञानपुंज ना सँभल सका।
हम लाख प्रयास किये लेकिन, यह आप बिना ना उजल सका॥

हम तेल दीप बाती लाये, निज ज्योति इसी में आप भरें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतु:षष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कुछ भी कर लो इस दुनियाँ में, बस कर्मों का उपहार मिले।
पर सहानुभूति कुछ न मिले, बस मार मिले दुत्कार मिले॥
अब निजानुभूति हो तुम सम, सो परानुभूति दूर करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतु:षष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आलस्य भरे इस जीवन में, कब सद्गुण के फल लगते हैं।
पुरुषार्थ बिना अवसर खोकर, हम बंजर भूमि बनते हैं॥
तुम ज्ञानामृत बरसाओ तो, हम समयसार की फसल करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतु:षष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपराध प्रशासन के जग में, ना शासन है ना अनुशासन।
व्रत संयम नियम नहीं तो फिर, क्या चल पायेगा जिनशासन॥
अब आत्मानुशासन पाने को, हम जिनशासन जयवंत करें।
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, चौसठ ऋद्धि के जाप करें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतु:षष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...॥

पूर्णार्घ्य

हम सिद्ध स्वभावी हैं ऐसा, विश्वास करें संन्यास धरें।
तो बाधाएं कुछ कर न सकें, खुद ऋद्धि सिद्धि आ पैर पड़ें॥

संबंध चेतना से जोड़ें, निज शुद्धातम पहचान सकें।
सो सिद्धचक्र पूजा करके, मन शुद्ध करें भगवान् भजें॥
बस एक सहारे तुम साँचे, इस क्षणभंगुर से जीवन में।
सो ध्यान आपका करने से, हम रम जाएंगे चेतन में॥
मन्तव्य हमारा है ऐसा, मूल्यांकन खुद का कर पायें।
यह जीवन कठिन चुनौती है, इस में फँसकर ना रह जाएँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुःषष्ठिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में चौंसठ ऋद्धि, मन्त्र भजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...) (बुद्धिऋद्धि के १८ भेद)

अवधिज्ञान से मुनिवर करके, मूर्त द्रव्य का ज्ञान।
फिर भी आतम के आनंदी, बने सिद्ध भगवान॥
अवधिज्ञान के मन्त्र भजें हम, केवली हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञान-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

स्व-पर मनोगत भाव कुटिल ऋजु, रूपी जाने अर्थ।
सार्थक ज्यों नर-जन्म किया तो, हम भी बने समर्थ॥
मनपर्यय के मन्त्र भजें हम, ध्यानी हों आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञान-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

घाति हरे फिर समवसरण में, दिया तत्त्व उपदेश।
जिनमूरत चिन्मूरत पाये, सिद्ध सुहाना देश॥
केवलज्ञान के मन्त्र भजें हम, ज्ञानी हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

रहे कोष्ठ में भिन्न धान्य ज्यों, त्यों द्रव्यादिक ज्ञान।
पाकर भी ज्यों निज में डूबे, तभी हुआ कल्याण॥
कोष्ठबुद्धि के मन्त्र भजें हम, मान हरें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठ-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

एक बीज से बहुत हुए ज्यों, एक शब्द बहु भंग।
निज शृंगारी मोक्ष सुन्दरी, का लेते आनन्द॥
बीजबुद्धि के मन्त्र भजें हम, बुद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं बीज-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

गुरु से मात्र एक पद पढ़कर, समझें पूर्ण पुराण।
अहं तजें फिर अर्हं बनकर, पा लेते निर्वाण॥
पदानुसारी के मन्त्र भजें हम, हों पवित्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारी-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

युगपत सुन क्रमशः फिर कह दें, तप का प्रखर प्रभाव।
फिर भी निज की निज में सुनकर, पाया सिद्ध स्वभाव॥
संभिन्नश्रोतृ के मन्त्र भजें हम, श्रमण बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृ-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

पर उपदेश बिना पा जाना, तप से निज पर सार।
विद्या-रथ से मोक्ष पधारे, हमें लगा दें पार॥
प्रत्येकबुद्धि के मन्त्र भजें हम, परम बनें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

सुर गुरु और सभी पर-मत को, कर देते जो मौन।
पर को ज्यों ही गौण किया तो, हुई मुक्ति भी मौन॥
वादित्व ऋद्धि के मन्त्र भजें हम, बिन बाधा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वादित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

साधक ज्यों दशपूर्व विजित हों, अतिशय हुए अनेक।
दिव्य शक्तियाँ विद्याएँ क्या, मुक्ति स्वयं सिर टेक॥
दशपूर्वी के मन्त्र भजें हम, मिले दया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

चौदह पूर्वों के ज्ञाता हो, चौदह राजू पार।
तब भक्तों के सुख साता हों, खुलें आत्म भंडार॥
चौदहपूर्वी के मन्त्र भजें हम, चिदानंद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं चौदहपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

अंगादिक ज्योतिष के आठों, चिह्न शुभाशुभ जान।
जिनशासन की करें सुरक्षा, जैनी धर्म महान॥
अष्टांगनिमित्त के मन्त्र भजें हम, आप्त बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आष्टांगनिमित्त-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

स्पर्शन सीमा के बाहर, जाने जो स्पर्श।
फिर भी निज का दर्श किए तो, किया मुक्ति ने हर्ष॥
दूरस्पर्श के मन्त्र भजें हम, धार्मिक हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्पर्शत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

रसना की सीमा के बाहर, जाने जो हर स्वाद।
निज स्वादी के रस को चखने, किया मुक्ति ने याद॥
दूरस्वादन के मन्त्र भजें हम, आत्मरसी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्वादित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

नासा की सीमा के बाहर, जाने जो हर गंध।
आत्मगंध में मस्त हुए तो, मुक्ती गाए छन्द॥
दूरघ्राण के मन्त्र भजें हम, निज सौरभ आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दूरघ्राणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

दृष्टि की सीमा के बाहर, जो देखे हर दृश्य।
ज्यों देखा निज दृश्य तभी तो, मुक्ति बनी झट शिष्य॥
दूरदर्शी के मन्त्र भजें हम, निजदर्शी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शित्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६॥

श्रवण की सीमा के बाहर, जो सुन ले हर शब्द।
निज में निज के शब्द सुने त्यों, मुक्ति हुई निःशब्द॥
दूरश्रवण के मन्त्र भजें हम, बनें साधु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दूरश्रवणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

बिना पढ़े समझे जिन शासन, पैनी प्रज्ञा धार।
ज्यों कर्मों पर छैनी मारें, हुई मुक्ति साकार॥
प्रज्ञाश्रमणी मन्त्र भजें हम, ज्ञानवान आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

(चारण ऋद्धि के ९ भेद)

जल जीवों को घात दिए बिन, जल विहार करते।
ब्रह्म विहार किये तो जल्दी, मुक्तिवधू वरते॥
जलचारण को नमोऽस्तु करके, हों मंगल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जल-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

जंघा बल से भू-तल नभ में, चउ अंगुल ऊपर।
चलकर भी जब पहुँचें निज तक, तो पहुँचे शिवपुर॥
जंघाचारण को नमोऽस्तु करके, हुई शांति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जंघा-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

नभ में चलें किसी आसन से, जग कल्याण करें।
संकट मोचक निज-पर तारक, महा प्रयाण करें॥
नभतलगामी को नमोऽस्तु करके, नभासीन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नभस्तलगामित्व-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

बिन बाधा के मकड़जाल के, तन्तू पर चलना।
धर्म धुरंधर संकल्पित कर, निज से निज मिलना॥
तंतूचारण को नमोऽस्तु करके, कमलासन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तंतु-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

बिन हिंसा के कोमलता से, चलना फूलों पर।
फूल सभी को सुख के बाँटे, गए मुक्ति के घर॥
पुष्प चारण को नमोऽस्तु करके, कमल गमन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

पत्रों पर मित्रों सम चलना, बात नहीं दुख की।
सुखी रहें सब जीव जगत के, मिले पवित्र मुक्ति॥
पत्रचारण को नमोऽस्तु करके, सुखी जीव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पत्र-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

बीजों पर बिन बाधा चलकर, मोक्ष बीज पाये।
जले पाप का बीज हमारा, यही भाव भायें॥
बीजचारण को नमोऽस्तु करके, पुण्य फला आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं बीज-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

हर श्रेणी पर बिना सहारे, चले अहिंसक जी।
सिद्धों की श्रेणी में पहुँचे, आतम चिंतक ही॥
श्रेणीचारण को नमोऽस्तु करके, हो दीक्षा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेणी-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २६॥

बिना मरे या मारे चलना, अग्नि की लौ पर।
ध्यान-अग्नि से कर्म जला कर, वसे लोक सिर पर॥
अग्निचारण को नमोऽस्तु करके, कर्म जलें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अग्नि-चारणऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २७॥

(विक्रिया ऋद्धि के ११ भेद)

परमाणु सी देह बनाकर, निकलें छिद्रों से।
तन छिद्रों से निकल मिलें हैं, अनन्त सिद्धों से॥
अणिमा ऋद्धिधर को नमोऽस्तु, कष्ट टलें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अणिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

विष्णु मुनि सम मेरु-सम बन, जग उपसर्ग हरें।
कर्म उपद्रव हर शिवपुर जा, जग उद्धार करें॥
महिमा विक्रिया को नमोऽस्तु कर, महिमा हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं महिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

निज तन हल्का करें पवन सा, जग के भार हरें।
कर्मों के ज्यों भार हरें तो, निज शृंगार करें॥
लघिमा विक्रिया को नमोऽस्तु कर, लघु प्रभु हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं लघिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

हुए वज्र सम वज्र पुरुष बन, भारी से भारी।
फिर भी पहुँचें सिद्ध शिखर तो, हम हैं आभारी॥
गरिमा विक्रिया को नमोऽस्तु कर, निज गुरु हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं गरिमा-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३१॥

भू जंगल से नभ मंडल को, पिच्छी कमंडल ले।
छूकर मिले सिद्ध मंडल से, जग को मंगल दे॥
प्राप्ति ऋद्धिधर को नमोऽस्तु कर, मिले मुक्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्ति-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३२॥

जल में थल सम थल में जल सम, जो करके क्रीड़ा।
मुक्ति अंगना से क्रीड़ा कर, हरें जगत पीड़ा॥
प्राकाम्य ऋद्धिधर को नमोऽस्तु, कार्य बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्राकाम्य-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३३॥

तन पर राज करे दुनियाँ पर, हृदय विजेता जो।
वही जगत के साँचे ईश्वर, मुक्ति सृजेता वो॥
ईशत्व ऋद्धिधर को नमोऽस्तु, उड़े कीर्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ईशत्व-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३४॥

लोक चराचर वश में होता, सम्यक् तप द्वारा।
पर तपसी हो मुक्ती के वश, अतः जगत हारा॥
वशित्व ऋद्धिधर को नमोऽस्तु, निजाधीन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वशित्व-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३५॥

बिना खेद कर बिना छेद कर, पार शिला जाते।
भेद ज्ञान कर कर्म छेद कर, सिद्धशिला पाते॥
अप्रतिघात को नमोऽस्तु करके, बैर टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघात-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३६॥

दीक्षा लेकर अदृश्य होकर, जग की मदद करे।
अदृश्य आतम में रम करके, अदृश्य आत्म वरे॥
अन्तर्धान को नमोऽस्तु करके, शिक्षा हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तर्धान-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३७॥

इच्छा के अनुरूप रूप कर, अपने काम किये।
फिर भी चिन्मय रूप भजे सो, मुक्ति स्वरूप हुए॥
कामरूपित्व को नमोऽस्तु करके, काम सरल आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कामरूपित्व-विक्रियाऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३८॥

(तप ऋद्धि के ७ भेद)

दीक्षा से समाधि तक अनशन, नाना विध करते।
फिर भी आत्मानंदी बनकर, चिदानन्द चखते॥
पूज्य उग्रतप को नमोऽस्तु कर, सुव्रत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उग्र-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३९॥

नाना विध उपवास करे पर, बढ़े देह कांति।
निज झिलमिल में ज्यों खोये तो, मिले मुक्ति शांति॥
पूज्य दीप्ततप को नमोऽस्तु कर, हों अनशन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४०॥

तप्त लोह पर जल सूखे ज्यों, भोज्य भस्म होते।
तपकर कर्म भस्म कर पाते, मुक्ति बीज बोते॥
पूज्य तप्ततप को नमोऽस्तु कर, निर्मल हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तप्त-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४१॥

सिंहनि:क्रीडन आदि महातप, करें तपस्वी जन।
फिर भी निज-ज्ञानी बन पाए, आतम मोक्ष भवन॥
पूज्य महातप को नमोऽस्तु कर, महामहिम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं महा-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४२॥

रोगी तन होकर भी करते, घोर तपस्याएँ।
ज्यों मुक्ति में स्वस्थ हुए तो, हरें समस्याएँ॥
पूज्य घोरतप को नमोऽस्तु कर, रोग मिटें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं घोर-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

तप बल से त्रयलोक पलट दें, सिन्धु सुखा देते।
फिर भी निज में रमकर अपनी, मुक्ति रिझा लेते॥
घोर पराक्रम को नमोऽस्तु कर, धैर्य मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं घोरपराक्रम-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४४॥

मोक्ष सुन्दरी पाने बनते, घोर ब्रह्मचारी।
दिव्य देवियाँ डिगा न सकती, त्यागे जग नारी॥
अघोरब्रह्म को नमोऽस्तु करके, ब्रह्म मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अघोरब्रह्मचारित्व-तपऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४५॥

(बल ऋद्धि के ३ भेद)

जिनश्रुत का अंतर्मुहूर्त में, कर लें सब चिन्तन।
थकें न मन पर मुक्तिवधू सम, वरण करे चेतन॥
पूज्य मनोबल को नमोऽस्तु कर, मन दृढ़ हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनो-बलऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४६॥

जिन श्रुत का अंतर्मुहूर्त में, पाठ करें पूरा।
कंठ थके ना तालू सूखे, मुक्ति वरें शूरा॥
पूज्य वचनबल को नमोऽस्तु कर, वचन सिद्धि आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वचन-बलऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४७॥

ज्ञान ध्यान तप खूब करें पर, देह न थक पाए।
लोक रखें ज्यों अंगुली पर त्यों, स्वयं मुक्ति आये॥
पूज्य कायबल को नमोऽस्तु कर, किंचिदून आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं काय-बलऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४८॥

(औषधि ऋद्धि के ८ भेद)

जिनका तन छू छूमंतर हो, रोग व्याधि सारी।
फिर भी तज जग उपाधियाँ हो, जिन समाधि प्यारी॥
आमर्ष औषधि को नमोऽस्तु कर, स्वस्थ हुए आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आमर्ष-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४९॥

जिनकी लार नाक मल आदिक, छू कर पवन चलें।
रोग हरें पर मुनि निज में रम, निज को स्वस्थ करें॥
खेल्ल औषधि को नमोऽस्तु कर, निकल बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं खेल्ल-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५०॥

बाह्य देह मल जल्ल संत का, औषध हो तप से।
हरे व्याधि पर मुनि को मुक्ति, रिझा रही कब से॥
जल्ल औषधि को नमोऽस्तु कर, महामना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जल्ल-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५१॥

दांत कान मल आदिक मुनि के, तप से दवा हुए।
रोग हरें पर स्वस्थ संत के, मुक्ती पाँव छुए॥
मल्ल औषधि को नमोऽस्तु कर, हम घन हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मल्ल-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५२॥

मल मूत्रादिक मुनि के तप से, औषध हो जाते।
उसे पवन छू रोग हरे पर, संत मुक्ति पाते॥
विप्रुष औषधि को नमोऽस्तु कर, अंतर्मन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं विप्रुष(विड)-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५३॥

जिनका तन तप से औषध हो, छूकर जल वायु।
रोग हरें पर स्वस्थ संत को, दे मुक्ति आयु॥
सर्व औषधि को नमोऽस्तु कर , स्वस्थ हुए आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५४॥

जिनकी अमृत वाणी सुनकर, जहर उतर जाते।
वचन औषधि देकर ऋषिवर, पार उतर जाते॥
मुख-निर्विष को नमोऽस्तु करके, ज्ञानामृत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मुखनिर्विष-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५५॥

जिनकी अमृत दृष्टि पाकर, विष नश जाते हैं।
दृष्टि अमृत देकर यतिवर, स्वामृत पाते हैं॥
दृष्टि-निर्विष को नमोऽस्तु कर, अजर अमर आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विष-औषधिऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५६॥

(रस ऋद्धि के ६ भेद)

मर जा कहने पर मर जाएँ, पर ना कभी कहें।
दया सिन्धु इन आत्म सिन्धु बिन, किस विध मुक्ति कहें॥
आशिर्विष को नमोऽस्तु करके, वचन बली आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आशिर्विष-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५७॥

रोष दृष्टि से जिसे देख लें, वे तो मर जाएँ।
किन्तु न देखें पर निज देखें, तो ऋषि तर जाएँ॥
दृष्टिविष को नमोऽस्तु करके, निज दर्शन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविष-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५८॥

अरस भोज्य भी पाणि पात्र में, हो जाये स्वादु।
चखें न पर निज रस से मुक्ति, पर होता जादू॥
क्षीरस्रावी रस को नमोऽस्तु कर, क्षीर गुणी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्रावी-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५९॥

कटुक भोज्य भी कर में आकर, मीठा हो जाये।
ज्यों ही निज का स्वाद चखे तो, निज कुंदन पाये॥
मधुस्रावी को नमोऽस्तु करके, विश्व शांति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्रावी-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६०॥

सरस अरस भोजन भी कर में, अमृत के सम हों।
भोगें ना पर स्वानुभूति से, मुनि सिद्धों सम हों॥
अमृतस्रावी को नमोऽस्तु करके, क्षमा क्षमन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्रावी-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६१॥

रुक्ष भोज्य भी कर में आ हो, पौष्टिक घृत जैसे।
पुष्ट ना हों पर तिष्ठ स्वयं में, हों सिद्धातम से॥
सर्पिस्रावी को नमोऽस्तु करके, दिव्य दर्श आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पिस्रावी-रसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६२॥

(अक्षीण ऋद्धि के २ भेद)

मुनि चौके में चक्रि सैन्य भी, यदि भोजन कर लें।
पड़े न कम पर मुनि निज सेना, से निज जय कर लें ॥
अक्षीण-महानस को नमोऽस्तु कर, चिदानन्द आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६३॥

मुनि आलय में चक्रि सैन्य भी, यदि आकर ठहरे।
फिर भी संत ठहर कर निज में, हरें कर्म पहरे॥
अक्षीणमहालय को नमोऽस्तु कर, सिद्ध छाँव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहालयऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६४॥

पूर्णार्घ्य

बुद्धि क्रिया और विक्रिया, तप बल औषध भी।
रस अक्षीण आठ मिलकर हों, पूरे चौसठ ही॥
इन अनमोल रत्न को भज हों, ऋद्धि-सिद्धि आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(शंभु)

हे सिद्धप्रभु! ऋद्धि धारी, तुम स्वस्थ हुए निज से मिलके।
किस भांति तुम्हें हम प्राप्त करें, अनुरक्त हुए शिव पथ चलके॥
सो चौक पूर मन मन्दिर में, चौसठ ऋद्धि हम रचा रहे।
हो ऋद्धि सिद्धि अंदर बाहर, बस यही भावना बना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्ठि-ऋद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...॥

(जाप्य मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

शब्दों की सीमा रही, सिद्ध अनंतानंत।
भावांजलि से हम भजें, चौसठ ऋद्धि मन्त्र॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! सिद्धचक्र में, चौसठऋद्धि मंत्रों की।
ऋद्धिधारी ऋषिराजों की, जिनशासन के संतों की॥

एक तरफ यह सारी दुनियाँ, चमत्कार में उलझी है।
जड़ के चमत्कार त्यागी की, आतम इन से सुलझी है ॥१॥
जड़ पुद्गल के चमत्कार क्यों, इन्हें न विचलित कर पाए।
चमत्कार को नमस्कार क्यों, ये साधक ना अपनाए॥
क्योंकि ये चैतन्य द्रव्य के, चमत्कार को पहचाने।
दुनियाँ का हर स्वार्थ त्यागकर, चेतन पाने की ठाने ॥२॥
ज्यों संकल्प किया ऐसा तो, गूँज उठे धरती अम्बर।
सकल विश्व की महाशक्तियाँ, चरणों को पूजें आकर॥
जड़ पुद्गल का विभाव त्यागा, लीन हुए चेतन में ज्यों।
तो सर्वोच्च जैनशासन की, विद्याएँ आ धमकी त्यों ॥३॥
तभी तिरेसठ ऋद्धी आयीं, चौसठवीं ने झाँका है।
महा पाँच सौ विद्याओं ने, रत्नत्रय यश वाँचा है॥
तथा सात सौ लघु विद्यायें, कुल बारह सौ आ धमकी।
केवलज्ञान ऋद्धि उपजी तो, झलक दिखे सिद्धातम की ॥४॥
पर चैतन्य चमत्कारों को, संसारी जन क्या जानें?
जड़ पुद्गल की ऋद्धि-सिद्धि कर, अपना जन्म धन्य मानें॥
किन्तु अन्त में पछताकर के, मलते रहते हाथों को।
अतः आत्मकल्याण हेतु अब, मानें गुरु की बातों को ॥५॥
मिथ्या तंत्र-मंत्र सब तजकर, शुद्धातम अपनी समझें।
सिद्धभक्ति में रमण करें बस, जड़ रत्नों में ना उलझें॥
तो अतिशय कुछ ऐसे होंगे, खुद कल्याण तलाशेंगे।
रमें आत्म परमातम में तो, हमको सिद्ध तराशेंगे ॥६॥
अतः वीर बन करो तपस्या, ऋद्धि-सिद्धि उपलब्धि हो।
नश्वर क्षणभंगुर जीवन में, टंकोत्कीर्ण समाधि हो॥

हो न सकेंगे सिद्ध हमारे, हमें उन्हीं के ही होना।
होना है सो होना है अब, व्यर्थ न 'सुव्रत' भव खोना ॥७॥

(सोरठा)

सिद्धचक्र का देश, अपना अंतिम लक्ष्य है।
हरने सब संक्लेश, नमोऽस्तु करता भक्त है॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्ठि-ऋद्धियुक्त सिद्धचक्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...॥

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

तीर्थंकर बल

बारह मनुष्य के बराबर एक बैल में बल।
बारह बैल के बराबर एक भैंसा में बल।
बारह भैंसा के बराबर एक घोड़ा में बल।
बारह घोड़ा के बराबर एक हाथी में बल।
एक हजार हाथी के बराबर एक सिंह में बल।
एक हजार सिंह के बराबर एक शार्दूल में बल।
एक लाख शार्दूल के बराबर एक अष्टापद में बल।
दो अष्टापद के बराबर एक नारायण में बल।
नौ नारायण के बराबर एक चक्रवर्ती में बल।
एक करोड़ चक्रवर्ती के बराबर एक देव में बल।
एक करोड़ देव के बराबर एक इंद्र में बल।
असंख्यात इंद्र के बराबर एक तीर्थंकर में बल।

पंचम पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

कर्मास्त्रव जो हर चुके, कर जप तप निजज्ञान।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं...)

(लय—पाँचों मेरु.....) (चौपाई—आँचलीबद्ध)

सिद्धचक्र का करें विधान, करके नमोऽस्तु पूजन ध्यान।
ज्ञान निज होय, विश्वशांति निज मंगल होय॥
सिद्धचक्र को दे जल धार, मुक्ति स्वप्न होते साकार।
सुखी परिवार, असमय जन्म मृत्यु परिहार ॥
पूज्य एक सौ अट्ठाबीस, गुण पूजें पाने आशीष।
कर्म क्षय होय, जय-जय सिद्धचक्र की होय॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

सिद्धचक्र को चन्दन धार, देकर करते यही विचार।
कहाँ विश्राम, वीतरागता साँचा धाम ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

सिद्धचक्र को अर्पित पुंज, शुद्धातम का मिलता कुंज।
डरो न भाई, आज नहीं तो कल सुखदाई॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सिद्धचक्र को चढ़ा प्रसून, घर-घर में छाई है धूम।
हरें सब पाप, ब्रह्मचर्य की फेरें जाप ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सिद्धचक्र का चख कर स्वाद, निजानुभव की आये याद।
करें रस पान, मिले आतमा का मिष्ठान्न ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

सिद्धचक्र में दीप जलाएँ, झिलमिल आतम सी झलकाएँ।
मिटे अज्ञान, करें आरती गायें गान ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

सिद्धचक्र में खेकर धूप, कर्म जलें पायें चिद्रूप।
मिटें अभिशाप, नश जायें सब कर्मविपाक ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सिद्धचक्र को श्रीफल भेंट, मोक्ष सुन्दरी से हो भेंट।
सजे बारात, मुक्तिवधू फिर थामे हाथ ॥

पूज्य एक सौ अट्ठाबीस, गुण पूजें पाने आशीष।
कर्म क्षय होय, जय-जय सिद्धचक्र की होय॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

सिद्धचक्र को अर्पित अर्घ्य, जिनशासन का साँचा पर्व।
करे समृद्ध, हमें बना दे अर्हत् सिद्ध ॥पूज्य...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (बसंततिलका)

हैं कर्म के गजब खेल हमें लुभाते,
संसार के महल में दुख दें घुमाते।
श्री सिद्धचक्र प्रभु दूर हुए इन्हीं से,
सो प्रार्थना अब करें हम तो तुम्हीं से॥
ये कर्म के सकल खेल हमें न भायें,
जो आपके पद बिना हटने न पायें।
सो आपको हम करें झुक के नमोऽस्तु,
अध्यात्म के रमण की झलकें दिखा तू॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली (विष्णु)

भजें एक सौ अट्ठाईस गुण, सिद्धों के आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

मन से करना पापों वाली, खूब योजनायें।
पूर्ण न हों तो अज्ञानी कर, क्रोध भरे आहें॥
सिद्धों सम संरम्भ क्रोध हर, मिले क्षमा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

पापों वाली अगर योजना, पूर्ण नहीं होती।
उसे कराने जिस क्रोधी की, मनोदशा होती॥
सिद्धों सम संरम्भ क्रोध हर, मिले दया आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

अगर दूसरे करें योजना, पाप क्रोध वाली।
उसकी करें प्रशंसा मन से, तो दुख की प्याली॥
सिद्धों सम संरम्भ क्रोध हर, हो करुणा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

पाप योजना पूरी करने, जोड़ें सामग्री।
पूर्ण न हों तो व्याकुल होकर, बन जाना क्रोधी॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, ताप टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

पाप योजना की सामग्री, पूरी ना पाकर।
उसको पूर्ण कराये पर से, मन क्रोधी होकर॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, द्वेष टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

पाप योजना की सामग्री, कोई जुटा रहा।
क्रोधी मन यदि करे प्रशंसा, खोटा भाव रहा॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, मिले शान्ति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

क्रोधी बनकर पाप कार्य को, मन से खुद करना।
शत प्रतिशत यह पाप इसी से, बच निज में रमना॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, मैत्री हो आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

क्रोधी मन निज पाप कार्य को, अन्य सहारा ले।
तो पापों की नैया कैसे, उसे किनारा दे॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, आत्म भवन आहा। ओम्...

.ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

क्रोधी मन आरम्भ देखकर, पर के गुण गाये।
तो कैसे निज चेतन गृह में, सुख से रह पाये॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, हो विवेक आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

मानी मन की पाप योजना, सबको दुखी करे।
वंश कंश रावण कौरव सम, दुर्गति भ्रमण करे॥
सिद्धों सम संरम्भ मान हर, हों विनीत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

मानोदय में पाप योजना, करवाना पर से।
तो अवसाद नहीं होंगे क्या, कहो जरा हँस के॥
सिद्धों सम संरम्भ मान हर, नामी हों आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

मानी मन यदि पाप योजना, पर की कहे भली।
तो कैसे निर्दोष रहेगा, पाए दुख सूली॥
सिद्धों सम संरम्भ मान हर, अहं तजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

पाप योजना की सामग्री, मानी मन जोड़े।
तो निश्चित ही खाना होगें, पापों के कोड़े॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, नम्र बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

मानी पाप योजना वस्तु, पर से मंगवाए।
तो अपराध नहीं होगें क्या, कैसे सुख पाए॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, सोहम् हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

मानी पाप योजना पर की, कह देता अच्छा।
तो क्या शुद्ध बुद्ध बन पाये, वो साधक कच्चा॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, सिद्धोहम् आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

मानी मन यदि पाप कार्य को, खुद ही कर डाले।
तो निश्चित ही पड़ जायेंगें, खाने के लाले॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, मृदुल बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६॥

मानी मन से पाप कार्य को, पर से करवाना।
सब दोषों का जनक इसी से, दुख ताना बाना।
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, धन्य बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

मानी मन यदि पाप कार्य का, अनुमोदन करता।
तो पापों का झरना उसके, तन मन से झरता।
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, सुखी बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

पापों का मायावी मन से, हों संकल्प कहीं।
तो भव-भव में पाप करे हों, कायाकल्प नहीं॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, सरल बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायामनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

मायावी जो पाप योजना, पर से करा रहे।
ऐसे जन ही देश धर्म की, लज्जा नशा रहे॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, छल त्यागें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायामनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

मायावी मन पाप कार्य को, कर आनन्द करे।
तो कैसे पापास्त्रव रोके, क्या स्वानंद वरे॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, कपट त्याग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायामनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

मायावी मन कण-कण जोड़े, पाप योजना को।
तो क्या सिद्ध शिला मिल पाए, मोक्ष साधना को॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, आर्जव हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायामनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

मायावी मन पाप वस्तुएँ, पर से मँगवाले।
तो कैसे हमसे खुश होंगे, अपने घरवाले॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, सुंदर हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायामनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

मायावी मन करे प्रशंसा, पर के पापों की।
तो फिर शक्ति न असर करेगी, अपने जापों की॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, ऋजु बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायामनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

मायावी मन स्वयं ठान के, अत्याचार करे।
ऐसे घाती मन पर कहिये, क्या विश्वास करें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, मित्र बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायामनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

मायावी मन पाप कार्य को, पर से करवा ले।
लेकिन जब भी राज खुलें तो, मुँह होंगे काले॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, वैदेही आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायामनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

मायावी के पाप कार्य से, मन लड्डू बाँटे।
तो मुक्ती के फूल खिलें ना, चुभें पाप काँटे॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, परम पिता आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायामनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

लोभी मन की पाप योजना, संरम्भी मानी।
इसके कारण विप्लव होते, बन न सकें ज्ञानी॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, शुद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

लोभी मन यदि पाप योजना, करा रहा पर से।
तो फिर सुनो चूक जाओगे, मुक्ति स्वयंवर से॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, चिच्चदेव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

लोभी मन की पाप योजना, हमें लुभा लेती।
यह चर्या ही भव सागर में, हमें डुबा देती॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, चिन्मय हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभमनःसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

लोभी मन यदि पाप वस्तुएँ, खुद ही जोड़ रहा।
सिद्धचक्र से अपना नाता, खुद ही तोड़ रहा॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, बुद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

लोभी मन पापी सामग्री, पर से जुड़वाये।
सिद्धों सा परिवार भक्त का, खुद ही तुड़वाये॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, सिद्ध दशा आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

लोभी मन पापों की वस्तु, अगर देख नाँचे।
तो उसकी दुर्गति की पत्री, दुख समूह वाँचे॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, आत्म कलश आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभमनःसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

लोभी मन ने पाप कार्य को, खुद साकार किया।
स्वागत करे न कोई उसको, बस दुत्कार दिया॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, उज्ज्वल हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

लोभी मन यदि पाप कार्य को, पर की आश करे।
तो अपने हाथों से अपना, सत्यानाश करे॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, विज्ञानी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

लोभी मन यदि पाप कार्य को, सत्य बताता है।
सत्यघोष सम लज्जित होकर, हाँ! पछताता है॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, शुद्धातम आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभमनःआरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

क्रोधित होकर पाप योजना, वचनों से कहना।
तजो महाभारत ऐसे जो, छीने निज गहना॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, मौन धरें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

क्रोधित होकर पाप वचन कह, पर से करा रहे।
तो निश्चित वे अपने घर को, खुद ही जला रहे॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, सिद्धामृत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

क्रोधित होकर पाप वचन से, खुशियाँ जो करते।
वो जिस डाली पर बैठे हैं, वो काटा करते॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, तेजस्वी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

क्रोधी पाप वचन के द्वारा, सामग्री जोड़ें।
तन पर तो वे राज करें पर, दिल अपना तोड़ें॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, गुप्त रहें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

क्रोधी पाप वचन से वस्तु, पर से मँगवायें।
तो कैसे वात्सल्य बढ़ेगा, बैर भाव पायें॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, निष्कषाय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

क्रोधी पाप वचन वस्तु में, अनुमोदन करते।
तो वे अपना स्वरूप हर कर, भटका ही करते॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, शल्य हरें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

क्रोधित होकर वचन बोलकर, पापारम्भ करें।
तो फिर कैसे मोक्षमार्ग को, वे आरम्भ करें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, कलह टले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

क्रोधी पापारम्भ कराने, जो बोले वाणी।
वाणी बाण बने चेतन को, ना हो कल्याणी॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, स्वानुभूति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

क्रोधी पापारम्भ देखकर, खुश होकर चहकें।
तो सिद्धों के बाग खिले ना, ना ही वे महकें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, शाश्वत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

मानी होकर वचन बोलना, पाप योजना को।
तो फिर कैसे समवसरण में, दिव्य देशना हो॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, ज्ञानामृत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

मानी पापी वचन बोल के, प्रेरित कर पाना।
यही वचन संग्राम कराके, परवश हो जाना॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, वीतराग आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

मानी पापी वचनों द्वारा, करें प्रशंसायें।
वाक् युद्ध इससे ठन जाते, गुप्ति नहीं पायें॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, निजानंद आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

मानी वचन कला के द्वारा, वस्तु तो जोड़े।
पर स्वार्थी निज काम बना के, सबका दिल तोड़े॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, निज मोती आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

मानी वचन कला से वस्तु, मँगवालें पर से।
इन कर्मों के आस्रव द्वारा, निज रस को तरसे॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, शिववासी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

मानी पाप वचन को कहकर, कुछ सत्कार करें।
मुक्तिवधू सत्कार करे फिर, यह ना आश रखें॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, दोष हरें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

अहंकार के वचन धार के, पापारम्भ करें।
तो कैसे अंतर यात्रा को, वो प्रारम्भ करें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, निर्विकार आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५२॥

मानी पापारम्भ वचन कह, पर से करवायें।
तो क्या पर की तत्परता से, निज स्वरूप पायें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, मोक्ष चलें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

मानी वचन पाप के कहकर, कहें कार्य अच्छे।
उसको प्रोत्साहन से मिलते, पापों के गुच्छे॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

मायावी वचनों से करते, पाप योजनायें।
दगाबाज ऐसे प्राणी को, किस विध अपनायें॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, हर्ष मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायावचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

मायावी वचनों से पर से, पाप कराते हैं।
द्रव्य लिंग में दोष लगे तो, भाव न पाते हैं॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, धन्य बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायावचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

मायावी वचनों की अनुमति, देकर पाप करें।
जिन आज्ञा से वंचित रहकर, अपने आप मरें॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, अमर बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायावचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

मायावी वचनों से जोड़ें, पाप वस्तुओं को।
तो फिर कैसे जिन विद्या से, उन्हें नमोऽस्तु हो॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, निज धर्मी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायावचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

छल वचनों से पाप वस्तुएँ, पर से बुलवाना।
मायाचारी से फिर कैसे, सुख से रह पाना॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, सौम्य बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायावचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५९॥

छल से पाप वस्तु जो लाये, कहना उसे भला।
ये तो अपने से अपने को, ठगने स्वयं चला॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, पशु ना हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायावचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

छल वचनों से पाप कार्य की, खुद ही पहल करें।
संत नहीं तिर्यंच योनि की, वे खुद नकल करें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, पंचम गति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायावचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

छल वचनों से पाप करा के, बहुत कर्म बाँधे।
उदय समय दुख भोग सके ना, रात दिवस जागे॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, पाप कटे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायावचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

छल वचनों से पापी जन का, यदि सम्मान करें।
जब कर्मोदय आएगा तो, सब अपमान करें॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, उच्च बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायावचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

लोभी हो कर पाप योजना, करने की बोली।
करें योगियों को भी विचलित, कर्मों की गोली॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, निज भोगी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

लोभी होकर पाप कराने, प्रेरक वचन कहें।
तो फिर कैसे कर्म कटेंगे, इस पर मनन करें॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, जिन योगी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

लोभी होकर करे प्रशंसा, पर के पापों की।
अनुमोदन का दोष लगेगा, विधि है श्रापों की॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, शरण मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभवचनसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६६॥

लोभी होकर पाप वस्तुएँ, लाने वचन कहें।
कर्मों के अपराधी जन तो, निश्चित कष्ट सहें॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, विजित मना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

पाप वस्तु मँगवाने लोभी, बन उपदेश करें।
सावधान ऐसे पापों से, जो जिन भेष धरें॥
समारम्भ सिद्धों सम यह तज, व्यापक हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

लोभ वचन सुन पाप वस्तुएँ, दाता की जय हो।
चाटुकार से नहीं बचें तो, धर्म पराजय हो॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, अखण्ड हों आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभवचनसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

लोभी बन आरम्भ पाप के, करें वचन द्वारा।
हाय-हाय क्या होगा जग का, सबने धिक्कारा॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, कुपथ मिटें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

लोभ वचन से पाप कार्य के, आरम्भी होना।
समयसार का सार मिले ना, जीवन भर रोना॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, सार चखें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

लोभ वचन से पापारम्भी, जन के गुण गाना।
अतः निरन्तर पाप गर्त में, गिरते ही जाना॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, नित्य बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभवचनारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

क्रोधित होकर अपने तन से, पाप योजना कर।
आत्म गुप्ति का रस ना आता, आकुल से होकर॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, क्रोध तजें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७३॥

क्रोधित तन से पाप योजना, पर से करवायें।
ठोस ज्ञानघन चेतन कैसे, अपना प्रगटायें॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, वैदेही आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

क्रोधी तन से पर पापों का, अगर समर्थन हो।
तो चेतन का अपने तन से, क्या विच्छेदन हो?
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, बनें अतन आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

क्रोधी तन यदि पाप वस्तुएँ, आप स्वयं जोड़े।
कर्म पटल बिन मोक्ष महल जिन, की मंजिल छोड़े॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, शुचि पर्यय आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

क्रोधी तन ने पाप वस्तुएँ, पर से बुलवा लीं।
महा भयंकर आग स्वयं ही, निज में जलवा लीं॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, भावमयी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

क्रोधी तन ने समारम्भ का, किया समर्थन तो।
सुनो! क्रोध की इस भाषा से, सम्यक् धर्म न हो॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, अभिन्न हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

क्रोधी तन ने पाप कार्य को, खुद अंजाम दिया।
यही भयंकर बने समस्या, दुर्भव थाम लिया॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, शुद्ध द्रव्य आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रोधकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

क्रोधी तन ने पाप कार्य को, करवाया पर से।
बने पराश्रित इस करनी से, भटके निज घर से॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, भव छूटे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितक्रोधकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८०॥

क्रोधित तन को पर पापों में, हर्ष खुशी हो तो।
क्रोधी की क्या दुनियाँ होगी, क्या मुक्ती हो तो॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, जैन धर्म आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितक्रोधकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

मानी तन पर यदि इतराकर, पाप भाव ठाने।
तो भी सुंदर होकर उसको, जग मारे ताने॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, अनेकांत आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

मानी तन से पाप योजना, पर से करा रहा।
त्याग तपस्या लायक भव को, यूँ ही गँवा रहा॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, सिद्ध बिंब आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

मानी तन ने पर पापों की, अगर प्रशंसा की।
पर की हिंसा पीछे पहले, निज की हिंसा की॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, दया सिन्धु आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

मानी तन ने पाप कार्य को, परिग्रह जोड़ लिया।
होकर के मदहोश उसी ने, पथ ही मोड़ लिया॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, ध्येय मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

मानी तन ने पाप कार्य को, थामा औरों को।
दिव्य अलौकिक दर्श न पाये, भव के छोरों को॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, साध्य सधे आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

मानी तन यदि पर पापों को, शुभ ठहरायेगा।
पहले तो खुद दुख पायेगा, फिर पछतायेगा॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, तीर्थ बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८७॥

मानी तन ने पाप कार्य को, स्वयं किया पहले।
निज घर सिद्धालय सा सुंदर, क्यों भूले पगले?
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, सिद्ध क्षेत्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमानकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

मानी तन ने पाप कार्य को, खोजा सहयोगी।
तो उसको फिर स्वानुभूति तो, पर की ही होगी॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, स्वानन्दी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमानकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

मानी तन ने अन्य पाप को, अगर भला बोला।
तो उसने अपनी आतम को, अब तक ना खोला॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, लक्ष्य मिले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमानकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

मायावी तन पाप विकल्पों को, खुद ही कर ले।
दगा किसी का सगा न होता, ओ प्राणी! सुन ले॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, अमृत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायाकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

मायावी तन पाप भाव को, पर से करवा ले।
माया ने सबको ठग डाला, बात भुला डाले॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, निश्छल हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायाकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

मायावी तन देख पाप पर, हर पल नृत्य करे।
माया की छाया में फँसकर, आतम तत्त्व हरे॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, समरस हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायाकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

मायावी तन पाप परिग्रह, ढो-ढोकर लाये।
माया ने जो जाल बिछाए, उसमें फँस जाये।
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, भव छेदें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायाकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९४॥

मायावी तन पाप कार्य को, साथी ढूँढ़ रहा।
मुँह में राम बगल में छुर्री, लेकर घूम रहा॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, हरें बंध आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायाकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

मायावी तन पाप पराया, देख-देख फूले।
कुटिल नीति यह साथ न देगी, यही तथ्य भूले॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, आत्म धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायाकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

मायावी तन पाप कार्य को, करके हो गन्दा।
तन के उजले मन के काले, है गोरखधंधा॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, आत्म सुखी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमायाकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

मायावी तन पाप कार्य को, करवाने चलते।
मुख के मीठे मन के झूठे, निज पर को खलते॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, शाश्वत हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितमायाकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

मायावी तन अन्य पाप को, देख-देख हँसता।
राम-राम जप अन्य माल गप, करके खुद फँसता॥
यह आरम्भ तजें सिद्धों सम, चिच्चदेव आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितमायाकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

लोभी तन ने पाप योजना, खुद ही कर डाली।
लोभ पाप का बाप बखाना, सीख भुला डाली॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, चित परिणति आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

लोभी तन ने पाप योजना, करा दूसरों से।
पानी का धन पानी में यह, सुना न अपनों से॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, आत्म धनी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०१॥

लोभी तन पर पाप देख कर, खिले फूल जैसा।
संपद संसद ज्यों छूटे तो, चुभे शूल जैसा॥
यह संरम्भ त्याग सिद्धों सम, लोभ तजें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभकायसंरम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

लोभी तन ने पाप वस्तु का, जोड़ा आडम्बर।
जेब कफन में कभी न होती, कहते तीर्थंकर॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, यथाजात आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

लोभी तन ने परपापों को, घर में छुपा लिया।
लालच बुरी बला है इसने, चेतन चुरा लिया॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, निरास्रवी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

लोभी तन पर पाप वस्तु को, निरख-निरख झूमें।
लोभी बन सकता ना योगी, भले जगत घूमें॥
समारम्भ सिद्धों सम तज यह, पवित्र हों आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभकायसमारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

लोभी तन ने पाप कार्य को, कर आरम्भ कहीं।
कितने तीर्थ सजा लो चेतन!, निज आनन्द नहीं॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, मैल धुले आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलोभकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

लोभी तन ने पाप कार्य को, पर संकेत दिया।
इस इच्छा से जिनदीक्षा का, खुद ही छेद किया॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, शौच धर्म आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कारितलोभकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

लोभी तन पर पाप देखकर, कर ले दीवाली।
रावण सा मैदान सजेगा, जायेगा खाली॥
यह आरम्भ त्याग सिद्धों सम, कर्म कटें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनुमोदितलोभकायारम्भरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०८॥

निश्चय रत्नत्रय के धारी, सिद्धचक्र आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रयसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०९॥

दर्शन निज सम्यग्दर्शन कर, मोक्ष गये आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११०॥

ज्ञान प्राप्त कर सम्यग्ज्ञानी, मुक्त हुए आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १११॥

यथाख्यात चारित्री पाये, मुक्तिवधू आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्रसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११२॥

जो है सो अस्तित्व रहे नित, हों अभेद आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अस्तित्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११३॥

गुण वस्तुत्व अनंत धारते, चित् प्राणी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११४॥

शुद्ध सिद्ध द्रव्यत्व गुणी हैं, शुद्ध द्रव्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११५॥

प्रमेयत्व हैं विषय किसी के, कौन कहे आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयत्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११६॥

अगुरुलघुत्व गुण सिद्धों का, है अकथ्य आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अगुरुलघुत्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११७॥

प्रदेशत्व आकार सुहाना, सिद्धों का आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रदेशत्वधर्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११८॥

वीर्य धर्म निज में प्रगटाये, वज्र पुरुष आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११९॥

सूक्ष्म धर्म धर धरे विशाला, शुद्ध दशा आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२०॥

हिल मिल कर अवगाहित होते, परमेष्ठी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अवगाहनगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२१॥

बाधा ना दे अव्याबाधी, निज स्वादी आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अव्याबाधगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२२॥

स्व-संवेदन करते निज का, निजानुभव आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेदनगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२३॥

धरें अनंत चतुष्टय अर्हम्, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तचतुष्यसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२४॥

मुख्य अष्ट गुण ब्रह्म स्वरूपम्, जग प्रसिद्ध आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मुख्याष्टगुणसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२५॥

निश्चय पंचाचार धारते, भवि जहाज आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाचारसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२६॥

निश्चय श्रुत पा मोक्ष पधारे, जग त्यागी आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चयश्रुतसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२७॥

साधु साध के निश्चय आतम, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चयआत्मसम्पन्नाय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२८॥

पूर्णार्घ्य (सारंगी)

पाँचों पापों से जो भागे, सो पुण्यों को पाये वो।
पुण्यों से अर्हन्ता स्वामी, ज्ञाता दृष्टा ध्याये हो॥
सो कर्मों ने पीछा छोड़ा, सिद्धों की श्रेणी पाये।
भक्ती श्रद्धा के मार्गी हो, मुक्ती रानी को भाये॥
सिद्धों की सिद्धी से मुक्ती, भारी-भारी हर्षाई।
माया काया के त्यागी को, जल्दी माला ले आयी॥
सिद्धों को ले दौड़ी दे के, भक्तों को पीड़ा भारी।
सो मुक्ती को पाने देखो, भक्तों ने की तैयारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...॥

(जाप्य मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

कर्मास्रव तो जड़ रहा, आप रहे सिद्धीश।
जड़-जड़ हो सो गुण कहें, एक शतक अठबीस॥

(लक्ष्मीधरा)

लोक के शीश पै शुद्ध हैं बुद्ध हैं।
वे अनंतानन्त सिद्ध के चक्र हैं॥
पूज्य आदर्श को द्रव्य से भाव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से ॥१॥

लोक के धर्म के ज्ञान के ग्रन्थ के।
भक्त के शिष्य के संत अर्हन्त के॥
ज्ञान हैं ध्यान सो द्रव्य से भाव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से ॥२॥

पुण्य से भाग्य से योग से काल से।
सिद्ध के चक्र को पूजते ताल से॥
रूप ना जानते द्रव्य से भाव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से ॥३॥

जानने को यही भक्त की प्रार्थना।
शीघ्र ही सिद्ध हो साधना भावना॥
सो गुरु ने कहा द्रव्य से भाव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से ॥४॥

सिद्ध की सम्पदा कौन पूरी कहे।
किन्तु थोड़ी तुम्हें ध्यान से दे रहे॥
क्या नहीं सिद्ध में द्रव्य से भाव से।

हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से ॥५॥
जन्म ना मृत्यु ना भूख ना प्यास ना।
वृद्ध ना रोग ना द्वेष ना आश ना॥
मुक्त हैं जो विकारी सभी भाव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से॥६॥
भक्त श्रद्धान की डोर को थाम लो।
क्या घटे आपका सो जरा ध्यान दो॥
भक्त को काम है आपकी छाँव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से॥७॥
हो ऋणी आपके गीत ही गायेगा।
या अभी या कभी सिद्धि को पायेगा॥
'सुव्रती' हो सुखी आपकी नांव से।
हो नमोऽस्तु अतः भक्ति से भाव से॥८॥

(सोरठा)

चउ कषाय त्रय योग, कृत कारित अनुमोदना।
संरम्भादिक भोग,- तजें, भजें सिद्धातमा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...॥

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

षष्ठम पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

परम तत्त्व परमातमा, निष्कर्मा भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं...)

(सखी)

मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।
हम करते नमोऽस्तु ध्यान, सादर जिन पूजा गा के॥
सिद्धों का दर्शन करने, दर्शन आवरणी हरने।
कब जन्म मृत्यु हम नाशें, झट सिद्ध शहर में वासें॥
सिद्धों का शहर सुहाना, हमको सिद्धालय जाना।
जहाँ वाहन चले न हाथी, शुद्धातम पथ एकाकी॥
मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

सिद्धों सम ज्ञानी बनने, सब ज्ञानावरणी हरने।
संसार ताप कब छोड़ें, सिद्धों की चादर ओढें ॥
जो सिद्ध चदरिया ओढे, वो मोक्ष महल को दौड़े।
सिद्धों की छाँव स्वधर्मी, जहाँ ठण्डी लगे न गर्मी॥
मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।
हम करते नमोऽस्तु ध्यान, सादर जिन पूजा गा के॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

दर-दर ठोकर ना खायें, ना वेदनीय तड़पायें।
तुम अक्षय पद के स्वामी, हम सिद्ध बनें आगामी॥
सिद्धों का रूप सलोना, वह पाने शीघ्र चलो ना।
जिस पर मोहित नर नारी, जिसे नजर लगे न हमारी॥ मन भज ले...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कब काम समाप्त करें हम, कब मोही राग हरें हम।
घर-घर हम फूल खिलायें, सद् ब्रह्मचर्य अपनायें॥
सिद्धों की प्रीत अमर है, अपनी भी वहीं नजर है।
जो होगा सो देखेंगे, पर सिद्ध बिना न रहेंगे॥ मन भज ले...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वसंनाय पुष्पाणि...।

कब हरें क्षुधा की पीड़ा, फिर आयु कर्म जंजीरा।
अब छूटें भोग हठीले, सिद्धों के भोग रसीले॥
सिद्धों के राज रसोड़े, जो चख ले वो ना छोड़े।
यदि मुँह में आया पानी, तो बन जा आतमज्ञानी॥ मन भज ले...

ॐह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

आतम का तम आ धमका, सो नामकर्म है चमका।
है गुमी इसी में आतम, वह खोज करा दो तुम सम॥
सिद्धों की ज्योति निराली, जहाँ मनती सदा दिवाली।
उस झिलमिल में हम झूमें, सिद्धों की गलियाँ घूमें॥
मन भज ले सिद्ध विधान, दो सौ छप्पन गुण ध्याके।
हम करते नमोऽस्तु ध्यान, सादर जिन पूजा गा के॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम गिरें उठें गोत्रों से, सो मुक्त नहीं कर्मों से।
झट भाव तजें हम खोटे, बन जायें तुम सम चोखे॥
सिद्धों के साथ अनोखे, जहाँ मिलते कभी न धोखे।
अब हमें भले जग रोके, हम सिद्ध रहेंगे होके॥ मन भज ले...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सब अन्तराय की माया, कहीं धूप कहीं पर छाया।
तज कर्म विघ्न फल सारे, एकत्व विभक्त विचारे॥
हम सिद्धों के प्रत्याशी, हों शीघ्र मोक्ष के वासी।
सो थामो डोर हमारी, दो हमको मोक्ष सवारी॥ मन भज ले...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

प्रभु देख जगत के मेले, निज रमें अकेले खेले।
हम झेलें सभी झमेले, अब भटकें भक्त न चेले॥
सो शक्ति भक्ति से पायें, सिद्धों को भक्त मनायें।
अब सिद्धचक्र विस्तारें, हम अपना भाग्य सँवारें॥ मन भज ले...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(भुजंगप्रयात)

नहीं चाहिए पाप के भोग न्यारे, नहीं चाहिए पुण्य के योग प्यारे।
नहीं चाहिए कर्म संयोग सारे, हमें चाहिए आपके ही नजारे॥
तुम्हें तो कभी भी न भूले जमाना, यही प्रार्थना आप भी ना भुलाना।
कभी ना कभी तो हमें दर्श देना, दयालु! कृपालु! हमें तार देना॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं षट्पंचाधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में दो सौ छप्पन, गुण पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

जहाँ देखिये वहीं विश्व में, ज्ञान ज्ञान छाये।
ज्ञान बिना तो स्वयं चेतना, कुछ ना कर पाये॥
ज्ञान आवरण हरे केवली, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

मन इंद्रिय के रहे पराश्रित, बहु उत्पात करें।
तीन शतक छत्तीस भेद हर, सम्यग्ज्ञान करें॥
मतिज्ञानावरणी हर कर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मतिज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

द्वादशांग श्रुत ना होने दे, ना आतमज्ञानी।
ज्ञान पुंज बिन उद्घाटित ना, होती जिनवाणी॥
श्रुतज्ञानावरणी हर कर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

आतम की अनन्त सीमा को, जिसने बाँध रखा।
जिसके कारण आतम धारण, कर ना सके सखा॥
अवधि-ज्ञानावरणी हर कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

मनपर्यय ढकता मन मन्दिर, चेतन मन्दिर को।
तो सिद्धों सम अपनी आतम, कैसे सुंदर हो॥
मनपर्यय-ज्ञानावरणी हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्यय-ज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

संख्यातीत भेद हैं जिनके, उनके भी ऊपर।
सकल ज्ञान ना देकर रोके, सबको इस भू पर॥
केवलज्ञानावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

राज दर्श चाहें पर द्वारी, हमें न करने दें।
यों ही अनंत दर्शन से जो, वंचित रखे हमें॥
कर्म-दर्शनावरणी हर कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

नयन देखते मूर्त द्रव्य पर, जो बाधा डाले।
फिर निज अवलोकन क्या हो यदि, कर्मों के ताले॥
चक्षु-दर्शनावरणी हर कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं चक्षुदर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

नयन बिना जड़ अवलोकन में, जो बाधक बनता।
निराकार निज दर्शन कैसे, फिर पाये जनता॥
अचक्षु-दर्शनावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अचक्षुदर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

द्रव्य क्षेत्र आदिक में सीमित, अवधिदर्शन हो।
ज्ञान पूर्व सामान्य मूर्त का, बाधक दर्शन जो॥
अवधि-दर्शनावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अवधि-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

लोकालोक दिखे गोखुर सम, पर जो दे धोखे।
सिद्धचक्र में शामिल होने, से भी जो रोके॥
केवल-दर्शनावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं केवल-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

जिसको निद्रा कर्म सताये, आसन ना देखे।
दिव्य दर्श निज का ना करके, निद्रा में लेटे॥
निद्रा-दर्शनावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निद्रा-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

निद्रानिद्रा जिसे सताये, निश्चित सो जाये।
कितना भी फिर उसे जगा लो, वो ना जग पाये॥
निद्रानिद्रा आवरणी हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निद्रानिद्रा-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

कुछ सोना कुछ जगना जिसमें, प्रचला लघु निद्रा।
इसके कारण झलक न पाती, निज में जिन मुद्रा॥
प्रचला-दर्शनावरण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रचला-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

अंगोपांग हिला निद्रा में, मुख से लार बहे।
शोर भयंकर होने पर भी, वो ना जाग सके॥
प्रचलाप्रचला आवरणी हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रचलाप्रचला-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

निद्रा में कुछ अद्‌भुत कर ले, जिनका होश नहीं।
फिर भी निज दर्शन ना हो तो, जिन जय घोष नहीं॥
स्त्यानगृद्धि आवरणी हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्त्यानगृद्धि-दर्शनावरणीकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

खड्‌गधार पर लगी शहद को, चखना रसना से।
सुख-दुख के इन जगत रसों ने, निज के रस नाशे॥
वेदनीय की हरे वेदना, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वेदनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

भोग विषय का दाता साता, सब को ही भाता।
साता नाता जिसे न भाता, निज सुख वो पाता॥
साता वेदनीय को हरके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साता-वेदनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

कर्म असाता से जग भव दुख, रोग कष्ट पाता।
इसमें जो समता रख पाता, आत्म सौख्य पाता॥
कर्म असाता वेदनीय हर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं असाता-वेदनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

चंचल वानर मदिरा पी हो, गाफिल पर गाफिल।
मोही माया यों होगी तो, सुखी न हो मंजिल॥
मोहनीय हर निर्मोही बन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मोहनीयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

जिससे जिनशासन में श्रद्धा, जन्म न ले पाती।
सात पाँच दो प्रकार से जो, समकित को खाती॥
मिथ्यादृग तज सम्यक् से सज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यात्वकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

दधि गुण मिश्रित प्रकृति जैसी, सम्यक्मिथ्या है।
तत्त्व-अतत्त्व एक सम जाने, घातक श्रद्धा है॥
यह सम्यक्-मिथ्यात्व त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्मिथ्यात्वकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

चल मल अगाढ़ दोष सहित जो, है सम्यग्दर्शन।
यद्यपि मोक्षमार्ग ना नाशे, पर ना दे निज धन॥
सम्यक्प्रकृति यही त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्प्रकृतिकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

अनंत दुख से जिसका बंधन, दे मिथ्यादर्शन।
चरितमोह वश लेश न संयम, क्रोध करें क्रन्दन॥
क्रोध-अनन्तानुबन्धी तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंधीक्रोधकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

करे धर्म धर्मी से ईर्ष्या, दे मिथ्या क्रन्दन।
भव-भव फूले फले न लेकिन, मार्दव बिन चेतन॥
मान-अनन्तानुबन्धी तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंधीमानकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

देव-शास्त्र-गुरुओं से छल कर, गति तिर्यंच मिले।
इस प्रपंच से रंच न सुख हो, दुख की मंच मिले॥
माया-अनन्तानुबन्धी तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंधीमायाकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

भव-भव लालच दे करवाये, निन्द्य कर्म हमसे।
पर द्रव्यों की आसक्ती से, मिल न सके तुम से॥
लोभ-अनन्तानुबन्धी तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंधीलोभकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

चरितमोह समकित दे व्रत ना, शुद्ध-उपयोग नहीं।
नहीं स्वरूपाचरण चरित दे, ये जिन वचन सही॥
यह अप्रत्याख्यान-क्रोध तज, सिद्ध बने आहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रत्याख्यानक्रोधकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

अस्थी जैसी कठिन गृहस्थी, टूट भले जाये।
पर तैयार नहीं झुकने को, अणुव्रत ना भाए॥
यह अप्रत्याख्यान-मान तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रत्याख्यानमानकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

मेढ़ सींग सम टेड़ी-मेड़ी, राह खोजता जो।
व्रत प्रतिमायें ना लेने दे, किन्तु पूजता हो॥
अप्रत्याख्यानी माया तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रत्याख्यानमायाकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

जिससे श्रावक व्रत या संयम, पनप नहीं पाते।
फिर भी जिनशासन के लोभी, जिसे न तज पाते॥
यह अप्रत्याख्यान-लोभ तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रत्याख्यानलोभकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

मुनि दीक्षा में बाधा दे पर, अणुव्रत का साथी।
क्रोध कषायी मुक्तिवधू का, बने न बाराती॥
प्रत्याख्यानावरण-क्रोध तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानक्रोधकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

जो अभिमान कराये लेकिन, कुछ-कुछ झुकने दे।
अणुव्रत धार महाव्रत लेने, जो ना चलने दे॥
प्रत्याख्यानावरण-मान तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानमानकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

पंचम गुणस्थान धार कर, मायाचार करे।
बन ना पाये सकल संयमी, तो क्या मुक्ति वरे॥
प्रत्याख्यानी-माया तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानमायाकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

प्रतिमा व्रत ले परिग्रह जोड़े, ना संतोष धरे।
तो कैसे वह श्रमण बनेगा, अगर न लोभ तजे॥
प्रत्याख्यानावरण-लोभ तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानलोभकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

जल रेखा सम क्रोध रोष जो, मुनिव्रत का साथी।
लेकिन यथाख्यात का रिपु सो, मुक्ति न हो पाती॥
संत संज्वलन-क्रोध त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संज्वलनक्रोधकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

अकड़ बेंत सम द्वेष शेष सो, खुले न मुक्ति द्वार।
अगर शुद्ध उपयोग नहीं तो, घटे नहीं संसार॥
संत संज्वलन-मान त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संज्वलनमानकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

खुरपे सम अति सरल राग सो, शिव में नहीं प्रवेश।
त्रय योगों की पूरी ऋजुता, दे सिद्धों का देश॥
संत संज्वलन-माया तज के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संज्वलनमायाकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

हल्दी सम पर आत्म विशुद्धी, पूरी खरी नहीं।
सो सिद्धों सी शुचि कुंदन सी, उतरी खरी नहीं॥
संत संज्वलन-लोभ त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं संज्वलनलोभकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

हास्य कर्म वश जब हँसते सो, लगते हैं अच्छे।
कर्म जाल में जब फँसते सो, रोते हैं बच्चे॥
हास्य कर्म की हँसी उड़ाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं हास्यकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

रति कर्मोदय की बलिहारी, उलझे संसारी।
निज से प्रीति करे ना पाकर, यश वैभव नारी॥
रति कर्मोदय तज सिद्धोदय, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रतिकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

जिसके कारण अपने-पर से, सदा उदासी हो।
प्रशान्त रूप ना पाकर कैसे, मोक्ष निवासी हो॥
अरति त्याग कर परमानन्दी, सिद्ध बने आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अरतिकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

जिनको हम जी जान से चाहें, यदि वियोग उनका।
होने से हों शोकमग्न तो, क्या सुख चेतन का॥
शोक त्याग कर शुद्धानंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शोककर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

जिससे सात तरह के भय से, जो भयभीत हुए।
अनिष्ट शंकित हो कम्पित हो, निज को नहीं छुए॥
भव भय हरकर निर्भय बनकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं भयकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

देख मलिनता हुई ग्लानी, पर के दोष कहें।
अपने गुण गायें तो कैसे, वह निर्दोष रहें॥
तजकर ग्लानी बनकर ज्ञानी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं जुगुप्साकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

जिन कर्मों से पुरुष जनों में, रमने की इच्छा।
स्त्री वेद से सिद्ध योग्य ना, हो पाये दीक्षा॥
स्त्रीवेद हर निज में रमकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्त्रीवेदकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

जिन कर्मों से नारी जन में, रमने की इच्छा।
पुरुषवेद से मुक्तिवधू के, लायक ना दीक्षा॥
पुरुषवेद हर अपगत वेदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषवेदकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

जिन कर्मों से नर-नारी में, रमने की इच्छा।
वेद नपुंसक से कैसे हो, मोक्ष योग्य दीक्षा॥
वेद नपुंसक कर्म हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नपुंसकवेदकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

जिसके कारण सांकल जैसे, जीव बंधे रहते।
चार आयु के अनंत बंधन, भव-भव में सहते॥
आयु कर्म हर निज अवगाही, सिद्ध बने आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आयुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

दस हजार से तैतीस सागर, तक की दे आयु।
सात तरह के नरकों के दुख, दे परिग्रह वायु॥
नरक आयु के प्राण छीनकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नरकायुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

सबकी गोद निगोद धाम से, महामच्छ तक जो।
दे तिर्यंच रूप वध-बंधन, छल-बल का फल हो॥
इस तिर्यंच आयु को हरकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तिर्यंचायुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

जिसमें संयम लायक जीवन, होता प्राप्त हमें।
पर जब तक है इसका बंधन, सिद्ध न आप्त बनें॥
मनुज आयु हर निज वश होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनुष्यायुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५२॥

नरक आयु सम देव आयु भी, चेतन को रोके।
भोग भोग स्वर्गीय सुखों को, निज को हों धोखे॥
देव आयु चिद्देव छीनकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं देवायुकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

चित्रकार सम रंग बिरंगी, करे चित्र रचना।
इन्हें देख चेतन मत नचना, इनसे नित बचना॥
नामकर्म हर सूक्ष्म रूप धर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

जिसमें नरक गति में चेतन, सहे वेदनाएँ।
बहुत-बहुत संक्लेश भाव कर, व्रत ना कर पाएँ॥
हरे नरकगति पा पंचमगति, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नरकगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

जिससे तिर्यंचों में जाकर, छेद-भेद सहते।
हाय-हाय फिर बूचड़खाने, जाकर दुख सहते॥
हरकर पशुगति पा पंचमगति, सिद्ध बने आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तिर्यंचगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

जिससे मोक्ष प्राप्ति के लायक, दे सौभाग्य सखे।
फिर भी बाँध रखे चेतन को, मोक्ष में जा न सके॥
हर मानवगति पा पंचमगति, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनुष्यगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

चार तरह की देव योनियाँ, जिससे आ धमकीं।
विषयासक्त मुक्त हों कैसे, गंध न संयम की॥
हरे देवगति पा पंचमगति, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं देवगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

क्षिति जल पावक वृक्ष समीरा, एक इंद्रिय जाति।
कर्म चेतना सहते लेकिन, सिद्धि न हो पाती॥
एक इंद्रिय की जाति हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं एकेन्द्रियजातिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

स्पर्शन के साथ-साथ में, जब रसना आये।
शंखादिक जाति में भटके, निज रस ना पाये॥
दो इंद्रिय की जाति हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं द्विन्द्रियजातिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

त्वचा जीभ के साथ नासिका, जब प्राणी पाते।
चींटी खटमल आदिक तन पा, उनमें फँस जाते॥
त्रय इन्द्रिय की जाति हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिन्द्रियजातिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

चक्षु सहित चारों इन्द्रिय पा, देखे जगत महल।
अंतर्दर्शन कर ना पाए, दिखे न मोक्ष महल॥
चतुरिन्द्रय की जाति हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरिन्द्रियजातिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

कर्ण सहित पाँचों इन्द्रिय पा, अमन समन बनते।
फिर भी परमतत्व ना जाना, सो जिन ना बनते॥
पंचेन्द्रिय की जाति हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पंचेन्द्रियजातिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

मनुज और तिर्यंच जीव का, औदारिक तन हो।
ये तन चेतन को ढक ले सो, शुद्ध न चेतन हो ॥
औदारिक परमौदारिक तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं औदारिकशरीररहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

देव नारकी जीवों के तन, वैक्रियिक होते।
तरह-तरह के रूप धरें पर, मुक्त नहीं होते॥
वैक्रियिक तन से रहित हुए सो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वैक्रियिकशरीररहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

प्रमत्त मुनि के संशय हरने, सिर से जो निकले।
या फिर तीर्थ वंदना को शुभ, उज्ज्वल धाम चले॥
यह आहारक देह त्यागकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आहारकशरीररहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

तन में तेज ओज भरता जो, संसारी का हो।
शुभ या अशुभ लब्धि से हो पर, ज्ञान पुंज ना हो॥
यह तैजस तज शुद्धातम भज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तैजसशरीररहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

कर्म पिण्ड यह नूतन तन का, कारण मूल बने।
एक क्षेत्र अवगाही है पर, कभी न सिद्ध बने॥
कार्मण तन का भ्रमण हरण कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कार्मणशरीररहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

औदारिक अणु मिलते लेकिन, छिद्र नहीं तन में।
तन में जब तक चेतन है सो, मिले न सिद्धन में।
औदारिक संघात त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं औदारिकसंघातरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

कर्म वर्गणा आती लेकिन, जोड़ नहीं तन में।
निज संघात कराये यह पर, रमे न चेतन में॥
यह वैक्रियिक संघात त्यागकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वैक्रियिकसंघातरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

आहारक तन को जो रचता, बिन छिद्रों द्वारा।
फिर भी कर्म जाल में उलझे, मिले न सुख न्यारा॥
आहारक संघात त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आहारकसंघातरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

तैजस के अंगोपांगों को, जो नित जोड़ रखे।
पर आतम को सिद्धातम से, ये ना जोड़ सके ॥
यह तैजस संघात त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तैजससंघातरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

आठों कर्म रहे कार्मण जो, आपस में बँधते।
पुण्य पाप ना तजे इसी से, निज से ना सजते॥
यह कार्मण संघात त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कार्मणसंघातरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

औदारिक के योग्य वर्गणा, लाकर जो बाँधे।
फिर भी औदारिक की सीमा, कभी न जो लाँघे॥
औदारिक बंधन को तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं औदारिकबंधनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

जो वैक्रियिक परमाणु ला, उसी रूप करता।
इसी विक्रिया की माया में, संसारी फिरता॥
वैक्रियिक बंधन को तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वैक्रियिकबंधनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

आहारक के योग्य वर्गणा, बाँधे जो लाकर।
खुद बंधन में हमें बाँधता, शंकालु होकर॥
आहारक बंधन को तजकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आहारकबंधनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

तैजस तन के योग्य वर्गणा, बाँधे आपस में।
बंधन से न मुक्ति हमें दे, तपता तैजस में॥
इस तैजस बंधन को तजकर, सिद्ध बने आहा।

ॐ ह्रीं अर्हं तैजसबंधनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

द्रव्य कर्म के योग्य वर्गणा, लाकर बाँधे जो।
एक क्षेत्र अवगाह करे पर, साध्य न साधे वो॥
इस कार्मण बंधन को तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कार्मणबंधनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

तन का जो आकार रूप है, वह संस्थान कहा।
नख से शिख तक सुंदर है जो, समचतुरस्त्र रहा॥
पहला यह संस्थान त्यागकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुस्त्रसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

नाभि के ऊपर हो मोटा, पतला हो नीचे।
ऐसे तन में जब तक चेतन, जा न सके ऊँचे॥
यह न्यग्रोधपरिमण्डल तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

नाभि के नीचे हो मोटा, पतला हो ऊपर।
यह तन रोके जा न सकें सो, हम अष्टम भू पर॥
यही स्वाति संस्थान त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्वातिसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

जिससे तन के पृष्ठ भाग में, कूबड़ सी निकले।
जिसे न कोई चाहे जिसको, तज ले मन पगले॥
यह कुब्जक संस्थान त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कुब्जकसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

बौनों जैसी देह देखकर, हँसी न रुक पाये।
इनमें फँस सिद्धों की वस्ती, हमें न मिल पाये॥
यह वामन संस्थान त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वामनसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

जिसके अंग-उंपाग सभी हों, टेड़े-मेड़े से।
आतम इसमें दुख पाये सब, नाक सिकोड़े रे॥
यह हुण्डक संस्थान त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं हुण्डकसंस्थानरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

जिन कर्मों से नर पशु तन के, अंगोपांग बने।
इन अष्टांगों में फँस करके, अष्ट गुणी न बने॥
यह औदारिक अंगोपांग तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं औदारिक-अंगोपांगरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

देह शुभाशुभ वैक्रियिक तन में, सप्त धातु ना हों।
फिर भी अंगोपांग रूप है, तो भी मुक्त न हों॥
यह वैक्रियिक अंगोपांग तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वैक्रियिक-अंगोपांगरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

अंगोपांग सहित होता है, आहारक पुतला।
संशय हरे तीर्थ कर ले पर, करे ना निज उजला॥
यह आहारक अंगोपांग तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आहारक-अंगोपांगरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

जिससे वज्रों सम हड्डी हों, वेष्टन कीली भी।
वज्रवृषभनाराच संहनन, दे जो मोक्ष मही॥
त्याग प्रथम उत्कृष्ट संहनन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराच-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

जिसमें वज्र अस्थि कीली पर, वज्र न वेष्टन हो।
इससे मोक्ष कभी न मिलता, सिद्ध न आतम हो॥
त्याग वज्रनाराच संहनन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रनाराच-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

जिसमें नहीं वज्र का कुछ भी, कील लगी फिर भी।
त्याग तपस्या खूब करें पर, मुक्ति नहीं फिर भी॥
तज कर यह नाराच संहनन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नाराच-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

जिसमें तन की सभी अस्थियाँ, कीलित हों आधी।
नर तिर्यंच करे तप फिर भी, नहीं सिद्ध स्वादी॥
तजे अर्द्धनाराच संहनन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धनाराच-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

जिससे देह अस्थियाँ खुद ही, जुड़ती कील बिना।
संयम धारण तो करवा दे, पर ना बने जिना॥
कीलक संहनन तज कुंदन से, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कीलक-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

जिससे अस्थी पर आपस में, वेष्टित मांस नसें।
अलग रहें पर तन को साधें, किन्तु न मोक्ष वसें॥
असंप्राप्तसृपाटिका को तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं असंप्राप्तसृपाटिका-संहननरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

जिस कर्मोदय से रंग मिलते, अपनी काया को।
श्वेत वर्ण से सुंदर तन में, कुछ तो माया हो॥
गौर वर्ण तज निज गौरव पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतवर्णरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, पीत स्वर्ण जैसा।
दुनियाँ चाहे पर गुरु कहते, आत्म वर्ण कैसा॥
पीत वर्ण तज परमपूज्य जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पीतवर्णरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, लाल रक्त जैसा।
निज में जो आसक्त उन्हें फिर, रक्त वर्ण कैसा॥
रक्त वर्ण तज मुक्त रूप भज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रक्तवर्णरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, तरु सा हरित हरा।
जिन्हें मोक्ष तरु पाना उनको, रुचे हरि ना हरा॥
हरित वर्ण तज सिद्ध भजन कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं हरितवर्णरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, श्याम सलोना सा।
जिनको आतम राम चाहिए, वे न रखें आशा॥
कृष्ण वर्ण तज शुद्ध स्वरूपी, सिद्ध बने आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कृष्णवर्णरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, सुनो सुगन्धित सा।
जड़ की गंध उन्हें न रुचती, जो निज गंध वसा॥
त्याग सुगंधी नामकर्म यह, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सुगंध-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

जिस कर्मोदय से तन बनता, है दुर्गन्ध भरा।
उसे गंध कर सके न विचलित, जो निज में उतरा॥
नामकर्म दुर्गन्ध त्याग यह, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गंध-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

जिससे रसना मिर्च खार के, तिक्त स्वाद पाये।
पर निज के रसिया को जड़ रस, तिक्त नहीं भाये॥
नामकर्म यह तिक्त त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तिक्त-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

जिससे रसना नीम करेला, कटुक स्वाद पाये।
लेकिन मुक्तिवधू रसिया को, कटुक नहीं भाये॥
नामकर्म यह कटुक त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कटुक-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

जिससे रसना नीबू इमली, आम्ल स्वाद पाये।
लेकिन आत्म सौख्य रसिया को, आम्ल नहीं भाये॥
नामकर्म यह आम्ल त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आम्ल-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

जिससे रसना गुड शक्कर के, मधुर स्वाद पाये।
लेकिन मुक्तातम रसिया को, मधुर नहीं भाये॥
नामकर्म यह मधुर त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मधुर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

जिससे रसना चखे आंवला, कसाय स्वाद पाये।
लेकिन स्वानुभव रसिया को, कसाय नहीं भाये॥
नामकर्म यह कसाय त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कसाय-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

जिस कर्मोदय से कोमल सी, काय मुलायम हो।
भोगी इससे राग करे पर, रुचे न आतम को॥
नामकर्म यह मृदु त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मृदुस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

जिस कर्मोदय से कठोर सा, तन को कठिन करे।
अज्ञानी तो द्वेष करे पर, ज्ञानी ज्ञान करे॥
नामकर्म यह कठिन त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं कठिनस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

जिस कर्मोदय से भारी सी, देह द्रव्य पाये।
भार रहित में जग भरमाये, मुमुक्षु पथ पाये॥
नामकर्म गुरुस्पर्श त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

जिससे काया को हल्का सा, स्पर्शन मिलता।
लघु स्पर्शन वही कहलाता, छूकर सुख मिलता॥
हल्का सा स्पर्श त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं लघुस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

जिससे शीतल सा स्पर्शन, मिलता काया को।
हिम ओला शीतल पानी सा, जीवन पाया हो॥
हिम जैसा स्पर्श त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शीतस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

जिससे ज्वाला अंगारों सा, जो अहसास हुआ।
इस संताप ताप से दूषित, कब संन्यास हुआ॥
अंगारों सा स्पर्श त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उष्णस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

जिससे घी या तेल सरीखा, स्पर्शन होता।
इसी राग की चिकनाई से, फँस आतम रोता॥
घृत सा चिकना स्निग्ध त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्निग्धस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

जिससे रुक्ष मरुस्थल जैसा, छूने से लगता।
संसारी तो छूकर रोता, शिवमार्गी हँसता॥
रुक्ष मरुस्थल सा स्पर्श तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रुक्षस्पर्श-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

नरकगति पाने के पहले, जो आकार रहा।
नरकगत्यानुपूर्वी वह है, किसको तार रहा॥
नरक गत्यानुपूर्वी तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नरकगत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

गति तिर्यंच प्राप्ति के पहले, रूप रहा जैसा।
वह तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, भव दुख के जैसा॥
तिर्यक्गत्यानुपूर्वी तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तिर्यग्गत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

देवगति पाने के पहले, जो आकृति होती।
वही देवगत्यानुपूर्वी, आतम छवि खोती॥
देवगत्यानुपूर्वी तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं देवगत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

मनुष्यगति पाने के पहले, सूरत विग्रह की।
मनुष्यगत्यानुपूर्वी वह है, मूरत संग्रह की॥
मनुष्यगत्यानुपूर्वी तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं मनुष्यगत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

जिससे अपना स्वयं घात हो, वह अपघात रहा।
जिसमें फँसकर यह जग सारा, निजगुण घात रहा॥
खुद का घाति अपघाती तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अपघात-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

जिससे घात दूसरों का हो, वह परघात रहा।
परघाती ही निजघाती का, कैसा साथ रहा॥
निज पर घाति परघाति तज, सिद्ध बने आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं परघात-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

जिससे आतप रूप देह हो, सूरज के जैसी।
इसकी तेज चमक में गुमती, अपनी आतम सी॥
सूरज सा तप आतप तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आतप-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

जिससे तन उद्योत रूप हो, चाँद चाँदनी सा।
इससे आतम का स्वरूप तो, पड़ता फीका सा॥
चंदा सा उद्योत त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उद्योत-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

जिससे तन में उच्छ्वासमय, प्राणायाम हुआ।
देह टिके तन स्वस्थ रहे पर, क्या कल्याण हुआ॥
कर्म श्वास निःश्वास त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं श्वास-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

जिससे गज सम मस्त चाल पा, सुंदर खूब दिखे।
प्रशस्त विहायगति कहलाती, फिर भी मोक्ष न दे॥
प्रशस्त शुभ विहायगति तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शुभविहायोगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

जिससे ऊँट गधे के जैसी, चाल प्राप्त होती।
वह अप्रशस्तविहाय गति है, निज मंजिल खोती॥
अप्रशस्त विहायगति तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अशुभविहायोगति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

जिससे दो इन्द्रिय आदिक में, जीव जन्म लेते।
त्रस्त करे त्रस नाम जगत में, ज्ञानी तज देते॥
त्रस दायक त्रस नाम त्यागकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं त्रस-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

जिससे एक इन्द्रिय आदिक में, जन्में संसारी।
क्षिति जल पावक वृक्ष समीरा, से आतम हारी॥
स्थावर नामकर्म तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्थावर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

जिसको पाकर पर को रोके, पर से रुक जाये।
बादर की चादर में ढककर, आत्म न दिख पाये॥
निज पर बाधित बादर तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं बादर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

जिसको रोक सके न कोई, पर को ना रोके।
सूक्ष्मनाम कर्मों के कारण, सब खाते धोखे॥
बाधा रहित सूक्ष्म को तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्म-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

जो आहारादिक पर्याप्ति, पूरी करवाये।
फिर भी आत्मरमण के इच्छुक, इन्हें न अपनाये॥
पूर्ण रूप पर्याप्त त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पर्याप्त-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

जिससे अपर्याप्त ही रहते, संसारी प्राणी।
तो पर्याप्त न अनुभव निज का, सुख ना कल्याणी॥
अपर्याप्त सा अपर्याप्त तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अपर्याप्त-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

जिससे तन लोहे सा भारी, ना रूई सा हल्का।
फिर भी इसमें फँसकर किसका, निज आतम झलका॥
हल्का भारी अगुरुलघु तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अगुरुलघु-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

जिसके कारण एक देह का, एक जीव स्वामी।
इसी कर्म के कारण निज के, बन न सके स्वामी॥
इक में एक प्रत्येक त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

जिससे एक देह के स्वामी, बहुत जीव होते।
अनंत हैं पर अनंत न बनकर, भव-भव दुख ढोते॥
इक में बहु साधारण तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधारण-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

जिससे तन की सात धातुयें, उपधातू सारी।
यथायोग्य स्थिर हो फिर भी, दें भव बीमारी॥
यथा व्यवस्थित स्थिर तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

जिससे धातु उपधातु सब, अस्त-व्यस्त रहतीं।
तो कैसे फिर स्वस्थ आत्म हो, जिनवाणी कहती॥
अस्त व्यस्त अस्थिर को तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अस्थिर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

जिससे तन के सारे अवयव, सपन सलौने हों।
पर सिद्धों सम सुंदर बनने, कर्म घिनौने हों॥
शुभ सुंदर शुभ नामकर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

जिस कर्मोदय से तन के सब, सुंदर अंश नहीं।
अशुभ कर्म से सिद्धचक्र का, मिलता वंश नहीं॥
शुभ सुंदर ना वही अशुभ तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अशुभ-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

क्षत विक्षत तन कैसा भी हो, फिर भी जग चाहे।
फिर भी आतम के रसिया को, कभी नहीं भाये॥
सबका प्यारा सुभग नाम तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सुभग-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

जिससे रूप रंग हो सुंदर, फिर भी प्रीत नहीं।
लेकिन ज्ञानी इसे साधकर, निज के मीत सही॥
कोई न चाहे वो दुर्भग तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्भग-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

जिससे हो आवाज सुरीली, कंठ कोकिला सी।
सुस्वर पर सब जग डोले पर, संत न अभिलाषी॥
कोयल सा स्वर सुस्वर तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्वर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

जिससे अप्रिय कटु स्वर मिलते, गर्दभ के जैसे।
लेकिन निज स्वर के प्रेमी को, मुश्किल न इससे॥
अप्रिय कटु स्वर दुस्वर तज कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दुस्वर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

जिससे तन सुंदर-सा चमके, वह आदेय रहा।
तन पर लट्टू होने वाला, कब आदर्श कहा ?
चमकदार आदेय त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं आदेय-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

जिससे रूखी-सूखी काया, कान्तिहीन होती।
उन्हें फर्क क्या इससे जो जन, पाते निज मोती॥
रूखा सूखा अनादेय तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अनादेय-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

जिससे गुण हों या न हों पर, यश बढ़ता जाए।
यश की चाहत में यह दुनियाँ, फँसती ही जाए॥
सुयश प्रदायक यशकीर्ति तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं यशकीर्ति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

जिससे गुण पाकर भी प्राणी, निंदा पाते हैं।
अयशकीर्ति से अपमानित हों, मर तक जाते हैं॥
अयश प्रदायक अयशकीर्ति तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अयशकीर्ति-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

जिससे यथास्थान प्रमाण में, तन में अंग बने।
नामकर्म निर्माण वही है, जो निर्वाण न दे॥
तन रचना निर्माण त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं निर्माण-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

जिनशासन का तीर्थ प्रवर्तन, हो जिसके द्वारा।
समवसरण कल्याणक धन ने, भव्य जगत् तारा॥
धर्म धुरी तीर्थंकर पद तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर-नामकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

जिसके कारण ऊँच-नीच कुल, संसारी पाते।
फँसे गोत्र में होतृ करें क्या, बंधन ही पाते॥
कुम्भकार सम गोत्र कर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं गोत्रकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

जिससे जिनदीक्षा के लायक, मान्य वंश मिलता।
करपात्री पगयात्री बनकर, निज आतम खिलता॥
दीक्षा दायक उच्च गोत्र तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं उच्च-गोत्रकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

जिससे लोकनिंद्य कुल में तो, जीव जन्म पाते।
शिक्षा दीक्षा धर न सके सो, दुख ही दुख पाते॥
अव्रत दायक नीच गोत्र तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं नीच-गोत्रकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५०॥

जिससे विघ्न उपस्थित होते, अच्छे कर्मों में।
हमें चाहकर ना रुकने दे, सम्यक् धर्मों में॥
भंडारी सम अन्तराय तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

जिसके कारण द्रव्य दान में, आती बाधायें।
दानान्तराय कर्म के कारण, दान न दे पायें॥
दान न देने दे सो यह तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं दानान्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

जिसके कारण द्रव्य लाभ को, हम ना कर पाते।
लाभांतराय कर्म के कारण, खाली रह जाते॥
लाभ न होने दे सो यह तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं लाभान्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

जिसके कारण जग भोगों में, हो अवरोध सदा।
भोगांतराय कर्म के कारण, बढ़ती व्यथा कथा॥
भोग न करने दे सो यह तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भोगान्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

बार-बार जो भोगा जाए, वह उपभोग रहा।
उपभोग अंतराय के कारण, यही वियोग सहा॥
उपभोग न करने दे सो यह तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपभोगान्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥

जिसके कारण निज आतमबल, प्रकट न हो पाए।
वीर्यान्तराय कर्म के कारण, कुछ भी ना भाए॥
वीर्य शक्ति ना दे सो यह तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यान्तरायकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥

ज्ञानावरणादिक आठों तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५७॥

एक शतक अड़तालीस विधि तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकशताष्टचत्वारिंशत्-कर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५८॥

त्याग सभी संख्यात कर्म को, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संख्यात-कर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५९॥

असंख्यात विध कर्म त्याग कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात-कर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६०॥

शक्त्यांश से अनंत कर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतकर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६१॥

सूक्ष्म अनंतानंत कर्म तज, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंत-कर्मरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६२॥

हैं आनंद स्वरूपी दाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६३॥

हैं आनंद धर्म रूपी प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दधर्मरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६४॥

परमानन्द धर्म रूपी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दधर्मरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६५॥

रागद्वेष बिन साम्य स्वभावी, सिद्ध जिना आहा।
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६६॥

हर्ष विषाद बिन साम्य स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६७॥

पूज्य अनंतगुणी आतम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगुणात्मक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६८॥

श्री अनंतगुण स्वरूप स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६९॥

जिनवर अनंत धर्मस्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधर्मस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७०॥

रहें एक समस्वभाव में प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समस्वभाव सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७१॥

इष्टानिष्ट रहित संतुष्टी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संतुष्ट सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७२॥

पर सुख-दुख ना समसंतोषी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समसंतोषी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७३॥

रहें स्वयं में साम्य धारकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७४॥

कृत्याकृत्य रहित समता धर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यकृत्याकृत्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७५॥

अन्य नहीं निज निज की शरणा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्यशरण सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७६॥

अन्य नहीं निज निज गुण धारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७७॥

अन्य नहीं निज निज के धर्मी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्यधर्मी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७८॥

अन्य नहीं निज निज प्रमाण में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परिमाणविमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७९॥

ब्रह्मस्वरूपी परमातम प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८०॥

ब्रह्म गुणी गुण हमें दान दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८१॥

ब्रह्म चेतना धारी भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचेतनाधारी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८२॥

शुद्ध-शुद्ध परिणामी प्यारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धपरिणामी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८३॥

शुद्धस्वभावी विजित विभावी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८४॥

सकल अशुद्धि रहित महेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्धिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८५॥

शुद्धि-अशुद्धि रहित महेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धि-अशुद्धिरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८६॥

अनंतदृग अवलोकी स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदृग-अवलोकी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८७॥

अनंतदृग स्वभाव के धारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदृगस्वभाव सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८८॥

अनंतदृग आनंद विहारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदृगानंदस्वभाव सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८९॥

अनंतदृग उत्पाद हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदृगुत्पादक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९०॥

अनंतध्रुव ध्रुव रूप हुए हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतध्रुव सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९१॥

अनंत-अव्यय अव्यय धन हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-अव्यय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९२॥

अनंतनिलय के धाम हुए हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतनिलय सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९३॥

अनंतकाल तक सिद्ध रहेंगे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतकाल सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९४॥

अनंतआकारी जिनवर हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंताकार सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९५॥

अनंतभावों को धरते हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतभावधारक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९६॥

चिन्मय स्वरूप के स्वामी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिन्मयस्वरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९७॥

चिद्रूपी नित रहे अरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिद्रूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९८॥

हैं चिद्रूप धरम अधिकारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिद्रूपधर्म सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९९॥

हैं चिद्रूप स्वरूपी भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिद्रूपस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २००॥

स्वात्मोपलब्धि रस को चखते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मोपलब्धिरत सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०१॥

स्वानुभूति में मग्न सदा हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानुभूतिरत सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०२॥

परमामृत के रसिया अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमामृतरत सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०३॥

परमामृत में तुष्ट रहें नित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमामृततुष्ट सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०४॥

परमप्रीति के परम धाम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमप्रीत सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०५॥

नाथ! परमवल्लभ भावी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमवल्लभभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०६॥

अद्‌भुत हैं अव्यक्त स्वभावी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अव्यक्तस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०७॥

सदा रहें एकत्व स्वभावी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकत्वस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०८॥

निज में निज एकत्व स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकत्वस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०९॥

पर त्यागी एकत्व गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१०॥

नित्य अकेले द्वित्व विनाशी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं द्वैतभावविनाशी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २११॥

शाश्वत प्रकाशरूपी हैं प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतप्रकाशी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१२॥

हैं शाश्वत उद्योतरूप प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतोद्योतरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१३॥

शाश्वत अमृतचंदारूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतामृतचंद्ररूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१४॥

शाश्वत अमृतमूरतरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वतामृतमूर्तरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१५॥

दिखें नहीं सो परमसूक्ष्म हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमसूक्ष्म सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१६॥

शरण सूक्ष्म अवकाशरूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मावकाशरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१७॥

परम सूक्ष्म अवकाशरूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमसूक्ष्मावकाशरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१८॥

अनंत सूक्ष्मगुणधारी भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मगुणधारी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१९॥

परम मुक्तस्वरूप भगवन् हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परममुक्तस्वरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२०॥

अवधिरहित सुख भोग रहे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरवधिसुखी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२१॥

अवधिरहित गुण पा बैठे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरवधिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२२॥

निरवधि स्वरूप के स्वामी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरवधिस्वरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२३॥

अतुलज्ञान के भंडारी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलज्ञानी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२४॥

अतुलसुखों के भोक्ता स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलसुखी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२५॥

अतुलभाव के स्वामी दाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२६॥

अतुलगुणों के महारत्न हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२७॥

अतुलप्रकाशी अंधविनाशी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलप्रकाशी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२८॥

अतुलनिवासी आश्रयदात्री, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलनिवासी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२९॥

अचलगुणी निष्कम्प रहे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३०॥

अचल स्वभावी डिग ना सकते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३१॥

अचल स्वरूपी विचलित ना हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३२॥

निरालम्ब हैं नहीं पराश्रित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरालम्बी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३३॥

आलम्बन बिन रहते स्वाश्रित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आलम्बनरहित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३४॥

हैं निर्लेप आवरण के बिन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३५॥

कर्म कलंक न निष्कलंक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३६॥

नित्य-नित्य आलोक रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नित्यालोकरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३७॥

स्वारथ तज के आतम रत हैं, सिद्ध जिना आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मरत सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३८॥

स्वरूप गुप्त स्वयं में खोएं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपगुप्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३९॥

जो है सो है शुद्ध द्रव्य हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धद्रव्य सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४०॥

सार-सार सो असंसार हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं असंसाररूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४१॥

पर के ना; निज के स्वानंदी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानंदी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४२॥

अन्य नहीं स्वानंद भाव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानंदभाव सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४३॥

धन्य-धन्य स्वानंद स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानंदस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४४॥

शुभ सुंदर स्वानंद गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४५॥

स्वानंदी संतोषी सुखिया, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वानंदसंतोषी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४६॥

शुद्धभाव पर्याय स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धभावपर्यायस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४७॥

स्वच्छंद न पर स्वतंत्रधर्मी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वतंत्रधर्मी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४८॥

आत्म स्वभावी पर से भिन्नं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मस्वभावी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४९॥

परम आत्म चित परिणामी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमचित्परिणामी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५०॥

गुण चिद्रूपी धर्मधुरंधर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिद्रूपधर्मी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५१॥

परम-परम स्नातक धर्मी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमस्नातकधर्मी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५२॥

रहें सर्व अवलोक स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वावलोकी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५३॥

हैं लोकाग्र शिखर पर स्थित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकाग्रस्थित सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५४॥

लोकालोक व्याप्त रहते जो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकव्यापक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५५॥

रत्नत्रय दस धर्म युक्त हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय-दशधर्मयुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५६॥

पूर्णार्घ्य

(मोदक)

जो जग के हर रूप मनोहर, जो कुछ है जग की बलिहारी।
वे सब हैं बस कर्म कथा पर, सिद्ध कथा इससे नित न्यारी॥
कर्म विभाव विरूप तजे प्रभु, सिद्ध स्वरूप हुए गुण धारी।
कर्म सभी हम भी करने जय, रोज करें जयघोष तुम्हारी॥
हे प्रभु! दो हमको वह साहस, जो हम धैर्य धरें तुम जैसे।
संकट रोग हरें सब आपद, सम्पद सौख्य मिले तुम जैसे॥
'सुव्रत' की बस अर्ज यही प्रभु, कर्म हरो जग के तुम सारे।
विश्व बने यह मोक्ष महालय, जीव चखे निज आतम न्यारे॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

कर्म रहित परमेश हैं, सिद्धचक्र के धाम।
दो सौ छप्पन गुण कहें, जयमाला के नाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! सिद्धचक्र की, जय हो! जय हो! भगवन् की।
कर्मचक्र के जयी जिनों की, जय हो! जय हो! चेतन की॥

देख-देख कर्मों की दुनियाँ, आकुल-व्याकुल आप हुए।
ज्यों ही रत्नत्रय धारे तो, सारे कर्म समाप्त हुए ॥१॥
कर्मों की है लीला न्यारी, खेद खिन्न सब को करते।
सारे जग को नाँच नचाते, आत्म शान्ति सब की हरते॥
अतः मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे।
इसी लड़ाई से कर्मों के, सैनिक किले उजड़ते देखे ॥२॥
मुक्त बंध से होते देखे, भव फल भी झड़ते देखे।
बाधाओं से विचलित ना हों, निज पथ पर बढ़ते देखे॥
चिदानन्द चैतन्य गुणों से, शुद्धातम मड़ते देखे।
विद्या का निज गजरथ लेकर, मोक्ष डगर चढ़ते देखे ॥३॥
काया के जो भी स्पर्श हैं, रसना के जो स्वाद रहे।
नासा की जो गंध सुगंधी, आँखों के जो दृश्य रहे॥
कानों के जो शब्द रहे हैं, मन के जो भी भाव रहे।
त्रस स्थावर चारों गतियाँ, तीनों ही जो जन्म रहे ॥४॥
जो चौरासी लाख योनियाँ, पंचपरावर्तन जो हैं।
पहले से चौदह गुणस्थान तक, संसारी जीवन जो हैं॥
दुनियाँ उन्हें कहे कुछ भी पर, जिन सिद्धांत यही कहते।
कर्मों के हैं युद्ध सभी ये, सब को लड़ने ही पड़ते ॥५॥
तरह तरह से कर्म सताते, तरह तरह के खेल करें।
पल में राजा रंक बनाते, पल में छोड़ें जेल करें॥
भोग रोग संयोग योग सब, बस कर्मों की माया है।
जिसने कर्म युद्ध को जीता, हर ली छाया काया है ॥६॥
चिदानन्द चैतन्य स्वरूपी, शाश्वत शुद्धातम पाये।

सिद्ध बने सो सिद्धचक्र के, गुण गाने हम भी आये॥
भक्ति अर्चना विधान करके, अब यह लक्ष्य भक्त का है।
कर्मों के सब युद्ध जीत लें, यदि सान्निध्य आपका है ॥७॥
इन कर्मों के युद्ध अकेले, हम तो लड़ ना पायेंगे।
इनके खेलों में फँसकर हम, कभी न जय कर पायेंगे॥
मोक्ष नगर में आप रहो हम, कर्मों से दुख पायेंगे।
तो फिर चिदानन्द हम कैसे, आप सरीखा पायेंगे ॥८॥
अतः दयालु दया करो कुछ, ज्ञानामृत बरसाओ ना।
सावन भादों की वर्षा सम, कर्म कीच धुलवाओ ना॥
सिद्धचक्र सम रूप हमारा, अपने सम शृंगार करो।
'सुव्रत' का हे! मुक्ति वल्लभा, जल्दी से उद्धार करो ॥९॥

(सोरठा)

हरे कर्म साम्राज्य, सूक्ष्म निरंजन नित्य हो।
सिद्धचक्र की आज, करें अर्चना भक्त हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पञ्चाशदधिकद्विशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

सप्तम पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिक-पंचशतगुणी श्रीसिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

ऊर्ध्व स्वाभावी जा वसे, ऊर्ध्व लोक के धाम।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मडलस्योपरि पुष्पांजलिं...)

(लय—देख तेरे संसार की....)

सिद्धचक्र को करके नमोऽस्तु, करते ध्यान विधान।
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्-२
पाँच शतक बारह गुण ध्याकर, हम करते गुणगान। कि स्वामी...
श्रद्धा जल की सुनकर वाणी, सिद्धालय का पथ दो स्वामी।
नीर यहाँ का वहाँ न जाये, द्रव्य वहाँ का यहाँ न आये॥
सो भावों ने सीमा लाँघी, हमें क्षमा दो दान। कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

बचपन से पचपन तो आया, लेकिन सिद्धचक्र ना भाया।
सिद्धचक्र बिन क्या हो सिद्धि, ना संसार ताप की शान्ति॥
सिद्धचक्र निर्विघ्न करें हम, दो ऐसा वरदान।
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्-२

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

नश्वर को अविनश्वर माना, अतः यातना सहते नाना।
बाधाओं ने पथ को मोड़ा, विचलित होकर तुमको छोड़ा॥
तुम बिन हम क्या अतः थाम लो, दो अक्षय विश्राम॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सिद्ध बगीचा नहीं सुहाये, मन को भोग मरुस्थल भाये।
सो काँटो में फँसकर मरता, वीतराग उपवन ना खिलता॥
ब्रह्मचर्य के पुष्पों वाला, दो आतम बागान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के व्यंजन चाहे, लेकिन परमामृत न सुहाये।
क्षुधा रोग बढ़ता ही जाये, सिद्ध वैद्य बिन क्या नश पाये॥
सिद्धौषध दे रोग मिटा के, स्वस्थ करो तन प्राण। कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

ज्ञान नेत्र बिन जड़ को जाना, पुण्य पाप को त्याज हि माना।
पाया मिथ्या पाप कुआ सो, नेत्रोन्मीलन नहीं हुआ हो॥
चित अंजन से करो निरंजन, हर लो सब अज्ञान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जड़ कर्मों के शासन ऐसे, कमठ करे दु:शासन जैसे।
सहे चेतना पारस जैसे, हमें बना दो सिद्धों जैसे॥
कर्म राज का स्वाहा करने, दो जिनशासन ध्यान॥
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्-२

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जिसके कारण पाप कमायें, उसे भोग हम भले न पायें।
लेकिन फल तो चख ही लीजे, बुरे कर्म के बुरे नतीजे॥
कर्म कर्मफल हर कर पायें, सिद्ध चेतना ज्ञान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

कभी रिझाने कभी दिखाने, कभी-कभी लौकिक सुख पाने।
भक्ति समर्पण किये अर्चना, तभी अधूरी रही साधना॥
अर्घ भेंट कर यही प्रार्थना, मिले भेद विज्ञान॥ कि स्वामी...

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

भव-भव में हम घूम चुके हैं, भव के सुख-दुख भोग चुके हैं।
क्षण भंगुर बिन कुछ ना पाए, कृपा करो कुछ शान्ति आये॥
विश्व शान्ति से आत्म शान्ति हो, कर दो अब कल्याण॥
कि स्वामी सिद्धचक्र भगवान्-२

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्ध चक्र में पाँच सौ बारह, गुण पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

घाति कर्म के पूर्ण विजेता, नेता शिवपथ के।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, रसिया निज रस के॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः भज के, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत् सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

केवलज्ञान हुआ जैसे ही, समवसरण पाया।
दिव्य देशना तत्त्व ज्ञान दे, आतम झलकाया॥
गए मोक्ष मुक्तिवधू पाने, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्मोक्षगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

जो छ्यालीस मूलगुण धारें, लक्ष्मी के स्वामी।
णमोकार में पूज्य अग्रणी, शुद्धातम धामी॥
मुक्तिकंत अर्हंत महंता, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्मूलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

अरिहंतों का जो स्वरूप है, वो तो संसारी।
मोक्ष सुंदरी के प्रत्याशी, पहले अधिकारी॥
पुण्यफला अर्हंता जिनवर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-स्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

जन्म समय के दस अतिशय पा, सार्थक जन्म किया।
जन्म-जन्म हम ऋणी रहेंगे, सार्थक धर्म दिया॥
सार्थक जन्म करें हम प्रभु सम, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-जन्मातिशयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

श्रम करने पर भी ना आये, जिन्हें पसीना भी।
अतिशयकारी जिन पुरुषों बिन, अब ना जीना जी॥
अतिशय कर दो यों जिसमें हम, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-प्रसेवमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

खाया पिया सभी पच जाता, हो मल मूत्र नहीं।
जिनकी पूजा में हम झूमें, मुक्ति सूत्र यही॥
ऐसा भोजन दो हमको हम, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मलमूत्रमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

नाप तौल में सुन्दर प्यारे, तन आकार रहे।
समचतुरस्त्र देह नैया से, भव के पार गये॥
आतम का आकार नाथ दो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-समचतुरस्त्रसंस्थानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

उत्तम संहनन पाकर शत्रु, कर्मों को जीते।
दीन हीन के प्राण बचाकर, आतम रस पीते॥
करें वज्र पौरुष हम तुम सम, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-उत्तमसंहननगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

सुरभित तन पा सुरभित आतम, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सुरभितदेहगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

मधुर वचन से मोक्ष भवन पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मधुरवचनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

विश्व प्रेम कर श्वेत रुधिर पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-श्वेतरुधिरगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

एक हजार शुभ लक्षण पाके, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सहस्त्रलक्षणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

सुन्दर रूप सलोना पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सुंदररूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

शारीरिक अनंतबल पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतबलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

कर घातिक्षय पा दश अतिशय, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-केवलज्ञानातिशयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

सौ-सौ योजन सुभिक्ष करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सुभिक्षतागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

भू से ऊपर नभ में चलकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-आकाशगमनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

एक मुखी के दिखे चार मुख, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-चतुर्मुखगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

कवलाहार तजे निज रस पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-कवलाहारमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

हर विद्या के ईश्वर बन के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सर्वविद्येश्वरगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

तन की छाया माया तज के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-देहच्छायामुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

बिना बढ़े नख केश त्याग के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-नखकेशवृद्धिमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

पलक झपकना तज अपलक हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अपलकगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

हिंसा तज के दया भाव धर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-हिंसामुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

वहाँ नहीं उपसर्ग जहाँ प्रभु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-उपसर्गमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

सुरकृत चौदह अतिशय पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-देवकृतातिशयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

अर्द्धमागधी भाषा कह कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अर्द्धमागधीभाषागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

सब जीवों को मैत्री देकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मैत्रीगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

सभी दिशाओं को निर्मल कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-निर्मलदिशागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

नभ मण्डल को निर्मल कर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-निर्मलआकाशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

हुए फलित फल फूल सर्व ऋतु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सर्वऋतुफलितगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

दर्पण सम भू मण्डल होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-दर्पणसमभूमण्डलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

नभ में जय-जय ध्वनि गुंजित हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-जयध्वनिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

स्वर्ण कमल की रचना पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-स्वर्णकमलरचनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

मंद सुगन्धित पवन बही फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सुगंधितपवनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

रिमझिम सुरभित जल वर्षा हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-गंधोदकवृष्टिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

कंटक कंकड़ बिन भू तल हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-निष्कंटकभूगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

प्रभु पद में आनंद बरसता, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-जीवानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३९॥

धर्मचक्र हो अग्र गमन में, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-धर्मचक्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

प्रभु चौंतीस प्राप्त कर अतिशय, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-चतुश्त्रिंशत्-अतिशयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

पा अरहंत अनंत चतुष्टय, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतचतुष्टयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

केवलज्ञानी अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

केवलदर्शन पाकर अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतदर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

केवलवीर्य प्राप्त कर अतिशय, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतवीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

मोह नशा क्षायिकसम्यक् पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतसुखसम्यक्त्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

केवल गुण को पा के अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-केवलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

केवल स्वरूप पा के अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-केवलस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

आठों प्रातिहार्य को पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अष्टप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

तीन छत्र की शोभा पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-छत्रत्रयप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

चौसठ चंवर मनोहर पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-चतुषष्ठिचंवरप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

भामंडल से निज झलका के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-भामण्डलप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

बजे दुन्दुभि धर्मराज फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-दुंदुभिप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

शोक रहित अशोकतरु पा के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अशोकतरुप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥
दिव्य वचन सम पुष्पवृष्टि पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥
आत्म प्रदायक दिव्य ध्वनि पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-दिव्यध्वनिप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥
रत्न जड़ित सिंहासन पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सिंहासनप्रातिहार्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥
श्री अर्हन्त द्योत निज की पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-द्योतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥
श्री अर्हन्त पंचकल्याणक पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-जातगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥
श्री अर्हन्त हुए चिद्रूपी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-चिद्रूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥
श्री अर्हन्त ज्ञानघन होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-ज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥
श्री अर्हन्त दिव्य दर्शन पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-दर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥
श्री अर्हन्त वीर्य गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-वीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥
श्री अर्हन्त सम्यक्त्व सुखी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सम्यक्त्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥
श्री अरिहन्त शौच गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-शौचगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥
श्री अरिहन्त द्वादशांग पा, सिद्ध बने आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-द्वादशांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

मतिज्ञानी अर्हत् स्वामी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मतिज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

श्रुत ज्ञानी अर्हत् स्वामी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-श्रुतज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

अवधिज्ञानी अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अवधिज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

मनःपर्ययज्ञानी अर्हत् हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मनःपर्ययज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

पहला मंगल अर्हत् मंगल, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मंगलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

मंगल दर्शन पाकर अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मंगलदर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

मंगल ज्ञान प्राप्त कर अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मंगलज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

मंगल वीर्य प्राप्त कर अर्हत्, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मंगलवीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

लोकोत्तम हो अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-लोकोत्तमगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

लोकोत्तम केवलज्ञानी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-लोकोत्तमज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

लोकोत्तम केवलदर्शी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-लोकोत्तमदर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

लोकोत्तम केवलधर्मी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-लोकोत्तमधर्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

श्री अर्हन्त शरण गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-शरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

ज्ञानशरण पा अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-ज्ञानशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

दर्शनशरण पा अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-दर्शनशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

वीर्यशरण पा अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-वीर्यशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

श्री अर्हन्त सम्यक्त्व शरण पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सम्यक्त्वशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

मंगल उत्तम शरण प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-मंगलोत्तमशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

त्रय ज्ञानी हो अर्हत् स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-त्रिज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

श्री अर्हन्त अनंतगुणी हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-अनंतगुणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

श्री अर्हन्त ध्येय निज का पा , सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-ध्येयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

श्री अर्हन्त ज्ञान आनंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-ज्ञानानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

श्री अर्हन्त आत्म गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-आत्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

श्री अर्हन्त चिदानंद पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-चिदानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

श्री अर्हन्त हुए परमातम, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-परमात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

श्री अर्हन्त गुप्त स्वरूप पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-गुप्तस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

राग विजेता वीतराग हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-वीतरागगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

प्रथम बने सर्वज्ञ बाद में, सिद्ध बने आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सर्वज्ञगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९४॥

बने हितैषी तत्त्वोपदेशी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-हितोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-वीतरागसर्वज्ञहितैषीगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

गुण पर्याय द्रव्य के जानें, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-द्रव्यपर्यायगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

व्यय उत्पाद ध्रौव्य गुण ज्ञाता, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-उत्पादव्ययध्रौव्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

समवसरण के स्वामी होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-समवसरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

अंतरंग बहिरंग रमा पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-उभयलक्ष्मीगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

सिद्ध-सिद्ध बस सिद्ध-सिद्ध हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

दुख हर सुख कर सिद्ध स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

जगत पूज्य सर्वोच्च गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोच्च सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

स्वपर प्रकाशी निज रसज्ञानी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

दर्शन ना दें दर्शनधारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

पूज्य शुद्ध सम्यक्त्व धारते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

अतुल अनंता वीर्य धारते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

मेरु सम पद अचल धारते , सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

पाप विभंजन नित्य निरंजन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरंजन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

हैं संख्यात भेद के द्वारा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संख्यात-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

भक्त भेद से असंख्यात हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यात-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

संचय विधि से अनंत होते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

हुए अनंतानंत त्रिकाली, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

जल साधन से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं थल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

नभ मण्डल से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

नय साधन से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

संयम धरकर मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संयम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

जिनचरित्र से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चारित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

साधारण से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सामान्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

तीर्थंकर बन मोक्ष सिधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

बीच-बीच में अंतरित हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अंतर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

तीर्थंकर बिन मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं केवली-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२३॥

सवा पाँच सौ बने धनुष से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उत्कृष्ट-अवगाहन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

मध्यम अवगाहन से बनते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मध्यम-अवगाहन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

साढ़े तीन हाथ से बनते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जघन्य-अवगाहन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

तिर्यक् लोक से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तिर्यक्लोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

षट् कालों से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं षट्काल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

सह उपसर्ग मोक्ष जा पहुँचे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गजयी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

बिन उपसर्ग मोक्ष जा पहुँचे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनुपसर्ग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

अंतरद्वीपज मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अंतरद्वीप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

सागर जल से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदधि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

स्थित आसन से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्थित-आसन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

पद्मासन से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मासन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

पुरुष वेद से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुंवेद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

स्त्री वेद से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्त्रीवेद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

क्लीब वेद से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं क्लीबवेद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

क्षपकश्रेणी से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं क्षपकश्रेणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

एक समय से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकसमय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

दो समयों से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं द्विसमय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

तीन समय से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिसमय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

तीन काल से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

तीन लोक से मोक्ष पधारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

मंगल मंगल सिद्धा मंगल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

मंगल मंगल सिद्धा दर्शन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलदर्शन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

मंगल मंगल सिद्ध वीर्य हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

हैं सम्यक्त्व रूप मंगल जो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलसम्यक्त्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

मंगल मंगल सूक्ष्मरूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलसूक्ष्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

मंगल मंगल अवगाहन मय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगल-अवगाहन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

मंगल मंगल अगुरुलघु हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगल-अगुरुलघु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५०॥

मंगल मंगल अव्याबाधी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंगल-अव्याबाध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

मंगल मंगल अष्ट गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

मंगल मंगल अष्ट स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

मंगल मंगल अष्ट प्रकाशी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टप्रकाशी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

मंगल मंगल धर्म स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मस्वरूपी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥

सर्व श्रेष्ठ लोकोत्तम अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥

लोकोत्तम ज्ञानी हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमज्ञानी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५७॥

लोकोत्तम दर्शन के धारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लाकोत्तमदर्शी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५८॥

लोकोत्तम हैं वीर्य विशेषा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमवीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५९॥

जय-जय 'धण्णा ते भयवंता', सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धन्यशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६०॥

सिद्ध स्वरूप शरण हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६१॥

पूज्य सिद्ध दर्शन हैं शरणा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥

सिद्ध ज्ञान हैं शरण प्रदाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६३॥

सिद्ध वीर्य हैं शरणा दात्री, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६४॥

पूज्य सिद्ध सम्यक्त्व शरण हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६५॥

सिद्ध अनंत शरण हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६६॥

सिद्ध अनंतानंत शरण हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६७॥

तीन काल में शरण विधायी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६८॥

तीन लोक में शरण छाँव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६९॥

हैं पाणिक्क मदिक्कंता प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जीवत्वशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७०॥

सिद्ध ध्रौव्य गुण रूप शरण, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ध्रौव्यशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७१॥

सिद्ध शरण उत्पाद रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७२॥

सिद्ध साम्य गुण शरण रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साम्यगुणशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७३॥

सिद्ध स्वच्छ गुण शरण रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वच्छशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७४॥

सिद्ध स्वस्थ गुण शरण रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७५॥

सिद्ध समाधि गुण शरणा हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समाधिशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७६॥

सिद्ध व्यक्त गुण शरण रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७७॥

सिद्ध व्यक्त अव्यक्त शरण हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताव्यक्तशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७८॥

पूज्य सिद्ध गुण स्वरूप अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गुणस्वरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७९॥

पूज्य सिद्ध परमात्म स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमात्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८०॥

सिद्ध अखण्ड स्वरूप रहे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अखण्ड-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८१॥

सिद्ध स्वरूप चिदानन्द हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिदानन्द-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८२॥

पूज्य सिद्ध सहजानन्दी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सहजानन्द-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८३॥

पूज्य सिद्ध अच्छेद रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८४॥

स्वामी सिद्ध अभेद्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८५॥

शुभ सुंदर अनुपम गुण धारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनुपम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८६॥

अमृत जैसा तत्त्व धारते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८७॥

पूज्य सिद्ध श्रुत पूरा पाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रुत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८८॥

सिद्ध सिद्ध केवल केवल हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं केवल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८९॥

निराकार साकार स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निराकारसाकार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९०॥

निरालम्ब बस निरालम्ब हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरालम्ब-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९१॥

निष्कलंक बस निष्कलंक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९२॥

सर्व गुणी सम्पन्न आत्म हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मसम्पन्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९३॥

तेज ओज मय तैजस रूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तैजस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९४॥

सिद्ध गर्भ आवास रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धगर्भवास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९५॥

हैं संतुष्ट लक्ष्मी के धारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीसंतृप्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९६॥

अंतरंग बस अंतरंग हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं अंतरंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९७॥

सार सार रस के रसिया हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साररसिक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९८॥

सिद्ध शिखर मण्डन रूपी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं शिखरमण्डित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९९॥

त्रय लोकाग्र धाम पर स्थित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं लोकाग्रस्थित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २००॥

अरिहंतों सिद्धों के अनुचर, गुरु आचार्य रहें।
शिक्षा दीक्षा दें जिनमार्गी, आतम कार्य करें॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०१॥

नख से शिख तक मूलगुणों की, मणियों से सोहें।
आचार्यों के योग्य गुणों से, मुक्तिवधू मोहें॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-गुण सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०२॥

नग्न दिगम्बर पिच्छी कमण्डल, बाह्य रूप भाये।
ध्यान गुप्ति में यों लगता ज्यों, सिद्ध यहाँ आये॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-नग्नस्वरूप सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०३॥

जो छत्तीस मूलगुणधारी, चार संघ स्वामी।
श्रमणों के अध्यक्ष सिद्ध हैं, सुन लो आगामी॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मूलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०४॥

दस धर्मों की रेल चलाकर, मोक्षगमन करते।
भव्यों को यात्रा करवाने, धर्मयत्न करते॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-दशधर्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०५॥

मिलें क्रोध के निमित्त लेकिन, क्रोध नहीं करते।
उत्तम क्षमा धारकर स्वामी, आत्मशोध करते॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-क्षमागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०६॥

ज्ञानी ध्यानी होकर के भी, मान विजेता जो।
उत्तम मार्दव धर्म धारकर, मुक्ती नेता वो॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मार्दवगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०७॥

माया के त्यागी की मूरत, लगती है भोली।
आर्जव धर्मी को खुद मुक्ति, ले आई डोली॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-आर्जवगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०८॥

पर का लोभ त्यागकर जिनको, आतम लोभ हुआ।
फिर कैसे निर्लोभी ऐसा, हम को क्षोभ हुआ॥
उन आचार्यों को नमोस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-शौचगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०९॥

उत्तमसत्य धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सत्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१०॥

उत्तमसंयम धारी सूरी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-संयमगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२११॥

उत्तम तप आचार्य धारकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१२॥

श्री आचार्य त्याग उत्तम धर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्यागगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१३॥

उत्तम आकिंचन धर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-आकिंचन्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१४॥

उत्तम ब्रह्मचर्य धर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ब्रह्मचर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१५॥

पंचाचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-पंचाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१६॥

दर्शनाचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-दर्शनाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१७॥

ज्ञानाचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ज्ञानाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१८॥

चारित्राचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-चारित्राचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१९॥

तपाचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२०॥

वीर्याचार धारकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वीर्याचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२१॥

बारह तप आचार्य धारकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-द्वादश-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२२॥

धार बाह्य आचार्य तपों को, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-बाह्य-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२३॥

अनशन कर निज में रम सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-अनशन-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२४॥

ऊनोदर कर पा गुरु शिवपुर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-अवमौदर्य-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२५॥
कठिन नियममय भोजन कर गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वृत्तिपरिसंख्यान-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२६॥
षट्रस तज निज रस लें गुरुवर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-रसपरित्याग-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२७॥
गुरु एकान्त शयन आसन कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-विविक्तशैय्यासन-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२८॥
कायक्लेश कर सूरि मुक्त हों, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-कायक्लेश-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२९॥
अंतरंग तप तपकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-अंतरंग-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३०॥
प्रायश्चित्त कराकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-प्रायश्चित्त-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३१॥
आत्म विनय को विनय करें गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-विनय-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३२॥
वैय्यावृत्त करें गुरु सबकी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वैय्यावृत्त-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३३॥
गुरु स्वाध्याय तत्त्व का करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-स्वाध्याय-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३४॥
विभाव तज व्युत्सर्ग करें गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-व्युत्सर्ग-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३५॥
आत्मध्यान आचार्य करें फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ध्यान-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३६॥
षट् आवश्यक करके सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-षडावश्यकगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३७॥

समता धर गुरु सामायिक कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सामायिकगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३८॥

जिन स्तुति कर मुक्ति वर गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-स्तुतिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३९॥

करके जिनेन्द्र वन्दना सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वंदनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४०॥

प्रत्याख्यान दोष का कर गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-प्रत्याख्यानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४१॥

प्रतिक्रमण पापों का कर गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-प्रतिक्रमणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४२॥

कायोत्सर्ग ठान कर गुरुवर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-कायोत्सर्गगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४३॥

तीन गुप्ति से वरें मुक्ति गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रयगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४४॥

महामना गुरु मनोगुप्ति से, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मनोगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४५॥

वचनगुप्ति से मौन धार गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वचनगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४६॥

कायगुप्ति से ध्याय आत्म गुरु, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-कायगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४७॥

श्री आचार्य शरण तप पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४८॥

धर्म शरण आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-धर्मशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४९॥

ध्यान शरण आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ध्यानशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५०॥

ऋद्धि शरण आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ऋद्धिशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५१॥
तीन लोक आचार्य शरण पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रैलोक्यशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५२॥
तीन काल आचार्य शरण पा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रिकालशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५३॥
त्रय जग मंगल सूरि करके, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रिजगन्मंगलशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५४॥
त्रिलोक मंगल शरण सूरि दे, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रिलोकमंगलशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५५॥
त्रिजग मंगल उत्तम सूरि हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-त्रिजगन्मंगलोत्तमशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५६॥
ऋद्धिमंडित सूरि शरण हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ऋद्धिशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५७॥
ऋद्धिमंगल सूरि शरण हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ऋद्धिमंगलशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५८॥
श्री आचार्य मंत्र स्वरूप हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मंत्रस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५९॥
श्री आचार्य मंत्र गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मंत्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६०॥
श्री आचार्य धर्म मंत्र दे, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-धर्ममंत्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६१॥
गुण चैतन्य स्वरूपी सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-चैतन्यधर्मस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६२॥
चिदानंद आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-चिदानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६३॥

श्री आचार्य सहज आनंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सहजानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६४॥

श्री आचार्य ज्ञान आनंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ज्ञानानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६५॥

श्री आचार्य तपो आनंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६६॥

श्री आचार्य गुणानंदी तप, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-गुणानंदतपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६७॥

श्री आचार्य तपोगुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६८॥

ज्ञान हंस आचार्य बने फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ज्ञानहंसगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६९॥

श्री आचार्य हंस गुण पाकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-हंसगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७०॥

मंत्र गुणानंदी सूरीश्वर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मंत्रगुणानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७१॥

सद्ध्यानानंदी हो सूरी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सद्ध्यानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७२॥

श्री आचार्य चन्द्र अमृतसम, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-अमृतचन्द्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७३॥

श्री आचार्य सुधाचंदा सम, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सुधाचन्द्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७४॥

श्री आचार्य सुधा के जैसे, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सुधाघनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७५॥

सिद्धोऽहं आचार्य द्रव्य हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-द्रव्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७६॥

सिद्धोऽहं आचार्य गुणी हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-गुणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७७॥

सिद्धोऽहं गुण पर्यय सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-पर्यायगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७८॥

श्री आचार्य गुणी उत्पादी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-उत्पादगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७९॥

श्री आचार्य गुणोत्पादीव्यय, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-व्ययगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ २८०॥

श्री आचार्य गुणोत्पादी ध्रुव, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ध्रुवगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८१॥

सम्यग्दर्शन पाकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-सम्यक्त्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८२॥

तत्त्व ज्ञान आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८३॥

गुण चारित्र प्राप्त कर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-चारित्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८४॥

मंगलमय आचार्य हमारे, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मंगलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८५॥

हैं आचार्य लोक में उत्तम, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-उत्तमगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८६॥

श्री आचार्य मंगलोत्तम हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मंगलोत्तमगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८७॥

शरणागत को सूरि शरण दे, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-शरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८८॥

आत्मवीर्य आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-वीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८९॥

परम घोर तप करके सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-तपोगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९०॥

श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाकर सूरि, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-ऋद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९१॥

मोक्ष बोध आचार्य प्राप्त कर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मोक्षबोधत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९२॥

श्री आचार्य मुक्त आतम हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-मुक्तात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९३॥

श्री आचार्य चिदानंदी हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-चिदानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९४॥

श्री आचार्य निजानंदी हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-निजानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९५॥

श्री आचार्य शुद्ध आतम हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-शुद्धात्मगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९६॥

श्री आचार्य ब्रह्म आनंदी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-बह्मानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९७॥

श्री आचार्य आत्म के रसिया, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-आत्मरसगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९८॥

श्री आचार्य परम उपकारी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-परमोपकारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९९॥

सिद्धचक्र आचार्य स्वरूपी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूरि-स्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३००॥

नग्न दिगम्बर धर्म धुरंधर, पिच्छि कमंडल ले।
द्वादशांग श्रुत की नैया से, भव के पार चले॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०१॥

परमत खंडित करके करते, मण्डित जिनशासन।
कर्मों को दण्डित कर करते, पण्डित शिव आतम॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मोक्षमण्डनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०२॥

जो पच्चीस मूल गुण धारें, निज को शृंगारें।
ज्ञान महल में आत्म ज्योति जो, निज की उजयारें॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मूलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०३॥

उपाध्याय के योग्य गुणों से, शिष्यों को श्रुत दें।
सम्यक् तत्त्वों से निज पर को, मुक्तिरमा सुख दें॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-नग्नस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०४॥

श्रावक श्रमणों की चर्या को, आचारांग कहे।
उसके ज्ञाता निज के ध्याता, सिद्धपुरी में रहे॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आचारांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०५॥

धर्म क्रिया कब क्या करनी है, सूत्रकृतांग कहे।
हे ज्ञानी! वह सूत्र हमें दो, किससे और कहें॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-सूत्रकृतांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०६॥

कहाँ-कहाँ पर प्राणी रहते, स्थानांग कहे।
हमको अपने पास बुला लो, जो तुम जान रहे॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-स्थानांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०७॥

सभी तत्त्व समता से समझो, समवायांग कहे।
इसके ज्ञाता बिन ना समता, हम तुम साथ रहें।
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-समवायांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०८॥

कब किससे हाँ या ना कहना, संत भंग कहते।
व्याख्याप्रज्ञप्ति के पाठी, हमको तो जमते॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-व्याख्याप्रज्ञप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०९॥

कहें शलाका पुरुषों का यश, ज्ञातृकथा ज्ञानी।
चुपके-चुपके जिन्हें निहारे, मुक्तिवधू रानी॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञातृकथागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१०॥

उपासकाध्ययनांग ज्ञान दे, श्रावक प्रतिमा के।
इसे जानकर चिद्भावी हों, रसिया आत्मा के॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-उपासकाध्यनांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३११॥

पूज्य अंतकृतांग ज्ञान दे, अंतकृति प्रभु के।
संयम तरणी निज रमणी ले, लगें सिद्ध प्रभु से॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अंतकृतांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१२॥

पूज्य अनुत्तरदशांग कहता, मुनि के दस-दस भव।
गुरु-कृपा बिन कुछ भी कर लो, मुक्ति नहीं सम्भव॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अनुत्तरदशांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१३॥

अंग प्रश्नव्याकरण ज्ञान दे, समाधान अपने।
गुरु-आशीष दया से होते, पूरे हर सपने॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-प्रश्नव्याकरणांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१४॥

श्री विपाकसूत्रांग बताता, कर्मों की लीला।
गुरु-करुणा यदि ना बरसे तो, अन्तस् ना गीला॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-विपाकसूत्रांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१५॥

उत्पादपूर्व पाठक जिन स्वामी, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-उत्पादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१६॥

आग्रायणीपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आग्रायणीपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१७॥

वीर्यानुवादपूर्व के पाठक, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-वीर्यानुवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१८॥

अस्तिनास्तिपूर्व के पाठक, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अस्तिनास्तिपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१९॥

ज्ञानप्रवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञानप्रवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२०॥

सत्यप्रवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-सत्यप्रवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२१॥

आत्मप्रवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आत्मप्रवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२२॥

कर्मप्रवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-कर्मप्रवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२३॥

प्रत्याख्यानपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-प्रत्याख्यानपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२४॥

विद्यानुवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-विद्यानुवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२५॥
कल्याणवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-कल्याणवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२६॥
प्राणानुवादपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-प्राणानुवादपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२७॥
क्रियाविशालपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-क्रियाविशालपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२८॥
त्रिलोकबिंदुपूर्व पाठक जिन, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-त्रिलोकबिंदुपूर्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२९॥
उपाध्याय अनमोल द्रव्य हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-द्रव्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३०॥
उपाध्याय पर्याय अनोखी, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-पर्यायगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३१॥
उपाध्याय गुरु मंगल-मंगल, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मंगलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३२॥
उपाध्याय लोकोत्तम जिन हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-लोकोत्तमगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३३॥
उपाध्याय गुरु ज्ञानपुंज हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३४॥
उपाध्याय गुरु का दर्शन है, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-दर्शनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३५॥
उपाध्याय सम्यक्त्व नित्य है, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-सम्यक्त्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३६॥
उपाध्याय बल वीर्य विशेषा, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-वीर्यगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३७॥

उपाध्याय गुरु शरण सहाई, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-शरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३८॥
उपाध्याय द्वादशांग धनी हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-द्वादशांगगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३९॥
उपाध्याय दसपूर्वी होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-दशपूर्वित्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४०॥
उपाध्याय चौदहपूर्वी हैं, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-चतुर्दशपूर्वित्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४१॥
श्रावकचर्या कह पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-श्रावकचर्या-उपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४२॥
मूलाचार कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-श्रमणचर्या-उपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४३॥
सम्यग्ज्ञान कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-सम्यग्ज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४४॥
प्रथमानुयोग कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-प्रथमानुयोगोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४५॥
करुणानुयोग कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-करणानुयोगोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४६॥
चरणानुयोग कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-चरणानुयोगोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४७॥
द्रव्यानुयोग कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-द्रव्यानुयोगोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४८॥
ज्ञानाचार कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञानाचारोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४९॥
तपाचार ज्ञानी पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-तपाचारोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५०॥

षड्दर्शन ज्ञाता पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-षड्दर्शनोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५१॥
जिनचारित्र कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-जिनचारित्रोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५२॥
वीर्याचार कहें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-वीर्याचारोपदेशगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५३॥
मतिज्ञानी पाठक होकर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मतिज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५४॥
श्रुतज्ञानी पाठक होकर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-श्रुतज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५५॥
अवधिज्ञानी पाठक होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अवधिज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५६॥
मनपर्यय पाठक होकर के, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मनःपर्ययज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५७॥
परोक्षज्ञानी पाठक होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-परोक्षज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५८॥
प्रमाणज्ञातृ पाठक होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-प्रमाणज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५९॥
नय के ज्ञाता पाठक होकर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-नयज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६०॥
द्रव्य नयों से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-द्रव्यनयज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६१॥
पर्यायनय से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-पर्यायनयज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६२॥
व्यवहारनय से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-व्यवहारनयज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६३॥

निश्चयनय से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-निश्चयनयज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६४॥
अन्वयार्थ से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अन्वयार्थज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६५॥
शब्दार्थ से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-शब्दार्थज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६६॥
आगमार्थ कर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आगमार्थज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६७॥
मतार्थ ज्ञाता पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मतार्थज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६८॥
भाव-अर्थ से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-भावार्थज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६९॥
शास्त्र वांचकर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-वाचनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७०॥
प्रश्न पूछकर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-पृच्छनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७१॥
श्रुत चिन्तनकर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अनुप्रेक्षागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७२॥
शुद्ध घोष कर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आम्नायगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७३॥
आठ अंग ज्ञानी पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अष्टांगज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७४॥
उच्चारण कर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-शब्दाचारज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७५॥
योग्य अर्थ कर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अर्थाचारज्ञानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७६॥

पढ़ें अर्थ कर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-तदुभयाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७७॥

योग्य समय में पढ़ पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-कालाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७८॥

सादर पढ़ें बनें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-विनयाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७९॥

करके त्याग पढ़ें पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-उपधानाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८०॥

बहुमान करके पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा॥ ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-बहुमानाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८१॥

कुछ न छिपाएँ फिर पाठक हो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अनिह्नवाचारगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८२॥

तत्त्व सिद्धि से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-तत्त्वसिद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८३॥

ज्ञानऋद्धि से पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञानऋद्धिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८४॥

हो निर्ग्रन्थ बने पाठक फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-निर्ग्रन्थगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८५॥

चिदानंद हो पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-चिदानन्दगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८६॥

परमानंदी पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-परमानंदगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८७॥

चिद्रूपी हो पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-चिद्रूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८८॥

निज के रसिया पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आत्मरसगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८९॥

ज्ञान चेतना पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-ज्ञानचेतनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९०॥
मोक्ष स्वरूपी पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मोक्षस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९१॥
शुद्ध जीव पा पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-शुद्धजीवगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९२॥
अजीव तजकर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अजीवमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९३॥
आस्रव तजकर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-आस्रवमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९४॥
कर्म बंध तज पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-बंधमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९५॥
करके संवर पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-संवरमुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९६॥
करें निर्जरा पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-निर्जरामुक्तगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९७॥
मोक्षतत्त्व पा पाठक बन फिर, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मोक्षत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९८॥
मंगल उत्तम शरणा पाठक, सिद्ध बने आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-मंगलोत्तमशरणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९९॥
अनंतकाल तक परम मोक्ष में, जो जयवंत रहें।
'सुव्रतसागर' सिद्धचक्र कर, अर्हत् सिद्ध बनें॥
उपाध्याय मुनि को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पाठक-अनंतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४००॥
सम्यग्दर्शन की **विद्या** ले, **ज्ञान** हिमालय हैं।

चलते फिरते तीर्थ **समय** सम, जो सिद्धालय हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०१॥

जिनशासन की ध्वजा लिये जो, धर्म धुरंधर हैं।
मोक्ष महल के **योग** समंदर, पूर्ण दिगम्बर हैं।
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मोक्षमंडितगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०२॥

मूल गुणों की **नियम** माल से, जो शृंगारित हैं।
निज में निज की करें साधना, निज आधारित हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मूलगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०३॥

साधु योग्य गुण से **चेतन** के, जो आसामी हैं।
सिद्धों की श्रेणी में आने, वाले स्वामी हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-चेतनस्वरूपगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०४॥

दया अहिंसा के पालन को, जग को छोड़ दिया।
ओम् नमः सिद्धेभ्यः जपने, पथ ही मोड़ लिया॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो,, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अहिंसामहाव्रतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०५॥

सत्य महाव्रत **क्षमा** धारकर, तथ्य दिखाते हैं।
आने वाले दुख संकट को, खुद सह जाते हैं॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-सत्यमहाव्रतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०६॥

चौर्य तजे पर चुपके-चुपके, हृदय चुराते हैं।
गुप्ति धरें सो मुक्तिवधू को, खूब लुभाते हैं॥

सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अचौर्यमहाव्रतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०७॥

जग की तरुणी त्याग रिझाएँ, मोक्ष सुन्दरी को।
संयम तरणी लेकर जाएँ, मुक्ति स्वयंवर को॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-ब्रह्मचर्यमहाव्रतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०८॥

तिल तुष मात्र न रखते परिग्रह, जग सम्राट रहे।
सुधा सिन्धु के हीरे मोती, जग को बाँट रहे॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अपरिग्रहमहाव्रतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०९॥

चले निरख कर **समता** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा।ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-ईर्यासमितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१०॥

संत वचन **स्वभाव** से बन फिर, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-भाषासमितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४११॥

साधु एषणा **समाधि** करके, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-एषणासमितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१२॥

रखें उठायें साधु **सरल** हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-आदाननिक्षेपणसमितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...॥४१३॥

व्युत्सर्ग **वैराग्य** धारकर, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-व्युत्सर्गसमितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१४॥

मनोगुप्ति से **प्रमाण** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मनोगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१५॥

वचनगुप्ति से **आर्जव** होकर, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-वचनगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१६॥

कायगुप्ति से **मार्दव** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-कायगुप्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१७॥

साधु चरित्र से **पवित्र** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-त्रयोदशविधचारित्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१८॥
स्पर्शन जय से **उत्तम** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-स्पर्शनेन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१९॥
रसना जय से **चिन्मय** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-रसनेन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२०॥
नासा जय से **पावन** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-घ्राणेन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२१॥
चक्षु जय से **सुख** सागर हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-चक्षुरिन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२२॥
कर्ण विजय से **अपूर्व** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-कर्णेन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२३॥
विजित मना से **प्रशांत** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अनिन्द्रियजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२४॥
समता धर **निर्वेग** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-सामायिकगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२५॥
स्तुति करके **विनीत** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-स्तुतिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२६॥
करके वंदना **निर्णय** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-वंदनागुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२७॥
प्रत्याख्यानी **प्रबुद्ध** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-प्रत्याख्यानगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२८॥
प्रतिक्रमण कर **प्रवचन** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-प्रतिक्रमणगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२९॥
कायोत्सर्ग कर **पुण्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-कायोत्सर्गगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३०॥

हुए दिगम्बर **पाय** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-नग्नत्वगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३१॥

दन्त न धोकर **प्रसाद** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अदन्तधावनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३२॥

कर भू-शयना **अभय** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-भूशयनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३३॥

एकभुक्ति कर **अक्षय** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-एकभुक्तिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३४॥

केशलोंच कर **प्रशस्त** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-केशलोंचगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३५॥

खड़े भोज्य ले **पुराण** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-एकस्थितिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३६॥

उत्तरगुण धर **प्रयोग** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-उत्तरगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३७॥

मूलोत्तर धर **प्रबोध** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मूलोत्तरगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३८॥

परिषह जयकर **प्रणम्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-परीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३९॥

क्षुधा विजेता **प्रभात** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-क्षुधापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४०॥

तृषा विजेता **चंद्र** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-तृषापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४१॥

शीत विजेता **वृषभ** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-शीतपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४२॥

उष्ण विजेता **अजित** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-उष्णपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४३॥

दंशमशक जय **शंभव** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-दंशमशकपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४४॥
नाग्न्य जयी **अभिनन्दन** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-नाग्न्यपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४५॥
अरति विजेता **सुमति** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अरतिपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४६॥
स्त्री जयकर **पद्म** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-स्त्रीपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४७॥
चर्या जय से **सुपार्श्व** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-चर्यापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४८॥
निषद्या जय से **चन्द्रप्रभ** हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-निषद्यापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४९॥
शैय्या जय से **पुष्पदंत** हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-शैय्यापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५०॥
आक्रोश जय से **शीतल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-आक्रोशपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५१॥
वध विजयी **श्रेयांश** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-वधपरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५२॥
याचना जय से **पूज्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-याचनापरीषहजयगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५३॥
अलाभ जय से **विमल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अलाभपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५४॥
रोग विजेता **अनंत** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-रोगपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५५॥
तृण स्पर्श जय **धर्म** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-तृणस्पर्शपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५६॥

मल परिषहजयी **शान्ति** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मलपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५७॥

सत्कार पुरस्कार जय **कुन्थु** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-सत्कारपुरस्कारपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५८॥

प्रज्ञा विजयी **अरह** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-प्रज्ञापरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५९॥

अज्ञान विजयी **मल्लि** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अज्ञानपरीषहजयी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६०॥

अदर्शन विजयी **सुव्रत** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अदर्शनपरीषहजयीसिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६१॥

दर्शन आराधक **नमि** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-दर्शन-आराधक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६२॥

ज्ञान आराधक **नेमि** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-ज्ञान-आराधक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६३॥

चारित्र आराधक **पार्श्व** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-चारित्र-आराधक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६४॥

तप आराधक **वीर** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-तप-आराधक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६५॥

शंका त्यागी **क्षीर** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-शंकात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६६॥

निःशंकित श्री **धीर** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-निःशंकितगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६७॥

कांक्षा त्यागी **उपशम** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-कांक्षात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६८॥

निःकांक्षित श्री **प्रशम** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-निःकांक्षितगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६९॥

ग्लानी त्यागी **आगम** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-चिकित्सात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७०॥
निर्विचिकित्सक **महा** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-निर्विचिकित्सक सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७१॥
मूढ़ता त्यागी **विराट** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मूढ़तात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७२॥
अमूढ़दृष्टि **विशाल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अमूढ़दृष्टिगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७३॥
अनुपगूहन तज **शैल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अनुपगूहनत्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७४॥
उपगूहन कर **अचल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-उपगूहनगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७५॥
अस्थितिकरण तज **पुनीत** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अस्थितिकरणत्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७६॥
स्थितिकरण से **वैराग्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-स्थितिकरणगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७७॥
अवात्सल्य तज **अविचल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अवात्सल्यत्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७८॥
वात्सल्य से **विशद** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-वात्सल्यगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७९॥
अप्रभावना तज **धवल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अप्रभावनात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८०॥
प्रभावना कर **सौम्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-प्रभावनागुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८१॥
लोकमूढ़ तज **अनुभव** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-लोकमूढ़तात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८२॥

देवमूढ़ तज **दुर्लभ** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-देवमूढ़तात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८३॥

गुरुमूढ़ तज **विनम्र** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-गुरुमूढ़तात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८४॥

अनायतन तज **अतुल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अनायतनत्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८५॥

आयतन रूपी **भाव** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-आयतनगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८६॥

मिथ्या तज **आनंद** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मिथ्यात्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८७॥

कषाय त्यागी **अगम्य** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-कषायत्यागी सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८८॥

विषय विजेता **सहज** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-विषयविजेता सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८९॥

मंगलमय **निःस्वार्थ** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मंगलगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९०॥

उत्तम मय **निर्दोष** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-उत्तमगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९१॥

शरण रूप **निर्लोभ** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-शरणगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९२॥

ऋषि रूप **नीरोग** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-ऋषि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९३॥

मुनि रूप **निर्मोह** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मुनिगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९४॥

यती रूप **निष्पक्ष** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-यतिगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९५॥

अनगारी श्री **निस्पृह** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अनगारगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९६॥

शरण त्रिलोकी **निश्चल** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-त्रिलोकशरणगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९७॥

शरण त्रिकाल **निष्कम्प** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-त्रिकालशरणगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९८॥

वीर्य रूप **निष्पंद** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-वीर्यगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९९॥

साधु **निरामय** शब्द ब्रह्म हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-ब्रह्मगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५००॥

साधु **निरापद** परमब्रह्म हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-परमब्रह्मगुणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०१॥

साधु **निराकुल** दश धर्मी हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-दशधर्मयुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०२॥

रत्नत्रय धर **निरुपम** मुनि हो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-रत्नत्रययुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०३॥

जिनशासन में साधु जीव तो, सदा **निरीह** रहें।
निज गृह में **निष्काम** हुए हैं, जो **निस्सीम** रहें॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-जीवत्वयुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०४॥

आत्म साधना करने साधु, नित **निर्भीक** रहे।
अजीव राग **नीराग** त्याग के, तीरथ दीख रहे॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधु-अजीवमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०५॥

जल में अमल कमल से रहते, मुनि **नीरज** साधु।
आस्रव तज **निकलंक** बने हैं, आतम के स्वादु॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-आस्रवमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०६॥

मद को **निर्मद** करने वाले, बंध तजें जग के।
कर्म सर्ग **निःसर्ग** करें हम, विषय तजें भव के॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बने आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-बंधमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०७॥

हो **निःसंग** करे जो संवर, सो मन शीतल हो।
पर द्रव्यों से चित्त हरे तो, सबका मंगल हो॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-संवरमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०८॥

शाश्वत पद के अभिलाषी हैं, **समरस** के स्वादी।
करें निर्जरा नित्यानन्दी, हरते जग व्याधि॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-निर्जरामुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०९॥

रत्नत्रय के विद्या रथ से, मोक्ष सवारी हो।
श्रमण करें **संधान** स्वयं का, पाप निवारी हो॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-पापमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१०॥

हर संस्कार पुण्य का करके, मुनि **संस्कार** हुये।
तब **ओंकार** स्वरूपी हम हों, पुण्य अभाव छुये॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-पुण्यमुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५११॥

'पुण्यफला अर्हंता' बनकर, मोक्ष शिखर पायें।
वीतराग विज्ञान प्राप्ति को, रत्नत्रय ध्यायें॥
सर्व साधुओं को नमोऽस्तु जो, सिद्ध बनें आहा। ओम्...

ॐ ह्रीं अर्हं साधु-मोक्षयुक्त सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१२॥

पूर्णार्घ्य

(कवित्त)

षष्ट खंड के अधीश चक्र ईश हैं नरेश,
मध्य लोक के अधीश हैं सुरेश जानिए।
हाँ नरेश औ सुरेश के अधीश हैं मुनीश,
श्री मुनीश के अधीश हैं जिनेश मानिये॥
तीन लोक तीन काल के अजीव जीव सर्व,
के अधीश सिद्धचक्र हैं यकीन मानिये।
किन्तु सिद्धचक्र के अधीश धीश हो न कोई,
सो नमोऽस्तु कीजिए विधान भक्ति ठानिये॥

(सोरठा)

परमेष्ठी भगवान, पंच परम परमातमा।
हो नमोस्तु गुणगान, बनने को सिद्धातमा॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

(दोहा)

पाँच शतक बारह गुणी, सिद्ध चक्र भगवान।
णमोकार में उच्च हैं, अतः करें गुण गान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो पूज्य पंचपरमेष्ठी, जिन में स्वामी सिद्ध रहे।
सिद्धचक्र प्रभु का क्या कहना, जो चैतन्य प्रसिद्ध रहे॥
हम भक्तों के परम पिता हैं, मुक्तिपुरी के दूल्हे हैं।
मोक्ष सुन्दरी की बाहों में, सिद्धि पाकर झूले हैं ॥१॥
किया इन्होंने ऐसा क्या है, आओ! इस का ज्ञान करें।
श्रद्धालय से सिद्धालय को, पाने का शुभ काम करें॥
प्रथम इन्होंने भी अपनाया, पूज्य पंच परमेष्ठी को।
फिर पाँचों पापों को त्यागा, मुनि पंचम परमेष्ठी हो ॥२॥
फिर चारित्र पाँचवां पाकर, पंचम ज्ञान ज्योति पाई।
पंच परावर्तन फिर तज कर, पंचम गति आतम पाई॥
यही पूज्य परमेष्ठी पाँचों, व्यवहारी साधन बनते।
जिससे निश्चय रूप आतमा, पाकर जीव सिद्ध बनते ॥३॥
अतः आप यदि सिद्धचक्र में, शामिल होना चाह रहे।
संकट बाधाओं में फँस कर, दर-दर खूब कराह रहे॥
तो अर्हन्त सिद्ध आचार्यों, उपाध्याय मुनि को भज लें।
सो भय दुख तो नश ही जाते, निज रत्नों से खुद सजलें ॥४॥
बड़े-बड़े पद भी इनकी ही, दया भक्ति करके मिलते।
लेकिन इनकी निंदा करके, नरक निगोदी दुख मिलते ॥
अतः पंच परमेष्ठी प्रभु की, करो अर्चना या न करो।
पर निंदा से निश्चित बचना, मोक्ष अन्यथा तो न वरो ॥५॥
वरना मुक्ति प्रेम की गाथा, बस गाथा रह जायेगी।
आतम परमातम न बनेगी, बहिरातम बन जायेगी॥

सिद्धचक्र कर 'मुनिसुव्रत' का, यही प्रयोजन सपना है।
वैर विकारी भाव त्याग कर, जिन से निज में रमना है ॥६॥

(दोहा)

चित्त चुराकर आप, चिदानन्द में रम रहे।
हरने को हम पाप, करके नमोऽस्तु नम रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

मैं तो देहाती
देहातीत बनूँ ये
मेरी भावना

मोक्षमार्ग तो
भीतर अधिक है
बाहर कम

अष्टम पूजन

स्थापना (शंभु)

हे सिद्धप्रभु! हे सिद्धप्रभु!, लोकाग्र वसे हैं निज वसिया।
जो ध्यान आपका करते वो, हर कर्म काटते निज रसिया॥
श्री सिद्धचक्र पूजा करके, दुख दर्द रोग संकट मिटते।
प्रभु नाम जाप तेरा करके, अवरोध मार्ग के सब हटते॥
अब भाव भक्ति से यथाशक्ति, हम पूजें पाकर शुभ बेला।
है भाव यही हम भी पायें, प्रभु सिद्धों का शाश्वत मेला॥
हम करके नमोऽस्तु श्रद्धा से, प्रभु हृदय कमल पर बुला रहे।
जो मुक्तिवधू पाई तुमने, वो पाने तुमको मना रहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी श्रीसिद्धचक्र! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।

(दोहा)

सर्वश्रेष्ठ सिद्धातमा, सहस्त्रगुणी भगवान्।
सिद्धचक्र सो हम भजें, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं.....)

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री सिद्धचक्र का नाम, सहसगुण धाम, थाम ले प्राणी॥
सो हमने पूजा ठानी।
हम श्रद्धा से जल भर लाये, कर अर्पित सिद्धों को ध्याये।
अब जन्म मृत्यु को हरें, बनें हम ज्ञानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

संसार ताप में झुलस रहे, पर हाय! सिद्ध सुख पा न सके।
अब ताप हरण को छाँव मिले वरदानी ॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

दुनियाँ की मार न सह पाए, हम क्षत विक्षत हो घबराये।
अब बने हमारी अक्षय सिद्ध कहानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम रोग का जोर चले, तो कैसे चेतन बाग खिले।
अब हम भी तुम सम पायें मुक्ति रानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जब सर्पों जैसे भोग डसें, तो कैसे जिन रस योग रुचें।
अब हम भी तुम सम भोगें दाना पानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

अब भटकन सही नहीं जाये, निज पीड़ा कही नहीं जाये।
अब हमें थाम निज दीप जला दो स्वामी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम कर्मों के ही सताये हैं, अपना साम्राज्य लुटाये हैं।
अब तुम सम पाने न्याय मोक्ष राजधानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हम सुखी दुखी हैं बहिर्सुखी, सो मिली न हमको मोक्ष सखी।
अब तुम सम सफल हमारी हो जिंदगानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं हमारी है इच्छा, तुम सम बनने हो जिनदीक्षा।
अब शीघ्र बनें हम शुद्धातम के ध्यानी॥
सो हमने पूजा ठानी।

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरीगीतिका)

सौभाग्यशाली शीलगुणमय हर बुराई छोड़के।
श्रद्धालु बनके सिद्ध पथ को, शीश अपना मोड़ के॥
हम वित्तरागी राग तज के, वीतरागी को भजें।
सो सिद्धचक्र सहस्त्रगुण भज, भक्ति के रंग में रंगें॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमोसिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(विष्णु)

सिद्धचक्र में सहस्त्र नाम के, गुण पूजें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥

(पुष्पांजलिं...)

इन्द्रिय विषय कषाय जयी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

रागादिक जय कर जिनेन्द्र हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

रागादिक बिन पूर्ण कार्य हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपूर्ण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

जिनवर में भी जो उत्तम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनोत्तम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

सुर मुनि आदिक से पूजित हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपृष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५॥

सब जग के अधिपति कहलाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाधिप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६॥

सब जग के हैं अधीश अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाधीश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७॥

सुरा-सुरों के जग के ईश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

नाथों के भी नाथ सहारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिननाथ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

त्यागी व्रतियों के श्रीपति हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

तीन लोक की प्रखर प्रभा हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनप्रभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

सकल चराचर के अधिराजा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाधिराज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

पूज्य अलौकिक विभव धारते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनविभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३॥

मुनि श्री जिन को भर्ता माने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनभर्ता-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४॥

निज पर के हैं जो प्रकाश वे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वप्रकाशक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५॥

सकल कर्म के रहे विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

जन-जन के जिन ईश रहे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७॥

नायक के भी नायक जिन हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिननायक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८॥

ज्योतिर्मय निर्ग्रन्थ जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिननेत्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

भव दुख हरकर जिन कहलाते, सिद्ध जिना आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनजेत्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

वज्र मेरु सम जिनपरिदृढ़ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपरिदृढ़-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

देवों के जिनदेव देव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२॥

ईश-ईश के परम जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमजिनेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३॥

निज पर पालक जिनपालक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपालक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४॥

राजा राजा के जिनराजा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनराज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५॥

जिनशासन के ईश जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६॥

देवों के देवाधिदेव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवाधिदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७॥

अद्वितीय जिनवर बन जाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८॥

जिन अधिनाथ नाथ हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाधिनाथ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९॥

बंध रहित हैं विबंध जिनवर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्रविबंध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०॥

अमृत बरसाते जिन चंदा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१॥

पथ दर्शक आदित्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनादित्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२॥

परम पूज्य जिन दीप्त रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनदीप्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३॥

निज वश हैं जो जिनकुंजर हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनकुंजर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४॥

अंध जयी जिन अर्क रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनार्क-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५॥

धर्म धुरी जिन धौर्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनधौर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६॥

तत्त्व धुरी जिनधूर्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनधूर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७॥

श्री श्री जिनराज हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनराज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८॥

त्रिलोक का दुख करें निवारण, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकदुःखनिवारक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९॥

मुक्तिवधू के वर जिन अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनवर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०॥

संग रहित निःसंग जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निःसंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१॥

जिन उद्वाह राह शिवपुर के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनोद्वाह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२॥

धर्म धार जिनवृषभ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनवृषभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३॥

धर्म मणी जिनधर्म रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४॥

आत्म रत्न जिनरत्न रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनरत्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५॥

निज रस स्वादी जिनरस अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनरस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६॥

जिन परमेश ईश हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपरमेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७॥

विश्व अग्रणी पूज्य जिनाग्री, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाग्रणी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८॥

जिनशार्दूल विश्व के जेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनशार्दूल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९॥

जिनपुंगव त्रय जग में उत्तम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनपुङ्गव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०॥

जिनप्रवेक हर कर्म मुक्त कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनप्रवेक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१॥

हैं अध्यात्म सरोवर हंसा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनहंस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

उत्तम सुख धारी हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसुखधारक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३॥

सबसे श्रेष्ठ पूज्य नायक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनश्रेष्ठनायक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४॥

सबसे अग्रिम कहलाते हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाग्रिम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५॥

मुक्त करायें हमें ग्रामणि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनग्रामण्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६॥

भव सत हरकर जिनसत्तम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनसत्तम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७॥

कल्याणक पा बने प्रभव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनप्रभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८॥

घाति कर्म के परम विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमजिन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९॥

चतुर्गती भ्रमण नाशक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्गतिदुःखांतक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०॥

जगत ज्येष्ठ हैं हमें इष्ट हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जगज्येष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१॥

निज पद के सुखकर्त्ता स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुखकर्त्ता-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२॥

कर्म विजय में रहें अग्रणी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनाग्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३॥

देवों में भी श्रेष्ठ देव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४॥

परम परम उत्तम उत्तम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्तम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५॥

भजें सुरासुर सो वृंदारक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृंदारक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६॥

पर भावों के अरिजित साँचे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अरिजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७॥

हैं निर्विघ्न विघ्न सब हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८॥

कर्मों की रज हरकर विरजस, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विरजस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९॥

निरस्त मत्सर करने वाले, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तमत्सर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०॥

सभी तरह से शुद्ध शुद्ध हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१॥

पूज्य परम नायक नायक हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमनायक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२॥

हैं कर्मघ्न कर्म के घाती, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३॥

घाति कर्म को अंत किये हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं घातिकर्मान्तक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४॥

निरावरण जिनदीप्त हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनदीप्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५॥

कर्म मर्म के भेदक अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कर्ममर्मभेदक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६॥

कर्म उदय ना सो अनुदय हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनुदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७॥

राग विजेता वीतराग हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीतराग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८॥

क्षुधा जयी अक्षुधा हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षुधा-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९॥

द्वेष जयी अद्वेष देवता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अद्वेष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०॥

सब को मोहें पर निर्मोही, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१॥

दोष रहित निर्दोष गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्दोष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२॥

रोग रहित निर्दोष अगद हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अगद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३॥

ममता विजयी निर्ममरूपा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्ममत्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४॥

वीत गई है तृष्णा जिनकी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीततृष्णा-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५॥

रहे असंग संग सब त्यागी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं असंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६॥

निर्भय हैं सो काहे का भय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्भय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७॥

हैं अस्वप्न स्वप्न में आये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अस्वप्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८॥

महा श्रमण बन निःश्रम बनते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निःश्रम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९॥

वीत गया है विस्मय जिनका, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीतविस्मय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०॥

अजन्म हैं जो जन्म न हो अब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अजन्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१॥

संशय विजयी निःसंशय हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निःसंशय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२॥

वृद्ध दशा बिन निर्जर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्जर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३॥

मरण मारकर अमर बने हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४॥

वीत गया है अरति जिनका, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अरत्यतीत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५॥

हैं निश्चिंत मुक्त चिंता से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निश्चिंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६॥

विषय विषों से निर्विष होकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्विष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७॥

हैं प्रभु त्रेसठ कर्म विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिषष्ठिजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८॥

जग ज्ञाता सर्वज्ञ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९॥

जग झलके सो सर्वविदे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००॥

निज पर दर्शी सर्वदर्शी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१॥

सर्वालोक जानते सब कुछ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वालोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२॥

अनंतविक्रम किये पराक्रम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतविक्रम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०३॥

अनंतवीर्य बल शक्ति प्रदाता, सिद्ध जिना आहा।ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०४॥

अनंतसुख से निज में सुखिया, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुख-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०५॥

अनंतसौख्य मुख्य गुण पाए, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसौख्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०६॥

विश्वज्ञान सो विश्व जानते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्ञानी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०७॥

विश्वदर्शी सो विश्व देखते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदर्शी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०८॥

परमपूज्य अखिलार्थ दर्शी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अखिलार्थदर्शी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०९॥

है निष्पक्षी जिनका दर्शन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्पक्षदर्शी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११०॥

विश्व चक्षु से स्व-पर निहारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वचक्षुष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१११॥

कुछ न शेष अशेषविदे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अशेषविद्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११२॥

जो आनन्द रूप नित रहते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आनंदरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११३॥

सदानन्द हैं जिनवर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सदानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११४॥

रहे सदोदय उदित सदा जो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सदोदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११५॥

नित्य नित्य आनंद रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नित्यानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११६॥

पर को ना पर परानंद हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११७॥

महा महा आनंद रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११८॥

परम परम आनंद रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥११९॥

उदय न पर का किन्तु परोदय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परोदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२०॥

पर के बिना परम ओजस हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमौजस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२१॥

निज में स्वयं परमतेजस हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमतेजस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२२॥

परमधाम बस परम धाम हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमधाम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२३॥

दिव्य परम हंसा आतम के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यपरमहंस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२४॥

हैं प्रत्यक्ष ज्ञान निजज्ञानी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यक्षज्ञातृ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२५॥

हैं विज्ञान ज्योति के मोती, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विज्ञानज्योतिष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२६॥

परमब्रह्म निज आतम पाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमब्रह्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२७॥

परम रहस रहस्य सब जीते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमरहस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२८॥

हैं प्रत्यक्ष आत्मन् अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यक्षात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१२९॥

हैं प्रबोध आत्मन् अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोधात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३०॥

महा महा आत्मन् हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३१॥

महा उदय हैं आत्म महोदय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आत्ममहोदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३२॥

परम परम आत्मन् हैं आत्मन्!, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३३॥

प्रशांत आत्मन् नित प्रशांत हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३४॥

सभी तरह से पूर्ण आत्म हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३५॥

आत्मनिकेतन निज घर पाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मनिकेतन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३६॥

परम इष्ट सो परमेष्ठी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३७॥

महितात्मन हैं सर्व हितैषी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महितात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३८॥

सर्वश्रेष्ठ आत्मन् के आत्मन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वश्रेष्ठात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१३९॥

निज में रहें स्वात्मनिष्ठित सो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मनिष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४०॥

ब्रह्मनिष्ठ हो रहें ब्रह्म में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४१॥

ज्येष्ठों के भी महाज्येष्ठ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाज्येष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४२॥

निरूढ़ आत्मन् रूढ़ी बिन हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरूढ़ात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४३॥

दृढ़ आत्मन् दृढ़ निज में रहते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४४॥

निज में निज सो एकविद्य हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४५॥

स्वपर विद्य सो महाविद्य हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४६॥

महापदेश्वर जग पद छोड़े, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महापदेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४७॥

पञ्च ब्रह्म पञ्चम गति पाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चब्रह्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४८॥

सर्व रूप हैं सर्व जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१४९॥

पूज्य सर्व विद्येश्वर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्येश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५०॥

लोभ रहित हैं मोह रहित शुचि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुचि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५१॥

अनंतदीप्ति आत्म प्रकाशी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५२॥

अनंत आत्मन् अनंत हैं बस, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५३॥

अनंतशक्तिसम्पन्न आप्त हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशक्तिसम्पन्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५४॥

अनंतदर्शी अनंत देखें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५५॥

अनंत-धी शक्ति के स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधीशक्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५६॥

अनंत चिदेश हैं चित परिणामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचिदेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५७॥

अनंतमुद् हैं मुदित सदा हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतमुद्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५८॥

सदा सदा प्रकाश रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सदाप्रकाशरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१५९॥

जो सर्वार्थसिद्ध हैं वे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वार्थसिद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६०॥

हैं साक्षात् कारण जो सुख के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साक्षात्कारण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६१॥

समग्र ऋद्धि के आसामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समग्रर्द्धि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६२॥

कर्मक्षीण हैं कर्म क्षीण कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मक्षीण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६३॥

जगविध्वंस् ध्वंस सब हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जगविध्वंस्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६४॥

अलक्ष आत्मन् लक्ष्य हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अलक्षात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६५॥

अचल स्थान को पाने वाले, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६६॥

पूर्ण रूप से निराबाध हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णनिराबाध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६७॥

प्रतर्क्य आत्मन् परे तर्क से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतर्क्यात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६८॥

धर्मचक्र भवचक्र विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१६९॥

पूज्य विदांवर स्व-पर जानते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विदांवर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७०॥

रहे भूत आत्मन् आत्मन् के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७१॥

सहज ज्योति भव तम को खोते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सहजज्योतिष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७२॥

विश्व ज्योति हैं विश्व विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७३॥

रहे अतीन्द्रिय इंद्र स्वयं के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रिय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७४॥

केवल हैं बस केवल-केवल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं केवल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७५॥

जो केवल अवलोक रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं केवलावलोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७६॥

लोकालोक रहे अवलोकी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकावलोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७७॥

विवृत हैं पर ढके नहीं हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विवृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७८॥

अनंत अनंत सब लोक रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतावलोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१७९॥

हैं अव्यक्त स्वरूपी आतम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अव्यक्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८०॥

सर्व शरण दें सबको शरणा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८१॥

अचिन्त्य वैभव धारी भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यवैभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८२॥

पूज्य विश्वभृत तारणहारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८३॥

विश्वरूप आत्मन् हैं भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८४॥

विश्वात्मन् कण-कण में व्यापी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८५॥

पूज्य विश्वतोमुख सुख रूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुख-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८६॥

विश्वव्यापी हैं फिर भी निज में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८७॥

स्वयं ज्योति हैं आश न पर की, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८८॥

अचिन्त्य आत्मन् दें निज चिन्तन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१८९॥

अमितप्रभाव रूप हैं भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमितप्रभाव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९०॥

महाबोध निज शोध कराते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९१॥

महावीर्य हैं महावीर प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९२॥

महालाभ निज लाभ करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महालाभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९३॥

महा उदय सिद्धोदय देते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महोदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९४॥

महा भोग हैं सुगत स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाभोगसुगति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९५॥

महाभोग हैं निज के भोगी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाभोग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९६॥

अतुलवीर्य हैं तुल ना सकते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतुलवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९७॥

यज्ञाहार्य निजानंदी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाहार्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९८॥

भगवत् रूप रहे भगवंता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भगवत्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१९९॥

लोकालोक पूज्य अर्हत् हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२००॥

महा अर्घ को महा अर्घ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महार्घ्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०१॥

मघवा अर्चित चर्चित जग में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मघवार्चित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०२॥

भूत अर्थ के यज्ञ पुरुष हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थयज्ञपुरुष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०३॥

भूत अर्थ से यज्ञ रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थयज्ञरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०४॥

भूत अर्थ कृत पुरुष रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थकृतपुरुष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०५॥

पूज्यों के भी पूज्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पूज्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०६॥

भट्टारक हैं अर्हत् अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भट्टारक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०७॥

तत्र भवत् भव जग को छोड़े, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तत्रभवत्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०८॥

अत्र भवत् पर यहाँ न आते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अत्रभवत्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२०९॥

महत् स्वरूपी अर्हत् रूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महत्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१०॥

महा अर्ह हैं अर्घ स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महार्ह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२११॥

तत्रायुष आयुष्यमान हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तत्रायुष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१२॥

दीर्घायुष हैं आयु विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घायुष्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१३॥

स्पष्ट अर्थवाची हैं भगवन्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टार्थवाची-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१४॥

सज्जन वल्लभ सब के स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सज्जनवल्लभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१५॥

परम परम आराध्य रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमाराध्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१६॥

रहें पंच कल्याणक पूजित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणकपूजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१७॥

दर्शनविशुद्धि गुणोदयी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिगुणोदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१८॥

सुर अर्चित हैं समकित धारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुरार्चित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२१९॥

सुखदा आत्मन् स्वयं सुखी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुखदात्मन्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२०॥

स्वर्गों से भी ज्यादा ओजस, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिवौजस-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२१॥

शचि सेवित माँ के लाला हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शचीसेवितमातृक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२२॥

रत्नगर्भ से जन्म लिए हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२३॥

पूतगर्भ हैं पवित्र अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पूतगर्भ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२४॥

गर्भोत्सव से सहित जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गर्भोत्सवसहित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२५॥

नित्य नित्य उपचार चरित हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नित्योपचारोपचरित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२६॥

पूज्य पद्मप्रभु खिले पद्म सम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२७॥

निष्कलंक सब कलंक हरे हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२८॥

स्वयं स्वभावी स्वयं बने हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंस्वभावी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२२९॥

जन्म रहित सर्वीयजन्म हैं, सिद्ध जिना आहा।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वीयजन्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३०॥

पुण्य अंग हैं पुण्य विजेता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३१॥

भास्वत तेज पुंज हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भास्वत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३२॥

अद्भुतदेव न दूजा कोई, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अद्भुतदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३३॥

विश्व ज्ञातृ सम्भृत हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्ञातृसम्भृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३४॥

विश्वदेव हैं देव स्वयं के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३५॥

विधि सृष्टि निर्वृत्त रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टिनिर्वृत्तरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३६॥

सहस्राक्ष दृगु उत्सव अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षदृगूत्सव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३७॥

सर्व शक्ति सम्पन्न गुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशक्तिसम्पन्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३८॥

चले देव ऐरावत गज पर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवैरावतासीन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२३९॥

हर्ष चतुर्गति के जन पाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हर्षाकुलामरखग-चारणार्षिमतोत्सव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४०॥

निज-पर के रक्षक विष्णु हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विष्णु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४१॥

मेरु पर अभिषेक प्राप्त कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्नानपीठैतादृसराज्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४२॥

क्षीर सिंधु सम तीर्थराज हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थेशमन्यदुग्धाब्धि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४३॥

ज्ञान नीर से धोते आतम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्नानाम्बुस्नातवासव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४४॥

गंध शुद्ध करती त्रय जग को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गन्धपवित्रितत्रिलोक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४५॥

वज्रसूचि में नामांकित जो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रसूचि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४६॥

भरे हुए पर व्योम रूप हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्योम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४७॥

हैं कृत कृत्य अर्थ सब करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थकृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४८॥

शक्र इष्ट हों इष्ट हमें भी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शक्रेष्ट-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२४९॥

इंद्र नृत्य कर तृप्त हुआ है, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रतृप्तिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५०॥

हो निर्वाण बाण दुख हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५१॥

निज रत्नों के तुम हो सागर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सागर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५२॥

महासाधु तुम आत्म स्वादु हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महासाधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५३॥

विमल ज्योति हो आप विमलप्रभ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमलप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५४॥

श्रीधर हो सो भजी लक्ष्मी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५५॥

सुदत्त जिनवर मुक्त हुये सो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५६॥

अमलप्रभ हो कमल धाम हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमलप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५७॥

हो उद्धरण उच्च जा पहुँचे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उद्धरण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५८॥

अंगिरदेव हुए निज शीतल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अंगिरदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२५९॥

सन्मति हो यमराज स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सन्मति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६०॥

सिंधुनाथ हो साँचे जिनवर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिंधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६१॥

कुसुमांजलि हैं जिनवर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुसुमांजलि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६२॥

शिवगण हो जिन तुम्हें तलाशें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शिवगण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६३॥

नित्य परम उत्साह स्वरूपी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उत्साह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६४॥

ज्ञान ज्ञान बस ज्ञान तुम्हीं हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६५॥

आप परम परमेश्वर आतम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६६॥

आप परम विमलेश्वर प्रभु हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमलेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६७॥

यश के धारी तुम्हीं यशोधर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं यशोधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६८॥

आप कृष्णमति शिव गोपी पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृष्णमति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२६९॥

आप ज्ञानमति दान करो मति, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७०॥

विश्व हितैषी आप शुद्धमति, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७१॥

स्वयंभद्र जग भद्र बनाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७२॥

अतिक्रांत प्रभु जिनवर प्यारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतिक्रांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७३॥

शांत शांत प्रभु आप शांत हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७४॥

धर्म धारते अतः वृषभ हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७५॥

स्वयं विजेता अतः अजित हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७६॥

भव भय हरते सो शंभव हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शंभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७७॥

अभिनंदन हो तुमको वंदन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७८॥

सुमति सुमति हो सुमति दान दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुमति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२७९॥

आप पद्म हो पद्म खिला दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८०॥

हो सुपार्श्व निज पार्श्व हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८१॥

चंद्रपुरी के चंद्र आप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८२॥

मोक्ष विधि कह सुविधिनाथ प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुविधि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८३॥

शीतल होकर शीतलकारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शीतल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८४॥

प्रभु श्रेयांश मार्ग श्रेयश दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयांश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८५॥

वासुपूज्य प्रभु पूज्य बनाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वासुपूज्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८६॥

विमलनाथ मल कर्म नशाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८७॥

हो अनंत अनंत को तारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८८॥

धर्म धुरंधर दो निज मन्दिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२८९॥

शांति विधाता शान्ति प्रदाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शांति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९०॥

कुंथुनाथ जग के रखवाले, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुंथु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९१॥

प्रभु अरनाथ मोक्ष पुरवासी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९२॥

मोहमल्ल हर मल्लिजिनेशा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मल्लि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९३॥

मुनिसुव्रत सुव्रत के दाता,, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९४॥

कर्मजयी नमिनाथ जिनंदा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नमि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९५॥

नेमिनाथ हमको भी थामो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नेमि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९६॥

पार्श्वनाथ सब संकट हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९७॥

महावीर जय शासन नायक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महावीर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९८॥

महापद्म भव छद्म मिटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महापद्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥२९९॥

प्रभु सुरदेव सुरासुर पूजित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुरदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३००॥

श्रीसुपार्श्व प्रभु मुक्ति पार्श्व पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०१॥

पूज्य स्वयंप्रभ निष्ठित स्व में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०२॥

प्रभु सर्वात्मभूत सुख भर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मभूत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०३॥

देवपुत्र निज पुत्र बना लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवपुत्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०४॥

सिद्ध कुली कुलपुत्र आप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुलपुत्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०५॥

प्रभु उदंक सब कलंक हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदंक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०६॥

प्रोष्ठिल प्रभु जिनसूत्र हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रोष्ठिल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०७॥

जय दाता जयकीर्ति आप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जयकीर्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०८॥

मुनिसुव्रत मुनिगण के स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३०९॥

निज घर दो अरनाथ जिनेश्वर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१०॥

प्रभु निष्पाप पाप सब हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्पाप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३११॥

निष्कषाय कषाय पर जय दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्कषाय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१२॥

आत्म गुणों का विपुल विभव दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विपुल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१३॥

तन मन चेतन निर्मल कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चेतन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१४॥

चित्रगुप्त प्रभु मुक्त करो भव, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चित्रगुप्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१५॥

समाधिगुप्त दो आत्म समाधि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समाधिगुप्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१६॥

पूज्य स्वयंभू दो अष्टम भू, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभू-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१७॥

अनिवर्तक साथी शिवपुर तक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनिवर्तक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१८॥

जय जयनाथ मुक्ति के दाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३१९॥

विमल विमल कर मोक्ष महल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२०॥

देवपाल प्रभु पालो हमको, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवपाल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२१॥

अनन्तवीर्य अनंत आत्म दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२२॥

पंचरूप पंचम गति दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पंचरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२३॥

जिनधर जिनवर हमको तारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२४॥

साम्प्रतिक प्रभु हुए अलौकिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साम्प्रतिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२५॥

ऊर्जयंत निज ऊर्जा देते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्जयंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२६॥

आधिक्षायिक भवव्याधि हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आधिक्षायिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२७॥

अभिनंदन निज अभिनंदन हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२८॥

रत्नसेन को भजें जैन सब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३२९॥

रामेश्वर प्रभु धर्मेश्वर हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रामेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३०॥

पूज्य अनंगोज्झित पूजित हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंगोज्झित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३१॥

प्रभु विन्यास दास की सुन लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विन्यास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३२॥

अशेषप्रभु विशेष वैभव दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अशेष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३३॥

प्रभु सुविधान विधान निज का दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुविधान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३४॥

प्रदत्त प्रभु भव कष्ट हरो तुम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३५॥

कुमारप्रभु भव पार उतारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुमारप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३६॥

सर्वशैल शिव गैल हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशैल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३७॥

पूज्य विभंजन करो निरंजन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विभंजन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३८॥

प्रभु सौभाग्य भाग्य हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सौभाग्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३३९॥

मोक्ष सिंधु व्रतबिंदु हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रतबिंदु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४०॥

सिद्ध सिद्धकर हमें बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४१॥

ज्ञानशरीरी ज्ञान शरीर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानशरीरी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४२॥

कायाकल्प कल्पद्रुम कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कल्पद्रुम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४३॥

तीर्थ फलेश मोक्ष फल दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थफलेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४४॥

दिनकर प्रभु को नमकर सुख हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिनकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४५॥

पूज्य वीरप्रभ महावीर हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीरप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४६॥

बालचंद्र दो चंद्र शिला को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बालचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४७॥

सुव्रतनाथ साथ दो व्रत दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४८॥

अग्निसेन निज सैन्य हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अग्निसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३४९॥

नंदीसेन ब्रह्मानन्दी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदीसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५०॥

श्री श्रीदत्त मत्त न रहते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५१॥

व्रतधर से व्रत धरकर पूजें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रतधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५२॥

सोमचंद्र का होम हवन कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सोमचन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५३॥

मुक्ति हमें धृतदीर्घ नाथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धृतदीर्घ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५४॥

शतायुष्य को शत शत वन्दन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शतायुष्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५५॥

विवसितनाथ वास निज का दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विवसित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५६॥

श्रेयोनाथ साथ में रख लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५७॥

विश्रुत जल शुद्धातम जल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५८॥

सिंहसेन विधि हरो सिंह बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिंहसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३५९॥

प्रभु उपशांत शांत पथ दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपशांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६०॥

मुक्त गुप्तशासन आतम दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तशासन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६१॥

अनंतवीर्य दो वीर्य विशेषा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६२॥

पार्श्वनाथ अब पारस कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६३॥

प्रभु अभिधान ज्ञान निज का दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभिधान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६४॥

प्रभु मरुदेव देव मुक्ति के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मरुदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६५॥

श्रीधर हो सो सब ने पूजा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६६॥

शामकंठ भव शाम करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शामकंठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६७॥

पूज्य अग्निप्रभ ध्यान अग्नि दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अग्निप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६८॥

अग्निदत्त शिव मग्नि करादो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३६९॥

वीरसेन भव तीर दिला दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीरसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७०॥

श्री सिद्धार्थनाथ सिद्धि दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७१॥

विमलनाथ प्रभु ज्ञान महल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७२॥

प्रभु जयघोष दोष सब हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जयघोष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७३॥

नंदीसेन दिन रैन चैन दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदीसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७४॥

पूज्य स्वर्गमंगल मंगल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्गमंगल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७५॥

वज्राधारी ब्रह्म विहारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्राधारी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७६॥

प्रभु निर्वाण त्राण दुख हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७७॥

पूज्य धर्मध्वज धर्म ध्वजा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मध्वज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७८॥

सिद्धसेन सब सिद्ध करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३७९॥

महासेन जिन जैन बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महासेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८०॥

हमें साथ रविमित्रनाथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रविमित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८१॥

सत्यसेन दें सत्य सौख्य को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८२॥

चंद्रनाथ भव बंध हरो तुम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८३॥

महीचंद ही सही चन्द्र हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महीचंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८४॥

पूज्य श्रुतांजन शिव रंजन हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतांजन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८५॥

देवसेन स्वयमेव देव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८६॥

सुव्रत प्रभु दे सुव्रत तारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८७॥

जिनेन्द्रनाथ प्रभु जिनेन्द्र बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८८॥

सुपार्श्व प्रभु दो मुक्ति पाश को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३८९॥

पूज्य सुकौशल निज कौशल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकौशल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९०॥

अनंतप्रभु अनंत भव हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९१॥

विमल कमल सम आत्म महल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९२॥

अमृतसेन जिनामृत देते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमृतसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९३॥

अग्निदत्त शिव प्रदत्त कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९४॥

पूज्य रत्नप्रभ आत्म रत्न दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९५॥

अमितनाथ अब अमित बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९६॥

शंभव प्रभु सब संभव कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शंभव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९७॥

प्रभु अकलंक चित्त उज्ज्वल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अकलंक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९८॥

चन्द्रस्वामि प्रभु तुम्हें नमामि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥३९९॥

श्रेष्ठ शुभंकर क्षेमंकर हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुभंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४००॥

तत्त्वनाथ शिवतथ्य बताते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०१॥

सुंदर स्वामी सुंदर शिव दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुंदर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०२॥

पूज्य पुरंधर धर्म धुरंधर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुरंधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०३॥

स्वामीदेव सेव सब करते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वामीदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०४॥

देवदत्त अध्यात्म लुटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०५॥

वासवदत्त पथ्य निज का दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वासवदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०६॥

श्रेयोनाथ हाथ तो थामो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०७॥

विश्वरूप शिव रूप सजाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०८॥

पूज्य तपस्तेजो सुख दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपस्तेजस्-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४०९॥

श्री पतिबोध देव श्री दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पतिबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१०॥

श्री सिद्धार्थ अर्थ अपना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४११॥

संयम यम की नैया दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संयम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१२॥

विमल धवल निज आतम कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१३॥

श्री देवेन्द्र इंद्र आतम के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१४॥

प्रवरनाथ भव भँवर उतारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रवर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१५॥

विश्वसेन बिन चैन कहाँ है, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१६॥

मेघनंदी भव बंधी तारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मेघनंदी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१७॥

पूज्य त्रिजेतृ हमें निहारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजेतृ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१८॥

युगादिदेव सिद्धों का युग दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं युगादिदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४१९॥

श्री सिद्धांत अंत भव कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२०॥

महेश जिनेश ही महेश सम्यक्, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२१॥

श्री परमार्थ तीर्थ के कर्त्ता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२२॥

पूज्य समुद्धर ज्ञान समुन्दर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं समुद्धर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२३॥

भूधर प्रभु को छूकर सुख हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२४॥

प्रभु उद्योत स्त्रोत हैं सुख के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उद्योत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२५॥

आर्जव प्रभु का तत्त्व सरल है, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आर्जव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२६॥

अभयनाथ से भय ना लगता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२७॥

अप्रकंप कंपित ना दुख से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रकंप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२८॥

पद्मनाथ के कदम अनोखे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४२९॥

पद्मनंदि शिव आनंदी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनंदि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३०॥

पूज्य प्रियंकर सौख्य शुभंकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३१॥

सुकृतनाथ साथ अपना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३२॥

भद्रनाथ शिव कद्र सिखा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३३॥

आत्मचन्द्र मुनिचन्द्र दिला दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिचन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३४॥

पंचमुष्टि केशलौंच करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पंचमुष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३५॥

त्रिमुष्टि त्रिमुक्ति दिला दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिमुष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३६॥

गांगिक प्रभु जिन गंगा भर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गांगिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३७॥

श्री गणनाथ सिद्ध गण दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३८॥

श्री सर्वांगदेव सर्वज्ञा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वांगदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४३९॥

श्री ब्रह्मेन्द्र इंद्र मुक्ति के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४०॥

इंद्रदत्त जिन इंद्र बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इंद्रदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४१॥

नायकनाथ मूलनायक हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नायक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४२॥

श्री सिद्धार्थ सिद्ध सब कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४३॥

सम्यग्गुण समकित गुण दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्गुण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४४॥

जिनेन्द्रदेव जय जिनेन्द्र कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्रदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४५॥

श्री सम्पन्न धन्य अब कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सम्पन्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४६॥

सर्वस्वामि हो निज के स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४७॥

हे मुनिनाथ! शिष्य स्वीकारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४८॥

विशिष्ट प्रभु विशिष्ट पद दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्ट-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४४९॥

अमरनाथ अब अमर करो तो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५०॥

ब्रह्मशान्ति अब शान्ति करो तो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मशान्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५१॥

पर्वनाथ हर पर्व हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पर्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५२॥

पूज्य अकामुकनाथ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अकामुक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५३॥

ध्याननाथ भवि ध्यान में आओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ध्यान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५४॥

कायाकल्प कल्पप्रभु कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कल्पप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५५॥

संवरनाथ मुक्ति का वर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संवर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५६॥

स्वास्थ्यनाथ प्रभु स्वस्थ बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५७॥

प्रभु आनंदनाथ अविकारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आनंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५८॥

रविप्रभ जिनवर रवि सम तम हर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रविप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४५९॥

पूज्य चंद्रप्रभ सुधा लुटाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६०॥

सुनंद जिन आनन्द हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुनंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६१॥

सुकर्णप्रभु भव तरण हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकर्णप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६२॥

सुकर्मप्रभु सब कर्म नशा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकर्मप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६३॥

अममदेव ममकार मिटाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अममदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६४॥

पार्श्वनाथ प्रभु कमठ तार दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६५॥

शाश्वत प्रभु शाश्वत आतम दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६६॥

वज्रस्वामि दो वज्र आतमा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६७॥

उदत्तनाथ प्रमत्त दशा हर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६८॥

सूर्यस्वामि भवि कमल खिलाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४६९॥

पुरुषोत्तम प्रभु शिव पौरुष दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषोत्तम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७०॥

शरणस्वामि निज शरणा ले लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शरणस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७१॥

आत्मबोध अवबोध नाथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अवबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७२॥

विक्रमप्रभु अब निज क्रम दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७३॥

निजानंद दो निर्घंटिक प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्घंटिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७४॥

हरीन्द्रप्रभु हर इंद्र पूजता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरीन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७५॥

पूज्य परित्रेरित प्रेरित कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परित्रेरित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७६॥

प्रभु निर्वाणसूरि शिव रथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणसूरि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७७॥

धर्महेतु अब मोक्ष सेतु दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्महेतु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७८॥

पूज्य चतुर्मुख हरो चतुर्गति, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुख-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४७९॥

सुकृतेन्द्र संकल्प रत्न दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८०॥

सुनो! श्रुताम्बुनाथ साथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रुताम्बु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८१॥

तर्क हरो विमलार्कनाथ जी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमलार्क-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८२॥

आत्म ज्योति दो हमें देवप्रभ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८३॥

पूर्ण ज्ञान धरणेन्द्रनाथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८४॥

सुतीर्थ प्रभु अब सिद्ध तीर्थ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुतीर्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८५॥

उदयानंद भंग कर दो भव, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदयानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८६॥

प्रभु सर्वार्थदेव शक्ति दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वार्थदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८७॥

धार्मिकनाथ धर्म तरणी दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धार्मिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८८॥

क्षेत्रस्वामि अब सिद्ध क्षेत्र दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४८९॥

स्वात्मभवन हरिचंद्र नाथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरिचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४९०॥

हमें अपश्चिम प्रभु दो निज रस, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अपश्चिम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९१॥

पुष्पदंत प्रभु पावन कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पदंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९२॥

अर्हदेव सम वीतराग हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९३॥

चरित्रनाथ छद्मस्थ मिटा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चरित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९४॥

सिद्धानंद शिखरजी दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९५॥

नंदगप्रभु लोकाग्र वसाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदगप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९६॥

पद्मकूप भव कूप सुखाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मकूप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९७॥

उदयनाभि निज केंद्र बुलाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदयनाभि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९८॥

राग द्वेष रुकमेंदु नशाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रुकमेंदु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥४९९॥

हमें कृपालुप्रभु जी तारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृपालु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५००॥

प्रोष्ठिल प्रभु दो अमृत वाणी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रोष्ठिल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०१॥

सिद्धेश्वर प्रभु सिद्ध धाम दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०२॥

जगत जहर अमृतेंदु नशाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमृतेंदु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०३॥

स्वामिनाथ हमको स्वीकारो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०४॥

भुवनलिंग जिन लिंग दिलाओ, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भुवनलिंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०५॥

पूज्य सर्वरथ आर्त हरो सब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरथ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०६॥

मेघनंद अब गरजो बरसो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मेघनंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०७॥

नंदिकेश दो सिद्धदेश अब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदिकेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०८॥

पुण्योदय हरिनाथ करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५०९॥

अधिष्ठप्रभु अवशिष्ठ बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१०॥

शांतिकप्रभु आत्मिकशांति दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शांतिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५११॥

नंदीस्वामी ब्रह्मानंदी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदिस्वामी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१२॥

कुंदपार्श्व आराध्य हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुंदपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१३॥

शांतिसुधा दो नाथ विरोचन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विरोचन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१४॥

प्रवरवीर भवतीर हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रवरवीर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१५॥

विजय विजयप्रभु हमें दिला दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विजय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१६॥

सत्पदजिन जिनसंपद दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सत्पद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१७॥

महामृगेन्द्रप्रभु महा बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महामृगेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१८॥

चिंतामणि हर चिंता हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५१९॥

शोक अशोकीनाथ मिटा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अशोकि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२०॥

मृगेन्द्रप्रभु हमको अपना लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मृगेन्द्रप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२१॥

उपवासिक प्रभु निज बल दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपवासिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२२॥

पद्मचंद्र आकुलता हर लो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२३॥

बोधकेंदु चैतन्य सदन दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बोधकेंदु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२४॥

चिंताहिमप्रभु चेतनमणि दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चिंताहिम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२५॥

उत्साहिकप्रभु ध्यान हर्ष दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उत्साहिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२६॥

महाक्षमा दो नाथ अपाशिव, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अपाशिव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२७॥

चेतन जल दो हमें देवजल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवजल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२८॥

नारिकनाथ हाथ तो धर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नारिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५२९॥

अनघनाथ अर्हंत दशा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनघ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३०॥

स्वयंसिद्ध नागेन्द्र बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नागेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३१॥

नीलोत्पल कुछ पल दो हमको, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नीलोत्पल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३२॥

अप्रकंपप्रभु भेदज्ञान दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रकंप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३३॥

क्रोधित नहीं पुरोहित तुम हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुरोहित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३४॥

भिन्दकप्रभु का कोई न निन्दक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भिन्दक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३५॥

पार्श्वनाथ प्रभु धर्म पंथ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३६॥

प्रभु निर्वाच आज हम पूजें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाच-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३७॥

पूज्य विरोषिक निज पोषक हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विरोषिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३८॥

वृषभनाथ प्रभु सर्वश्रेष्ठ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५३९॥

प्रभु प्रियमित्र चित्र आतम के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियमित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४०॥

शांतिनाथ मृत्युंजय कर दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शांति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४१॥

सुमतिनाथ प्रभु ज्ञान नयन दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुमति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४२॥

आदिनाथ प्रभु स्वात्म रमा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आदि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४३॥

प्रभु अतिव्यक्त रिक्त हो पर से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतिव्यक्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४४॥

कलासेन ओंकार रूप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कलासेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४५॥

नाथ कर्मजित करो जगतहित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४६॥

प्रबुद्धप्रभु पद शुद्ध बुद्ध दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४७॥

प्रव्रजित दो आत्मप्रव्रज्या, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रव्रजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४८॥

सुधर्म प्रभु स्वात्म लक्ष्मी दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुधर्मप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५४९॥

तमोदीप तम पाप मिटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तमोदीप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५०॥

प्रभु व्रजनाथ दिखाओ झलकें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५१॥

बुद्धनाथ प्रभु सिद्धनाथ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बुद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५२॥

प्रबंधदेव को अर्घ चढ़ा हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबंधदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५३॥

प्रभु अतीत हैं मीत सभी के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतीत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५४॥

प्रमुखनाथ का सुख हम चाहें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमुख-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५५॥

पल्योपम अनुपम ध्रुव अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पल्योपम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५६॥

अकोपप्रभु की खोज करें हम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अकोप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५७॥

निष्ठितप्रभु हैं स्वयं प्रतिष्ठित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निष्ठित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५८॥

प्रभु मृगनाभि बने स्वभावी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मृगनाभि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५५९॥

श्रेष्ठ साथ देवेन्द्रनाथ दे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६०॥

पदस्थप्रभु तो आत्मनिष्ठ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पदस्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६१॥

वांछितफल शिवनाथ हमें दे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शिव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६२॥

विश्वचन्द्र हैं शतानंद प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वचन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६३॥

कपिलनाथ वैदेही स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कपिल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६४॥

वृषभदेव स्वयमेव तीर्थ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६५॥

प्रियतेजो प्रभु आत्मतेज दें, सिद्ध जिना आहा।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियतेजो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६६॥

प्रशमनाथ प्रभु भव का शम दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रशम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६७॥

प्रभु विषमांग माँग सब हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विषमांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६८॥

मोक्षचित्र चारित्रनाथ दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चारित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५६९॥

प्रभादित्य राहित्य हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभादित्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७०॥

मुञ्जकेशप्रभु मुक्तदेश दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुञ्जकेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७१॥

वीतवास वैराग्यधाम दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीतवास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७२॥

पूज्य सुराधिप अधिप हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुराधिप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७३॥

दयानाथ निज दयादान दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दया-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७४॥

सहस्त्रभुज निज के भोजी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रभुज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७५॥

जिनसिंह नरसिंह बन भव जीते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनसिंह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७६॥

रैवत ऐरावत पर चढ़कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रैवत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७७॥

बाहुस्वामी हैं शिवधामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बाहुस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७८॥

श्रीमालिप्रभु निज दीवाली, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमालि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५७९॥

अयोगदेव हैं योग्य सभी के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अयोगदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८०॥

अयोगीप्रभु भवयोग नशाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अयोगि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८१॥

पूज्य कामरिपु काम बनाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कामरिपु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८२॥

प्रभु आरम्भनाथ मंगलमय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आरम्भ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८३॥

नेमिनाथ प्रभु गिरनारी दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नेमि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८४॥

गर्भज्ञाति की मूरत भाती, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गर्भज्ञाति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८५॥

एकार्जित प्रभु सर्वविजित हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं एकार्जित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८६॥

रक्तकेश का भेष मिले बस, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रक्तकेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८७॥

चक्रहस्त सम मस्त रहें हम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चक्रहस्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८८॥

श्रीकृतनाथ करो शिव रचना, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५८९॥

परमेश्वर सर्वेश्वर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९०॥

सुमूर्ति प्रभु अमूर्त हो बैठे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुमूर्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९१॥

मुक्तिकांत ही मुक्तिकंत हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिकांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९२॥

नाथ निकेशी हैं निजभेषी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निकेशी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९३॥

प्रशस्तप्रभु आश्वस्त स्वयं में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रशस्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९४॥

निराहार निज के आहारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निराहार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९५॥

अमूर्तप्रभु सुमूर्ति हो बैठे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९६॥

द्विजप्रभु ज्ञानी के ज्ञानी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं द्विज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९७॥

श्रेयोगत पंडित के पंडित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोगत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९८॥

अरुजनाथ नित स्वस्थ बनाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अरुज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥५९९॥

देवनाथ पर देव नहीं हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६००॥

पूज्य दयाधिक दया लुटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दयाधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०१॥

पुष्पनाथ पुष्पों सम खिलते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०२॥

श्री नरनाथ तजे नर तन को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०३॥

भूत तजे प्रतिभूतनाथजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिभूत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०४॥

इन्द्र भजें नागेन्द्रनाथ को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नागेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०५॥

तपें तपोधिक कभी न स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपोधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०६॥

रहे दशानन नहीं दशानन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दशानन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०७॥

आरण्यक भव अरण्य हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आरण्यक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०८॥

दशानीक से दशा ठीक हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दशानीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६०९॥

सात्विकनाथ हमारे आस्तिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सात्विक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१०॥

सुमेरुनाथ हैं आत्म सुमेरु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुमेरु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६११॥

जिनकृतप्रभु भवकृत सब छोड़े, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनकृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१२॥

कैटभनाथ हमारे कुन्दन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कैटभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१३॥

प्रशस्तदायक प्रभु कुछ दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रशस्तदायक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१४॥

मदन हरें निर्दमननाथजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्दमन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१५॥

कुलकर हो परमेष्ठी कुल दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुलकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१६॥

वर्धमान तो वर्धमान हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१७॥

इंदु इंदु तो अमृतेन्दु हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अमृतेन्दु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१८॥

संख्यानंद नंद शिवपुर के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संख्यानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६१९॥

पूज्य कल्पकृत विकल्प हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कल्पकृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२०॥

मिथ्याहर हरिनाथ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२१॥

बाहुस्वामी चेतनज्ञानी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बाहुस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२२॥

भार्गवप्रभु आर्जवधर्मी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भार्गव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२३॥

पूज्य भद्रस्वामी भगवंता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भद्रस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२४॥

भविप्राणी पविपाणी भजते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पविपाणि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२५॥

स्वयं विपोषित करते तोषित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विपोषित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२६॥

ब्रह्मचारी निज नारी चाहे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचारि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२७॥

त्यागे साक्ष असाक्षिक होकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं असाक्षिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२८॥

चारित्रेश उच्च हो सबसे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चारित्रेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६२९॥

पारिणामिक आत्मदर्श दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पारिणामिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३०॥

शाश्वतप्रभु शुचि द्रव्य करा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३१॥

निज सम निधि निधिनाथ हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निधि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३२॥

कौशिकप्रभु जग को धिक् कहते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कौशिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३३॥

प्रभु धर्मेश आत्मधर्मी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३४॥

साधितनाथ न बाधित होते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं साधित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३५॥

जिनस्वामी के भक्त बने जिन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३६॥

स्तमितेन्द्रप्रभु हितेन्द्र अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्तमितेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३७॥

अत्यानंद छंद मुक्ति के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अत्यानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३८॥

पुष्पोत्फुल्ल प्रफुल्ल बनाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पोत्फुल्ल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६३९॥

मंडितप्रभु जग के पंडित हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंडित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४०॥

प्रहतदेव कब प्रकट हमें हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रहतदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४१॥

मदनसिद्ध पर मदन नहीं हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मदनसिद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४२॥

हास्य रहित हँसदिन्द्र जिनेशा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हँसदिन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४३॥

चन्द्रपार्श्व दें दो-दो उत्सव, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४४॥

अब्जबोध भव कब्ज नशाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अब्जबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४५॥

जिनवल्लभ हैं मुक्तिवल्लभा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनवल्लभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४६॥

सुविभूतिक सर्वोच्च विभूति, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुविभूतिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४७॥

ककुदभास आवास मोक्ष दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ककुदभास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४८॥

सुवर्णप्रभु की सन्निधि चाहें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्ण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६४९॥

हरिवासक वस जायें मन में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरिवासक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५०॥

मुक्तिप्रिया प्रियमित्र रिझाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियमित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५१॥

धर्मदेव तो सर्व पर्व दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५२॥

प्रभु प्रियरत निज में रत होते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियरत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५३॥

नंदीनाथ शिव आनंदी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५४॥

आश्वानीक विजयरथ देते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आश्वानीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५५॥

पर्वनाथ दें मुक्तिपर्व को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पर्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५६॥

पार्श्वनाथ निर्वाण पर्व दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५७॥

चित्रहृदय तो चैत्य निलय हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चित्रहृदय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५८॥

नाथ रविन्दु दो सुख बिन्दु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रविन्दु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६५९॥

सौकुमार को मुक्ति निहारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सौकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६०॥

पृथ्वीवान भगवान हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीवान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६१॥

श्री कुलरत्न रत्न अपने दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुलरत्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६२॥

धर्मनाथ तो कर्म घातते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६३॥

सोमनाथ हों रोम-रोम में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सोम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६४॥

वरुणनाथ तो तरुण सदा हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वरुण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६५॥

अभिनंदन भवक्रंदन हरते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६६॥

सर्वनाथ तो सर्वनाथ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६७॥

सुदृष्टि प्रभु समदृष्टि हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुदृष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६८॥

शिष्टनाथ हैं इष्ट हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शिष्ट-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६६९॥

सुधन्यप्रभु अब धन्य बना दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुधन्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७०॥

सोमचन्द दे सुधा चाँदनी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सोमचन्द-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७१॥

क्षेत्राधीश शीश हैं अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्राधीश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७२॥

पूज्य सदंतिक अंतिम सुख दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सदंतिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७३॥

जयंतदेव ही महंतदेव हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जयंतदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७४॥

आप तमोरिपु रत्नत्रय दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तमोरिपु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७५॥

निर्मितप्रभु निर्माण करो शिव, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्मित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७६॥

वीतराग कृतपार्श्व हमारे,सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृतपार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७७॥

भक्तों को प्रभु बोधिलाभ दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बोधिलाभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७८॥

निजानंद बहुनंदनाथ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बहुनंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६७९॥

सुदृष्टि परमेष्ठी अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुदृष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८०॥

कुंकुमनाभ रहे कुंदन सम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कुंकुमनाभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८१॥

श्री वक्षेश देश निज का पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वक्षेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८२॥

श्री दमनेन्द्र इन्द्र आतम के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दमनेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८३॥

पूज्य मूर्तस्वामी बन बैठे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तस्वामी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८४॥

राग त्याग कर विराग स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विरागस्वामी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८५॥

प्रलंब प्रभु अविलंब मोक्ष पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रलंब-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८६॥

पृथ्वीपति शुद्धातम पति हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीपति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८७॥

श्री चारित्रनिधि ध्रुवधामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चारित्रनिधि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८८॥

अपराजित शिवलोक विराजित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अपराजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६८९॥

पूज्य सुबोधक आतम शोधक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुबोधक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९०॥

लोकशीश बुद्धीश प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धीश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९१॥

वैतालिक सुख त्रैकालिक पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वैतालिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९२॥

त्रिमुष्टि हो सम्यग्दृष्टि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिमुष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९३॥

आत्मशोध मुनिबोध किये फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९४॥

पूज्य तीर्थस्वामी जगनामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९५॥

धर्मधीश आशीष हमें दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मधीश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९६॥

मुक्तदेश धरणेश प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धरणेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९७॥

प्रभवदेव निज अनुभव पायें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९८॥

अनादिदेव अनंतगुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनादिदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥६९९॥

अनादिप्रभु अनंत दुख नाशे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनादि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७००॥

सर्वतीर्थ लोकाग्र विराजे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतीर्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०१॥

निरुपम देव हुए अनुपम फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निरुपम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०२॥

कौमारिक कर्मारिक नाशे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कौमारिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०३॥

विहारगृह आतमगृह पाये, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विहारगृह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०४॥

धरणीश्वर प्रभु धरें सर्वव्रत, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धरणीश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०५॥

विकासदेव स्वयमेव विकासी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विकासदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०६॥

जगन्नाथ हैं पूर्ण अलौकिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०७॥

प्रभासनाथ संन्यासी बनकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०८॥

स्वरस्वामी सिद्धीश्वर धामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वरस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७०९॥

जय भरतेश हमें आज्ञा दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भरतेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१०॥

दीर्घानन भव कानन त्यागी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घानन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७११॥

जय विख्यातकीर्ति निज मूर्ति, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विख्यातकीर्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१२॥

अवसानी अब ज्ञानी अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अवसानि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१३॥

प्रबोधप्रभु अवरोध हरें सब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१४॥

तपोनाथ प्रभु परम तपस्वी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१५॥

पावकप्रभु जग तारक प्यारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पावक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१६॥

त्रिपुरेश्वर आत्मज्ञस्वयं के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१७॥

सौगत सौ-सौ दुर्मत तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सौगत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१८॥

वासवप्रभु हर आस्रव तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वासव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७१९॥

ज्योतिर्मय भगवंत मनोहर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मनोहर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२०॥

कर्मरहित शुभकर्म ईश हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुभकर्मेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२१॥

हमें इष्टसेवित मिल जायें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इष्टसेवित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२२॥

त्रिभुवन दुख विमलेन्द्र त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विमलेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२३॥

धर्मवास आवास मोक्ष दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मवास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२४॥

प्रसादनाथ निज का प्रसाद दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रसाद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२५॥

पूज्य प्रभामृगांक ज्योतित हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभामृगांक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२६॥

उज्झितकलंक तत्त्व प्रकाशी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उज्झितकलंक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२७॥

स्फटिकप्रभ भव पार लगाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्फटिकप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२८॥

गजेन्द्र प्रभु निर्बंध हुये हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गजेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७२९॥

पूज्य ध्यानजय जगत अग्रणी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानजय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३०॥

वसंतध्वज वसंत आतम के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वसंतध्वज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३१॥

त्रिजयंत वसु कर्म अंतकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजयंत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३२॥

त्रिस्तंभ भव दंभ त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिस्तंभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३३॥

जिनपुंगव परब्रह्म हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३४॥

पूज्य अबालिश महाश्रमण बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अबालिश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३५॥

बने प्रवादी आतम स्वादी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रवादि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३६॥

भूमानंद चिदानंदी बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूमानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३७॥

त्रिनयन निजज्ञान नयन पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनयन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३८॥

भेदज्ञान विद्ाननाथ पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विद्ान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७३९॥

जय परमात्मप्रसंग जिनेशा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मप्रसंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४०॥

मोक्षनगर भूमीन्द्रनाथ पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूमीन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४१॥

गोस्वामी दर्पणसम धामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गोस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४२॥

जग कल्याणप्रकाशित जिनवर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकाशित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४३॥

मंडलप्रभु जगमंडल तज के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मंडल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४४॥

महापराक्रम किये महावसु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महावसु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४५॥

उदयवान प्रभु पुण्यवान हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उदयवान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४६॥

दिव्यज्योति निज भव्यज्योति पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यज्योति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४७॥

प्रबोधेश परमेश विशेषा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोधेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४८॥

जगविजयी अभयांक नाथ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभयांक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७४९॥

प्रमितनाथ तो रहे असीमित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५०॥

दिव्यस्फारक भव के तारक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यस्फारक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५१॥

व्रतस्वामी सुव्रत के स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रतस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५२॥

निधानप्रभु का विधान करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निधान-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५३॥

पूज्य त्रिकर्मा आतम धर्मा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकर्मा-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५४॥

स्वात्मभोग कृतिनाथ प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कृति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५५॥

निज सुख में उपविष्ट तिष्ठकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपविष्ट-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५६॥

देवादित्य नित्य आनंदी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवादित्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५७॥

आस्थानिक अष्टाह्निक भजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आस्थानिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५८॥

प्रचंद्रप्रभु सत्स्वरूप पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७५९॥

वेषिकनाथ मोक्ष के राजा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वेषिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६०॥

त्रिभानुप्रभु सिद्धालय को पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभानु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६१॥

ब्रह्मनाथ हो ब्रह्मविलासी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६२॥

प्रभु वज्रांग वज्र पौरुष कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६३॥

प्रभु अविरोधी आतमशोधी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अविरोधी-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६४॥

अपापप्रभु हर पाप मिटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अपाप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६५॥

लोकोत्तर सचमुच लोकोत्तर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६६॥

जलधिशेष प्रभु ज्ञानजलधि हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जलधिशेष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६७॥

स्वपर जोत विद्योतनाथ हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विद्योत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६८॥

नाथ सुमेरु स्वातम गृह पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुमेरु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७६९॥

धर्मप्रभावित हुये विभावित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विभावित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७०॥

प्रभु वत्सल दें हल पथ समतल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वत्सल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७१॥

आप जिनालय हो सिद्धालय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनालय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७२॥

तुषारप्रभु भवपार उतरकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तुषार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७३॥

त्रिभुवननाथ भुवनस्वामी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भुवनस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७४॥

सुकायप्रभु यह काय त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकाय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७५॥

बने स्वयं देवाधिदेव जो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवाधिदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७६॥

नाथ अकारिम करें कर्म क्षय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अकारिम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७७॥

बिंबित कर प्रतिबिंबत आतम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बिंबित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७८॥

शंकर प्रभु सुखशांति दान दे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७७९॥

अक्षवास समकक्ष दक्ष हों, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षवास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८०॥

नग्ननाथ संलग्न मुक्ति में, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नग्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८१॥

पूज्य नग्न-अधिपति चेतन के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नग्नाधिपति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८२॥

इष्ट नष्टपाखंड आप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नष्टपाखण्ड-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८३॥

स्वप्नवेद तो नहीं स्वप्न हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वप्नवेद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८४॥

कर्मकाष्ट को जला तपोधन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपोधन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८५॥

पुष्पकेतु दे मोक्षसेतु फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पकेतु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८६॥

तार्किक जयकर धार्मिक स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धार्मिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८७॥

चंद्रकेतु शिवधाम हेतु हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रकेतु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८८॥

हैं अनुरक्त ज्योति निज मोती, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनुरक्तज्योति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७८९॥

राग आग को वीतराग हर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीतराग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९०॥

प्रभु उद्योत स्रोत दें सुख के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उद्योत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९१॥

तमोपेक्ष निजप्रदेश चमका, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तमोपेक्ष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९२॥

रूढ़िवाद मधुनाद हटा के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मधुनाद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९३॥

चेतनतरु मरुदेव खिलाके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मरुदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९४॥

शुद्धातम दमनाथ प्राप्त कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९५॥

पूज्य वृषभस्वामी शिवधामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९६॥

तजे मिला तन बने शिलातन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शिलातन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९७॥

विश्वपूज्य प्रभु विश्वनाभ तो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनाभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९८॥

महेन्द्रप्रभु पुरुषार्थ पूर्णकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥७९९॥

नंदनाथ आनंद दान दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८००॥

पूज्य तमोहर लगें मनोहर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तमोहर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०१॥

ब्रह्मजप्रभु ब्रह्माण्ड हिला के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८०२॥

तारणतरण यशोधर अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं यशोधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०३॥

सुकृतनाथ पुण्य दें हमको, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुकृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०४॥

अभयघोष जयघोष करें फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अभयघोष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०५॥

प्रभु निर्वाण बाण सब हरके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०६॥

सुव्रत दें व्रतवास हमें भी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रतवास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०७॥

तत्त्वराज अतिराज हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अतिराज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०८॥

विश्वविजेता अश्वदेव प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अश्वदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८०९॥

अर्जुनप्रभु पुण्यार्जन करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अर्जुन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१०॥

तपश्चन्द्र तप यज्ञ ठानकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपश्चन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८११॥

शारीरिकप्रभु शरीर तज के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शारीरिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१२॥

महेशप्रभु ही महाईश हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१३॥

जय सुग्रीव जीव के तारक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुग्रीव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१४॥

दृढ़प्रहार पा मुक्तिहार फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़प्रहार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१५॥

अम्बरीक शिवसीख मानकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अम्बरीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१६॥

दयातीत प्रभु दयारीत दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दयातीत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१७॥

तुंबरप्रभु तुम वर के दाता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तुंबर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१८॥

सर्वशील निज आत्मझील पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशील-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८१९॥

यथाख्यात प्रतिजात बने फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिजात-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२०॥

पूज्य जितेन्द्रिय हुये अतीन्द्रिय, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रिय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२१॥

तपादित्य कृतकृत्य हुये फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं तपादित्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२२॥

रत्नाकर प्रभु आत्म रत्न पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नाकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२३॥

सिद्धदेश देवेश प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२४॥

लांछनप्रभु जगलांछन तज के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लांछन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२५॥

सुप्रदेश भवभेष त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रदेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२६॥

पद्मचंद्र सम मिलें खिलें अब, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२७॥

जय रत्नांग लाँघ जग सीमा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२८॥

मुक्त अयोगीकेश हुये तो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अयोगीकेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८२९॥

सर्व अर्थ सर्वार्थनाथ दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३०॥

चमत्कार ऋषिनाथ दिखाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ऋषि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३१॥

मिथ्यामत हरिभद्र त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हरिभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३२॥

साध्य गुणाधिप प्राप्त किये तो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गुणाधिप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३३॥

पारत्रिक परमानंदी बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पारत्रिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३४॥

ब्रह्मनाथ ब्रह्मास्त्र प्राप्त कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३५॥

शतेन्द्र पूजित मुनीन्द्रप्रभुजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३६॥

दीपकनाथ 'अप्पदीवो भव', सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दीपक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३७॥

त्याग राजश्री राजर्षीप्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं राजर्षि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३८॥

विशाखदेव सेव निज की कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विशाखदेव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८३९॥

निंदा त्यागी हुये अनिन्दित है, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्दित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४०॥

रविस्वामी आतम रवि पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रविस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४१॥

सोमदत्त निज होम हवन कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सोमदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४२॥

जयस्वामी जय कर्मों पर कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जयस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४३॥

मोह साथ तज मोक्षनाथ प्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मोक्ष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४४॥

अग्रभास लोकाग्र विराजे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रभास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४५॥

धनुःसंग निःसंग हुये फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धनुःसंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४६॥

रोमांचकप्रभु रोमांचित हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रोमांचक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४७॥

मुक्तिनाथ दें युक्ति भक्त को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४८॥

कर्म युद्ध कर प्रसिद्धस्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रसिद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८४९॥

जितेशप्रभु जग के हितेश बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जितेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५०॥

अंग-अंग सर्वाङ्ग त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाङ्ग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५१॥

जो है सो है पा पद्माकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पद्माकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५२॥

निज ऐश्वर्य प्रभाकर पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभाकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५३॥

कर्मशत्रु बलनाथ जीतकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५४॥

बने अयोगी योगीश्वरप्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५५॥

परमौदारिक सूक्ष्मांग हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५६॥

निश्चल हो व्रतचलातीतप्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं व्रतचलातीत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५७॥

जगबन्धक जब तजे कलम्बक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कलम्बक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५८॥

विभाव को परित्याग त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परित्याग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८५९॥

तजे निषेधिक बने निषेधिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं निषेधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६०॥

पापापहारि ब्रह्मविहारी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पापापहारि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६१॥

सुस्वामी बन अन्तर्यामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६२॥

कर्मबन्ध तज मुक्तिचंद्रप्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिचंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६३॥

मोहअंध अप्रकाशित हर के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रकाशित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६४॥

आत्मविजय जयचंद किए सो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जयचंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६५॥

कर्म मैल प्रभु मलाधारि तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मलाधारि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६६॥

ममत त्याग के पूज्य सुसंयत, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुसंयत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६७॥

सिद्धालय पा मलयसिंधुजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मलयसिंधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६८॥

पक्ष विपक्ष अक्षधर तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८६९॥

गए देवघर पूज्य देवधर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७०॥

देवगणों के पूज्य देवगण, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवगण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७१॥

चेतनतीर्थ आगमिक बनकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आगमिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७२॥

विनीतप्रभु नवनीत रूप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विनीत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७३॥

रतानंद आतम में रत हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रतानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७४॥

पूज्य प्रभावक आतम भावक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभावक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७५॥

विनयधार विनतेन्द्रनाथजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विनतेन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७६॥

स्वच्छ स्वरूपी हुए सुभावक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुभावक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७७॥

दिनकरप्रभु निज आतम चुनकर,सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दिनकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७८॥

पूज्य अगस्त्येजो सुख दे दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अगस्त्येजो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८७९॥

चेतनधन धनदत्त हमें दो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धनदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८०॥

पौरवप्रभु निज गौरव पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पौरव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८१॥

आत्मतत्त्व जिनदत्त हमें दे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जिनदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८२॥

पार्श्वनाथ जगपाश त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८३॥

जगतसिंधु मुनिसिंधु पारकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसिंधु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८४॥

नास्तिकभाव त्यागकर आस्तिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आस्तिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८५॥

भवानीक निज उद्घाटित कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भवानीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८६॥

नृपपूजित नृपनाथ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नृप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८७॥

नारायण प्रभु पारायण हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नारायण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८८॥

भोग शोक प्रशमौक त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमौक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८८९॥

भूपतिनाथ मुक्तिपति होकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूपति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९०॥

सुदृष्टि निजदृष्टि प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुदृष्टि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९१॥

भवभीरु भवतीर प्राप्तकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भवभीरु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९२॥

नंदन निज अभिनंदन करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९३॥

बने दिगम्बर भार्गवप्रभु फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भार्गव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९४॥

सुवसुनाथ अष्टगुण पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुवसु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९५॥

परवश नहीं परावश अपने, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं परावश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९६॥

वनवासीक सीख जग से पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वनवासीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९७॥

कुछ न शेष भरतेशनाथ को, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भरतेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९८॥

प्रशांत हो उपशांतनाथ सम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं उपशांत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥८९९॥

फाल्गुणप्रभु आतमगुण पाके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९००॥

अद्वितीय पूर्वास वास पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वास-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०१॥

जय सौधर्मनाथ आतम पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०२॥

गौरिकनाथ साथ सब को दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गौरिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०३॥

त्रिविक्रम कर मोक्ष पराक्रम, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिविक्रम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०४॥

आज्ञा दें नरसिंहनाथ जी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नरसिंह-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०५॥

मोक्षमार्ग मृगवसु जिनवर दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मृगवसु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०६॥

सोमेश्वर सर्वात्म शुद्धकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सोमेश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०७॥

सुधा सुधासुरनाथ बाँटकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुधासुर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०८॥

जिनवर अपापमल्ल सल्ल हर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अपापमल्ल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९०९॥

प्रभु विवाध जग विवाद हरके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विवाध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१०॥

कर्मसंधि तज संधिक स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९११॥

प्रभु मान्धात्र मुक्ति को पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मान्धात्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१२॥

अश्वतेजो निज आत्मतेज पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अश्वतेजो-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१३॥

विद्याधर निज विद्या धरकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विद्याधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१४॥

पूज्य सुलोचन पा निज लोचन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुलोचन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१५॥

वचन रतन तज हुये मौननिधि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मौननिधि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१६॥

पुद्गल बंधन पुण्डरीक तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१७॥

चित्र चित्रगण प्रभु का पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चित्रगण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१८॥

आतममणि मणिरिंद्रनाथ पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मणिरिंद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९१९॥

सर्वकाल प्रभु सर्वकाल तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकाल-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२०॥

भूरिश्रवण प्रभु पूर्णभ्रमण तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भूरिश्रवण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२१॥

पुण्यफला पुण्यांग बने सो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२२॥

जिनगंगा गांगेयक देकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गांगेयक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२३॥

मोहीमल्ल नल्लवासव तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नल्लवासव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२४॥

कर्मभीम जय भीमनाथ कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भीम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२५॥

हिंसाधिक तज परमदयाधिक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दयाधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२६॥

मुक्तिवधू पा सुभद्रप्रभुजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२७॥

जगकल्याणी स्वामी प्रभु बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२८॥

हनिकनाथ निज धनिक बने फिर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं हनिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९२९॥

धर्मघोष कर नंदीघोषप्रभु, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंदीघोष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३०॥

रूपबीज प्रभु मोक्षबीज दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रूपबीज-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३१॥

वज्रातम प्रभु वज्रनाथ पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३२॥

प्रभु संतोष कोष निज का पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं संतोष-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३३॥

प्रभु सुधर्म भर्म के हर्त्ता, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुधर्म-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३४॥

पूज्य फणीश्वर उत्सवमय हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं फणीश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३५॥

वीरचन्द्र भवतीर चन्द्र हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीरचन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३६॥

मेधानिक संवैधानिक बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मेधानिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३७॥

स्वच्छनाथ प्रभु स्वच्छ स्वभावी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वच्छ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३८॥

कोप कोपक्षयप्रभुजी करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कोपक्षय-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९३९॥

अकामप्रभु जग नाम त्याग के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अकाम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४०॥

धर्मधामप्रभु विश्वधाम तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मधाम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४१॥

बने जैन फिर सूक्तिसेन बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सूक्तिसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४२॥

क्षेमंकर जब हुये निरंबर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४३॥

दया अहिंसा दयानाथ दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं दया-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४४॥

आत्मकीर्ति दें कीर्तिपस्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं कीर्तिप-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४५॥

श्रेष्ठ शुभंकर अनन्तज्ञ हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शुभंकर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४६॥

दोष अदोषिकनाथ त्यागकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अदोषिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४७॥

वृषभदेव स्वयमेव तत्त्व पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४८॥

विनयानंद नंद निज का पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विनयानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९४९॥

मुनिभारत मुनि भारत में हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिभारत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५०॥

इंद्रकप्रभु निजचेतक बनकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इंद्रक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५१॥

चंद्रकेतु जग को आश्रय दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चंद्रकेतु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५२॥

ध्वजादित्य साहित्य शास्त्र दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ध्वजादित्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५३॥

आत्मशोध वसुबोधनाथ कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वसुबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५४॥

मुक्ति मुक्तिगत अपनी पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिगत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५५॥

धर्मबोध अवरोध मिटाते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मबोध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५६॥

मुक्तदेव देवांग बने सो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवांग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५७॥

मारीचिक हीनाधिक तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मारीचिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५८॥

सुखी सुजीवन जीवन करके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुजीवन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९५९॥

आतम यशमय हुये यशोधर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं यशोधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६०॥

गौतमप्रभु अंतर तम हरके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गौतम-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६१॥

जगत प्रसिद्धि मुनिशुद्धि तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मुनिशुद्धि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६२॥

पूज्य प्रबोधिक चेतन धारक, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोधिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६३॥

सदानीक प्रभु आत्म दुर्ग पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सदानीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६४॥

प्रभु चारित्रनाथ अघ त्यागी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चारित्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६५॥

शतानंद प्रभु चिदानंद पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शतानंद-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६६॥

प्रभु वेदार्थ अर्थ निज का पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वेदार्थ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६७॥

सुधानीक प्रभु सुधा धार दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुधानीक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९६८॥

ज्योतिर्मुख आतम सुख पाके, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मुख-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९६९॥

सुरार्घप्रभु सुर अर्चित होकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुरार्घप्रभु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७०॥

विद्यमान सीमंधर भवतर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सीमंधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७१॥

युगमन्धर आतम युग पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं युगमन्धर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७२॥

बाहु बाहुबल से पौरुष कर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बाहु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७३॥

पूज्य सुबाहु कर्म राहु तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुबाहु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७४॥

प्रभु सुजात विख्यात आत्म पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुजात-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७५॥

पूज्य स्वयंप्रभ हुये सुरक्षित, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७६॥

ऋषभानन भवकानन तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभानन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७७॥

अनन्तवीर्य वीर्य निज का पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७८॥

सौरीप्रभ निज गौरी पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सौरीप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९७९॥

विशालकीर्ति चिन्मय मूर्ति पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं विशालकीर्ति-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८०॥

पूज्य वज्रधर वज्र पुरुष बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रधर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८१॥

चन्द्रानन कर्मों का वन तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रानन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८२॥

चन्द्रबाहु चैतन्य चन्द्र पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रबाहु-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८३॥

भुजंगप्रभु जय आत्म जंगकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भुजंग-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८४॥

ईश्वर सैर मोक्ष की करते, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं ईश्वर-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८५॥

पूज्य नेमिप्रभ धर्मधुरी बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नेमिप्रभ-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८६॥

वीरसेन दिन-रैन आत्म भज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीरसेन-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८७॥

महाभद्र कर महा अर्चना, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं महाभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८८॥

जिन यश वाँच देवयश पहुँचे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देवयश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९८९॥

अजितवीर्य मृत्युंजय बनकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अजितवीर्य-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९०॥

तुम्हें देखकर शचि विस्मृत हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शचिविस्मृत-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९१॥

शक्र नाचता जिन दर्शन से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शक्रार्चित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९२॥

इंद्र पूजता आज्ञा में रह, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इंद्रपूजित-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९३॥

जगत् पूज्य शिवनाथ हमारे, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शिव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९४॥

स्वयं स्वयंभू बुद्ध रूप हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९५॥

वरदहस्त वरदत्तनाथ दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वरदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९६॥

सागरदत्त तत्त्व आतम दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सागरदत्त-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९७॥

इन्द्र मुनीन्द्र भक्त तार दें, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९८॥

पूज्य शंबु भव अंबु तैरकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं शंबुकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥९९९॥

श्री प्रद्युम्न मग्न निज में हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं प्रद्युम्न-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०००॥

शुद्ध रूप अनिरुद्धनाथ हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं अनिरुद्ध-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००१॥

लवणांकुश आतमसुख पाकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं लवणांकुश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००२॥

त्रयपाण्डव जगताण्डव तजकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं त्रयपाण्डव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००३॥

वीतराग बलभद्र रामजी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं रामबलभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००४॥

वज्रअंग बजरंगबलि मुनि, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वज्रांगबलि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००५॥

राममित्र सुग्रीव जीव पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुग्रीव-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००६॥

नीलादिक निज शीलादिक पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नीलादिक-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००७॥

नंगानंगकुमार भार तज, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं नंगानंगकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००८॥

आदिकुमार भवपार उतरकर, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं आदिकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१००९॥

द्वैचक्रि दश कामकुमारा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं द्वचक्रिदशकामकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१०॥

इंद्रजीत अरु कुंभकर्ण हो, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं इंद्रजीतकुंभकर्ण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०११॥

सुवर्णभद्र मुनि पावागिरि से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१२॥

मणिभद्र मुनि आतममणि पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं मणिभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१३॥

वीरभद्र मुनि महावीर बन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वीरभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१४॥

गुणभद्र मुनि अनंतगुणी हैं, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गुणभद्र-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१५॥

गुरुदत्तादिक मोक्षतत्त्व पा, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं गुरुदत्तादि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१६॥

महाबाल मुनि बाल नाग मिल, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बाल-महाबाल-नागकुमार-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१७॥

पूज्य देशभूषणकुलभूषण, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं देशभूषणकुलभूषण-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१८॥

वरदत्तादिक पंच ऋषिजन, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं वरदत्तादिकपंचऋषि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०१९॥

जम्बूस्वामी मुक्तिधामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२०॥

बाहुबली पोदनपुर तज के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं बाहुबलि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२१॥

भरतचक्रि कैलाशगिरी से, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं भरतेश-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२२॥

कुण्डलपुर से श्रीधर स्वामी, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधरस्वामि-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२३॥

तीनलोक के तीनकाल के, सिद्ध जिना आहा। ओम्...
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व-सिद्धचक्रेभ्यो अर्घ्यं...॥१०२४॥

पूर्णार्घ्य (कवित्त)

सिद्धचक्र का विधान सा विधान गीत कौन,
ये विधान तो विधान का विधान भक्ति हो।
रोग शोक कष्ट दर्द भूत प्रेत की बलाएँ,
रोकने यही महान सिद्धमंत्र युक्ति हो॥
और क्या कहें सदैव कर्म के विनाश हेतु,
सिद्धचक्र ब्रह्म अस्त्र-शस्त्र सैन्य शक्ति हो।
सुव्रती रचा विधान चाहते विशेष पुण्य,
जिससे आधि व्याधि नाश ऋद्धि सिद्धि मुक्ति हो॥

(दोहा)

एक हजार चौबीस गुण, सिद्धचक्र के पूज।
हम चाहें शिवलोक तक, गूँजे नमोऽस्तु गूँज॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं...।

(जाप्य मंत्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला (दोहा)

सिद्ध सहस्त्रगुण पूजते, जयमाला के नाम।
सिद्ध आत्म पदवी मिले, सो नमोस्तु धर ध्यान॥

(लय-माता तू दया करके....)

सिद्धों की भक्ति में, हर श्वांस समर्पित है।
क्या और करें अर्पण, चरणों में नमोस्तु है॥
तुम सिद्धचक्र स्वामी, चैतन्य चमत्कारी।
लोकाग्र शिखरवासी, निष्कर्मा अविकारी॥
साम्राज्य मोक्ष का है, सम्राट स्वयं के हो।

सो सिद्ध सभा में अब, प्रभु तनिक जगह दे दो ॥१॥
तुम ज्ञान सुधासागर, निज रत्नों के स्वामी।
हम रहे मरुस्थल सम, कुछ बरसो तो ज्ञानी॥
हो मोक्ष अंकुरण अब, हम सिद्ध बीज पायें।
हर रागद्वेष हर कर, हम चेतन गृह पायें ॥२॥
हम अपराधी कैदी, तुम न्यायाधीश रहे।
भव सजा मुक्त हो बस, ऐसा आशीष रहे॥
सिद्धों सा न्याय यहाँ, मिलता ना सपने में।
सो सिद्धों जैसा सुख, हम खोजें अपने में ॥३॥
कल्याण स्वयं अपना, हम कर न सकें स्वामी।
पर आप रहे सक्षम, कुछ कृपा करो दानी॥
हम भव जल पार नहीं, हम तीर्थ ना आतम के।
सो भक्ति पूजन को, श्रद्धा से आ धमके ॥४॥
विश्वास यही हमको, यह स्वप्न हमारा है।
जो भूत आपका था, वह आज हमारा है॥
जो आज आपका है, वह कल अपना होगा।
'सुव्रत' को थामो तो, सच हर सपना होगा ॥५॥

(सोरठा)

सीमा में हम बाँध, करते कुछ गुणगान तो।
सीमा को हम लाँघ, कर नमोस्तु सम्मान हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशत्यधिकसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥

सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

महासमुच्चय पूर्णार्घ्य

(दोहा)

शब्द छन्द ना कह सकें, सिद्ध गुणों के कोश।
सिद्धचक्र की भक्ति से, मिटें विश्व के दोष॥

(ज्ञानोदय)

सिद्धचक्र की पूजा करके, गूँगे स्वर भरने लगते।
लँगड़े पर्वत पर चढ़ जाते, अंधे जग लखने लगते॥
अभुज सिंधु से पार उतरते, आधि व्याधि संकट टलते।
मंत्र जाप कर होम हवन कर, कर्म कटें आतम खिलते॥
सिद्धचक्र करने वालों को, बस यों आशीर्वाद मिले।
भोज्य पाँच सौ अस्सी विध के, षट् रस तज निज स्वाद मिले॥
मिलें न जब तक सिद्धचक्र में, सिद्धचक्र तब तक पूजें।
जिनशासन 'विद्या' गुरुवर को, नमोऽस्तु 'सुव्रत' के गूँजें॥

(सोरठा)

दो हजार चालीस, भक्त अर्घ्य ले पूजते।
सिद्धों को नत शीश, नमोऽस्तु के स्वर गूँजते॥
गुण कहना सम्यक्त्व, मोक्षतत्त्व दे दान जो।
अतः भक्ति कर भक्त, 'सुव्रत' पर प्रभु ध्यान दो॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्र गुणी सिद्धचक्रेभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये महासमुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

भक्त आत्म कर्तव्य कर, मुक्ति लक्ष्य को साध्य।
ऋद्धि सिद्धि निज शांति को, सिद्धचक्र आराध्य॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन में सिद्धचक्र की, महिमा जग विख्यात रही।
जिसमें मैना रानी वाली, कथा कहानी ज्ञात रही॥
रोग शोक दुख कर्म हरण को, सिद्धभक्ति पथ साँचा है।
आओ! मैना का यश वाँचें, जो गुरुओं ने वाँचा है ॥१॥

निपुणसुंदरी पहुपाल की, थीं दो प्यारी कन्यायें।
सुरसुंदरी मैनासुंदरी, धर्मपंथ सब अपनायें॥
पितु ने कन्याओं से पूछा, बोलो तुम किसका खाती?
सुरसंदरी कहे आपके, महाभाग्य का मैं खाती ॥२॥

मैना मैं ना खाऊँ आपका, अपने भाग्य का मैं खाती।
क्रोधित लज्जित मैना से हो, कलुषितु हुई पितु की छाती॥
बात गई पर एक बाग में, राजा को श्रीपाल मिले।
कुष्ठरोग से पीड़ित थे पर, धार्मिक थे खुशहाल मिले ॥३॥

उसे देख राजा ने सोचा, इससे ब्याह रचाना है।
भाग्य भरोसे मैना को भी, कुछ तो सबक सिखाना है॥
रानी मंत्री समझाये पर, राजा ने जिद ना छोड़ी।
मैना कोढ़ी की लख जोड़ी, आँखों ने धारा छोड़ी ॥४॥

यदि दुर्भाग्य हुआ तो सुंदर, पति कोढ़ी हो जायेगा।
यदि सौभाग्य हुआ तो कोढ़ी, कामदेव हो जायेगा॥

मुनिवर ने उपचार बताया, सिद्धचक्र का करो यतन।
त्रय शाखा की अष्टाह्निक में, आठ वर्ष तक करो भजन ॥५॥
यथाशक्ति से मैना रानी, सिद्धचक्र का भजन करे।
सिद्धयंत्र शांतिधारा का, गंधोदक सब पर छिड़के॥
हाँ! पहले ही सिद्धचक्र में, सबका कुष्ठ समाप्त हुआ।
पति ने तनिक कनिष्ठा में रख, सबका वापिस गमन हुआ ॥६॥
निपुणसुंदरी ने ज्यों देखा, मैना-पति सुंदर प्यारा।
तो वह बोली शायद मैना, छोड़ चुकी पति दुखियारा॥
और किसी के साथ इसी ने, अपना व्याह रचा डाला।
लोक-लाज को पिता-वचन को, इसने दूषित कर डाला ॥७॥
तब श्रीपाल कुष्ट दिखलाते, तो माँ पश्चाताप करे।
मैना रानी पहुँच राज्य में, सिद्धचक्र का पाठ करे॥
तब श्रीपाल देह में लगता, कामदेव हों आ धमके।
सिद्धचक्र में नाम तभी से, मैना रानी का चमके ॥८॥
सिद्धचक्र के न्हवन हवन का, प्रभाव भय दुख रोग हरे।
और कहें क्या अधिक भक्ति से, मुनिपथ दे भव कर्म हरे॥
कुशल राज्य संचालित करके, मुनि दीक्षा श्रीपाल धरे।
यथाजात अरिहंत सिद्ध बन, मोक्ष सुंदरी प्राप्त करे ॥९॥
अनंतकेवली भी मिलकर के, सिद्धों के गुण कह न सकें।
'सुव्रत' फिर भी सिद्ध भक्ति बिन, इस जीवन में रह न सकें ॥
वैसे तो निष्काम भक्ति है, फिर भी यदि देना चाहें।
तो सिद्धों सम मुक्ति मिले तो, हम सिद्धों के हो जायें ॥१०॥

(सोरठा)

है मुश्किल यह बात, ताराओं को गिन सकें।
अपनी क्या औकात, सिद्धचक्र के गुण कहें॥
फिर भी कर गुणगान, हमने की है अर्चना।
बनें सिद्ध भगवान, 'सुव्रत' की ये प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्त्रगुणी सिद्धचक्रेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो कर्मचक्र विनाश करके, चाहते शुद्धातमा।
वो सिद्धचक्र विधान करके, पूजते सिद्धातमा॥
सो काम क्या भय रोग दुख का, सिद्ध सब कुछ हो उन्हें।
'सुव्रत' तभी विद्यार्थ हेतु, माँगते तुमसे तुम्हें॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

पावागिरि के पार्श्व का, कर पर्युषण पूर्ण।
पन्द्रह दिन में रच गया, सिद्धचक्र संपूर्ण॥
शब्द अर्थ की भूल तज, धैर्य धरें तज रोष।
बार-बार यदि कुछ कहा, तो पुनरुक्त न दोष॥
दो हजार सोलह सितमे्, गुरु पंद्रह तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचें, गुरु प्रभु को नत शीश॥

धर्म पगड़ी
सा नहीं चमड़ी सा
होना चाहिये

स्तुति

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो, दिन आठ ठाठ से प्राणी।
हो विश्वशांति कल्याणी॥
ज्यों फल पायी मैना रानी, श्रीपाल बने मुक्ती धामी।
त्यों फल पायें हम काटें कर्म कहानी, हो विश्व...॥१॥
जिनशासन पर विश्वास करें, मिथ्यात्व त्याग संन्यास धरें।
आदर्श बनायें हम गुरु वा गुरुवाणी, हो विश्व...॥२॥
अब ज्ञाता दृष्टा बनने को, निज से निज में निज मिलने को।
निष्काम बनें शिव शुद्धातम के ध्यानी, हो विश्व...॥३॥
हम विषय कषाय विकार हरें, अज्ञान पाप अँधयार हरें।
सो रोग शोक आतंक दूर हों स्वामी, हो विश्व...॥४॥
भय विघ्न अमंगल टल जायें, मंगलमय मैत्री सब पायें।
मुनि 'सुव्रत' पायें गुरु की सिद्ध निशानी, हो विश्व...॥५॥

❑ ❑ ❑

जिनवाणी स्तुति

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों कीं
शास्त्र पठन पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों कीं॥
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञानदीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ॥

(कायोत्सर्ग...)

❑ ❑ ❑

आरती-१

ओम् जय सिद्धचक्र देवा, स्वामी सिद्धचक्र देवा।
आरति करके तुम्हारी, भक्त करें सेवा ॥ ओम् जय...॥
अष्टकर्म के नाशी, अष्टगुणी देवा। स्वामी अष्ट...
सिद्धशिला के वासी, चखो मुक्ति मेवा॥ ओम् जय...॥
बिन मूरत चिन्मूरत, चिदानंद धामी। स्वामी चिदानंद...
जो भी तुमको भजते, सिद्ध हों आगामी॥ ओम् जय ...॥
भक्त ना ज्यादा माँगें, आप ना कम देते। स्वामी आप...
रोग शोक बाधायें, यूँ ही हर लेते ॥ ओम् जय सिद्धचक्र ...॥
राज न रमणी चाहें, मोक्ष न पद चाहें। स्वामी मोक्ष...
चरण मिलें बस तेरे, सिद्धभक्ति चाहें॥ ओम् जय...॥
सिद्धचक्र मैना सम, हम क्या कर पायें। स्वामी हम...
'सुव्रत' हैं ना मैना, फिर भी गुण गायें ॥ ओम् जय...॥

❑ ❑ ❑

योगी अपने
प्रतियोगी नहीं हैं
सहयोगी हैं

परिचित भी
अपरिचित लगे
स्वस्थ ध्यान में

आरती-२

(तर्ज-आज मुनि सपने में आये....)

सिद्धचक्र की आरती गायें, हँसी खुशी त्यौहार मनायें-२
झूमें नाचें-महिमा बाँचें, अ र र र र र र.....
सिद्धों का है देश सुहाना, हमको भी सिद्धालय जाना-२
दो निज वस्तु-करें नमोऽस्तु, अ र र र र र.....
सिद्धचक्र हैं कर्मविजेता, जिनवाणी माँ के हैं बेटा-२
आत्मा स्वभावं-परभाव भिन्नं, अ र र र र र.....
चित चैतन्य चिदानन्दी हैं, चिद्रूपी ब्रह्मानन्दी हैं-२
निज के रसिया-आतम वसिया, अ र र र र र.....
काल अनन्ता मोक्ष वसन्ता, मोक्ष सुन्दरी के भगवन्ता-२
मैना पूजे-आतम खोजे, अ र र र र र.....
दुख संकट रोगों के हर्ता, ऋद्धि सिद्धि सुख शांति कर्त्ता-२
हम भी ध्यायें-तुम्हें मनायें, अ र र र र र.....
मंगल उत्तम शरण विधाता, 'सुव्रत' तो बस टेकें माथा-२
चरणा दे दो, शरणा ले लो, अ र र र र र.....

❑ ❑ ❑

चरण नहीं
आचरण छुओ तो
शरण मिले

आरती-३

जय हो सिद्धि के देवा, संसारी करते सेवा,
हम सब उतारें तेरी आरती, हो स्वामी, हम सब.....॥
ओम् जय सिद्धचक्र जिनदेवा, लोकशिखर वासी-२
मोक्ष मयूरी के तुम रसिया, हम हैं प्रत्याशी।
हो स्वामी! कर्मों को तुमने छोड़ा, दुनियाँ से मुख को मोड़ा,
प्रकटा ली शुद्धातम की भारती, हो स्वामी, हम सब.....॥
सिद्धचक्र को करके मैना, जगत प्रसिद्ध हुई-२
श्रीपाल की दुखिया आतम, देखो सिद्ध हुई।
हो स्वामी! अपनी भी झोली भर दो, अपने सम हमको कर लो,
करुणा तुम्हारी भव से तारती, हो स्वामी, हम सब.....॥
सिद्धचक्र को जो पूजें वो, होते मालामाल-२
कर्म नशें तो मोक्षसुंदरी, खुद लाये वरमाल।
हो स्वामी! बनते वो ब्रह्मविहारी, सिद्धालय के अधिकारी,
मुक्ति भी निजगुण जिन पर वारती, हो स्वामी, हम सब.....॥
अतिशयकारी, विघ्नविनाशक, सर्वसिद्धिदायी-२
हमने फर्ज निभाया तेरी, अब बारी आयी।
हो स्वामी! अब ना तुम देर लगाना, 'सुव्रत' को मोक्ष घुमाना,
बन जाना विद्यारथ के सारथी, हो स्वामी, हम सब.....॥

❑ ❑ ❑

उधम नहीं
उद्यम करो बनो
दमी आदमी